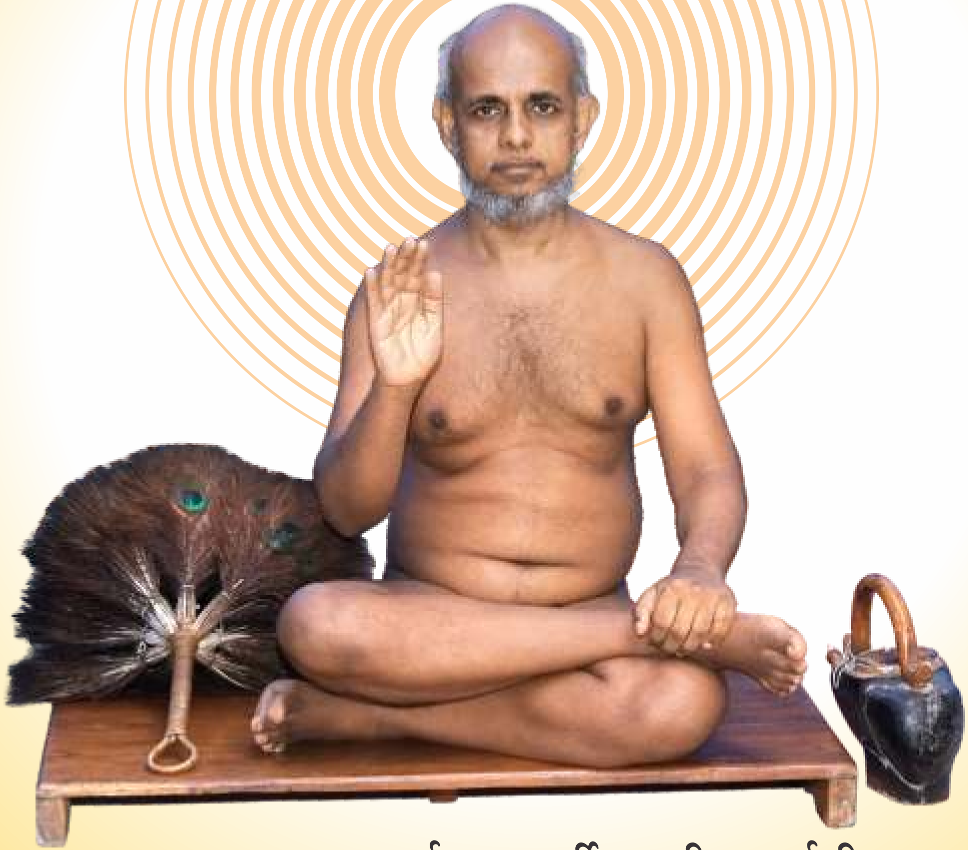

परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि-परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19-03-1971 * मुनिदीक्षा-11-05-1989 * आचार्यपद- 20-06-2004

पट्टाधीशपद- 24-12-2010 (20-06-2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः-

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी-जुलाई 2004) (अक्षयज्योति-अक्तूबर 2004)

विशद साप्ताहिक विधान

कृतिकार :
परम पूज्य आचार्यश्री
विशदसागर जी महाराज

प्राप्ति स्थान :
विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला,
जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

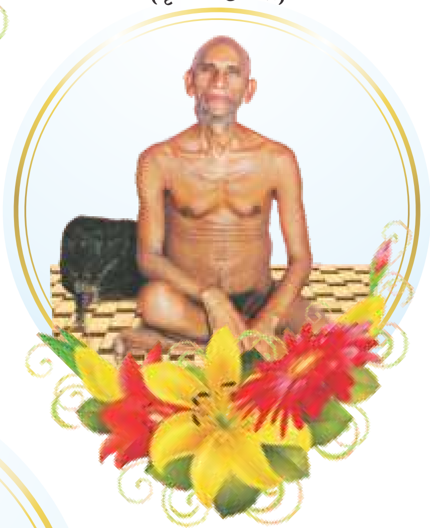

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

विशद
साप्ताहिक विधान

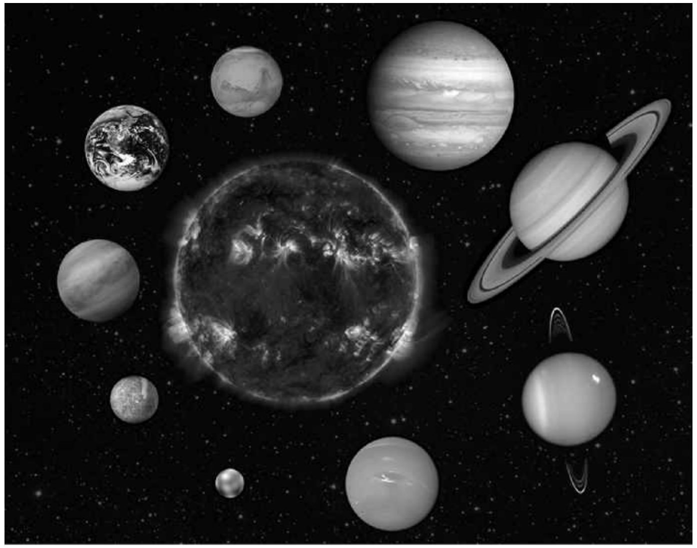

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

कृति - विशद साप्ताहिक विधान
रचयिता - प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज
संस्करण - प्रथम-2019, प्रतियाँ - 1000
सम्पादन . मुनि 108 श्री विशाल सागर जी महाराज
सहयोग - आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लक श्री विसौम सागर जी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती माताजी
संकलन - ज्योति दीदी-9829076085, आस्था दीदी-9660996425
सपना दीदी-9829127533, आरती दीदी-8700876822
कम्पोजिंग - आरती दीदी-8700876822
प्राप्ति स्थल - 1. सुरेश जैन सेठी, शांति नगर, जयपुर - 9413336017
2. हरीश जैन, दिल्ली - 9136248971
3. महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी - 09810570747
4. पदम जैन, रेवाड़ी - 09416888879
5. श्री सरस्वती पेपर स्टोर, चांदी की टकसाल, जयपुर
मो.: 8561023344, 8114417253

पुण्यार्जक :
1. धामपुर जैन समाज

2. दिनेश जैन-श्रीमति ऋतु जैन नीमराना
जिला-अलवर (राज.)

मुद्रक - बसन्त जैन, श्री सरस्वती प्रिन्टिंग इण्स्ट्रीज, SBI के नीचे, चांदी की टकसाल, जयपुर - मो.: 8114417253, 8561023344
ईमेल : jainbasant02@gmail.com
मूल्य - 70/- रु. मात्र

नवग्रह शान्ति के लिये मंत्रजाप

1. सूर्य – ॐ णमो सिद्धाणं।
2. चन्द्र – ॐ णमो अरिहंताणं।
3. मंगल – ॐ णमो सिद्धाणं।
4. बुध – ॐ णमो उवज्झायाणं।
5. बृहस्पति – ॐ णमो आइरियाणं।
6. शुक्र – ॐ णमो अरिहंताणं।
7. शनि – ॐ णमो लोए सव्व साहुणं।
8. केतु – ॐ णमो सिद्धाणं।
9. केतु-राहू – ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आइरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्व साहूणं।

मंत्र व्याख्या

मंत्र मुह से बोला हुआ वो शब्द है जो चमत्कार पैदा करता है। यह तीन प्रकार के होते है :-

1. पुरुषमंत्र – नमोकार मंत्र देवों का मंत्र है यह पुरुष मंत्र है इसे किसी भी समय सुख दुख शुद्ध अशुद्ध अवस्था में बोला जा सकता है। इस मंत्र के जाप से सारी सिद्धियां प्राप्त होती है व कष्टों का नाश होता है।
2. स्त्रीमंत्र – जिस मंत्र के आखिर में स्वाहा बोला जाता है वह स्त्री मंत्र होता है। इसे बोलने से पहले मन वचन काय (नहाकर धुले हुए वस्त्र धारण करना) कि शुद्धि आवश्यक है तथा इसे इष्ट आवाह्न करके तत्पश्चात अग्नि में समर्पित करते वक्त धूप डालते हुए बोलना चाहिए। इसका कारण यह है कि अग्नि देवता कि स्त्री का नाम स्वाह है इसीलिए आवाह्न सम्पूर्ण तभी होता है जब स्वाहा अग्नि में समर्पित हो।
3. नपुंसक मंत्र – जिस मंत्र के आखिर में नमो नमो बोला जाता है वह नपुंसक मंत्र होता है उसे हाथ में माला से जाप द्वारा किसी स्थान पर शुद्ध भाव से किया जा सकता है।

नवग्रह का जाप

ॐ ह्रीं सर्वग्रह अरिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय नमः।

1. रविवार – ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं सूर्यग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा।
2. सोमवार – ॐ ह्रीं क्रौं श्रीं क्लीं चन्द्रारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा।
3. मंगलवार – ॐ ह्रीं क्रौं श्रीं क्लीं भौमारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा।
4. बुधवार – ॐ ह्रीं क्रौं श्रीं क्लीं बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा।
5. गुरूवार – ॐ ह्रीं क्रौं श्रीं क्लीं ऐं गुरुअरिष्ट निवारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा।
6. शुक्रवार – ॐ ह्रीं क्रौं श्रीं क्लीं शुक्र अरिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा।
7. शनिवार – ॐ ह्रीं क्रौं हः श्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा।
8. शनिवार – ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ह्रूं राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा।
9. शनिवार – ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं केतू अरिष्ट ग्रहारिष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः सर्व शांति कुरु कुरु स्वाहा।

प.पू. आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज ने प्रस्तुत साप्ताहिक विधान नवग्रह की पूजाओं के आधार पर तैयार किया है जिस दिन जो वार हो उस दिन उन्हीं तीर्थंकर सम्बन्धी पूजा विधान जाप चालीसा आरती कर जीवन में अपार सफलता प्राप्त करें।

(मुनि विशाल सागर)

अंतस् की भावना

गुरुवर की कृपा जग में सबसे निराली।
होली यही, दशहरा यही है दिवाली।।

भारत एक ऐसा देश है जहाँ हमेशा एक से बढ़कर एक तपोनिष्ठ साधु-संत, ऋषि- महर्षि एवं महापुरुष हुए हैं जिन्होंने भारतीय सांस्कृतिक एवं आचरणात्मक नैतिक मूल्यों की अजस्र धारा निरन्तर प्रवाहित की है। जिनमें अवगाहन कर अनेकों जीवों ने अपने जीवन को सफल बनाया है। ऐसे ही संत-मुनियों में अद्वितीय है परम पूज्य आचार्य श्री विशद सागर की पावन वाणी **सत्यं-शिवं-सुन्दरं** की विराट अभिव्यक्ति तथा मुक्तिद्वार खोलने में सर्वथा सक्षम है। गुरुवर की लेखनी में तो ऐसी जादूगरी है जो सभी को मंत्रमुग्ध कर देती है। जो इस संसार में पतित के लिए पावन बनाने में सहाई होती है। जो जीव भगवान की भक्ति, पूजा, अर्चना, विधान, गुणगान मन-वचन-काय तीनों की सरलता से वीतरागी भगवान की शरण को प्राप्त कर उन्हीं के बताये हुये मार्ग पर चलता है। वह सम्यक्दृष्टि जीव ही एक दिन पावनता, पूज्यता, वीतरागता को प्राप्त होता है कहा भी है।

जिन पूजातैं सब सुख होय, जिन-पूजा सम अवर न कोय।
जिन-पूजातैं स्वर्ग-विमान, अनुक्रमतैं पावैं निर्वाण।।

आचार्य श्री का भक्तों पर महान् उपकार है तथा अपने अभीक्ष्ण ज्ञान से साहित्य को भी उपकृत किया है। संतों का जीवन आश्चर्यों का महालेख ही नहीं होता, अपितु उनमें चेतना का उन्मेष भी होता है। उनके हर चरण आचरण में मनुष्य नये उत्साह, नई प्रेरणा, शक्ति का अनुभव करता है। जिससे समाज और साहित्य को नई दिशा प्राप्त होती है।

समस्त लोककल्याण की भावना से युक्त कविहृदय, **क्षमामूर्ति, वात्सल्यरत्नाकर, परमज्ञानी, महायोगी** जो देश की माटी की गरिमा बढ़ा रहे हैं ऐसे अभिवंदनीय, विश्व-वंदनीय गुरुवर के श्री चरणों में कोटिश: नमोस्तु-3

आचार्य श्री के चरणों में अंतिम मनोभावना-

तेरी छत्रछाया गुरुवर मेरे सिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो।।

- **ब्र. आरती दीदी** (संघस्थ आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज)

विषय अनुक्रमणिका

1.	लघु विनय पाठ	1
2.	मंगल पाठ	1
3.	अथ पूजा पीठिका	1
4.	श्री देव शास्त्र गुरु पूजन	4
5.	मूलनायक सहित समुच्चय पूजन	6
6.	समुच्चय महार्घ्य	10
7.	शांतिपाठ	11
8.	विसर्जन पाठ	11
9.	आशिका लेने का मंत्र	11
10.	श्री पद्मप्रभु विधान	12
11.	श्री पद्मप्रभु विधान स्तवन	13
12.	श्री पद्मप्रभु पूजा (रविवार)	14
13.	श्री पद्मप्रभु चालीसा	30
14.	श्री पद्मप्रभु की आरती	32
15.	श्री पार्श्वनाथ विधान	34
16.	श्री पार्श्वनाथ स्तवन	35
17.	श्री पार्श्वनाथ जिन पूजन (शनिवार-रविवार)	36
18.	श्री पार्श्वनाथ की आरती	58
19.	श्री पार्श्वनाथ चालीसा	60
20.	श्री पार्श्वनाथ प्रशस्ति	61
21.	श्री चन्द्रप्रभ विधान	62
22.	श्री चन्द्रप्रभ स्तवन	63
23.	श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजन (सोमवार)	64
24.	श्री चन्द्रप्रभ चालीसा	75
25.	श्री चन्द्रप्रभ की आरती	77
26.	श्री वासुपूज्य विधान	78
27.	श्री वासुपूज्य स्तवन	79
28.	श्री वासुपूज्य पूजन (मंगलवार)	80
29.	श्री वासुपूज्य प्रशस्ति	94
30.	श्री वासुपूज्य भगवान की आरती	95
31.	श्री वासुपूज्य चालीसा	95
32.	श्री शांतिनाथ विधान	97
33.	श्री शान्तिनाथ स्तवन	98
34.	श्री शान्तिनाथ विधान पूजा (बुधवार)	99
35.	श्री शान्तिनाथ की आरती	122
36.	श्री शान्तिनाथ भगवान चालीसा	123
37.	श्री आदिनाथ विधान	125
38.	श्री आदिनाथ जिन स्तवन	126
39.	श्री आदिनाथ पूजा (गुरुवार)	127
40.	श्री आदिनाथ चालीसा	143
41.	श्री आदिनाथ की आरती/प्रशस्ति	145
42.	श्री पुष्पदंतनाथ विधान	146
43.	श्री पुष्पदंतनाथ स्तवन	147
44.	श्री पुष्पदंतनाथ पूजा (शुक्रवार)	148
45.	श्री पुष्पदन्त चालीसा	162
46.	प्रशस्ति	164
47.	श्री पुष्पदंत की आरती-1, 2	165
48.	श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान	166
49.	श्री मुनिसुव्रत जिन स्तोत्र	167
50.	श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजा (शनिवार)	168
61.	मुनिसुव्रत चालीसा	187
62.	मुनिसुव्रत की आरती	189
63.	प्रशस्ति	189
64.	श्री नेमिनाथ विधान	190
65.	श्री नेमिनाथ स्तुति	191
66.	श्री नेमिनाथ पूजा (शनिवार)	192
67.	श्री नेमिनाथ चालीसा	207
68.	प्रशस्ति	208
69.	श्री नेमिनाथ की आरती	209
70.	आचार्य गुरुवर श्री विशदसागर जी की आरती	210

लघु विनय पाठ

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीड़ा हारी लोक में, भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रायलोक के, शिवपद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो !, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भविजन को भवसिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो !, आया तुमरे द्वार।।8।।

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत।।

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणेभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्य निर्व. स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं नि.स्व.।।4।।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

"पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी !, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।1।।

निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपामि।

''स्वस्ति मंगल पाठ''

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

''परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ''

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण।।1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।।2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।।3।।

।। इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना

दोहा - देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभु निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु विद्यमान विशंति जिन अनन्तानन्तसिद्ध निर्वाण क्षेत्र समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निव. स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निव. स्वाहा।

दोहा - शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार।।

शान्तये शांतिधारा

दोहा - पुष्पांजलिं करते यहाँ, लिए पुष्प यह हाथ।
देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा - देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल।।

(तामरस छंद)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते।।
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्व साधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते।।
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पंचकल्याण नमस्ते।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शास्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते।।

दोहा - अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का योग।।

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)।।

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

स्थापना

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र-गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मोंकृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।।

शान्तये शांतिधारा...

दोहा - पुष्पों से पुष्पांजली, करते हैं हम आज।
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पंच कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करें जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.।

जयमाला

दोहा - तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, ओर ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते है पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्वसाधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।
प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश।।5।।
वस्तु तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।

सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याये भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा - नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने आये हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक......सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

समुच्चय महार्घ्य

अर्हंत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन।।
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष।।

दोहा - अष्ट द्रव्य का अर्घ्यं यह, 'विशद' भाव के साथ।
चढ़ा रहे त्रययोग से, झुका चरण में माथ।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु, सरस्वती देव्यै, सोलहकारण भावना, दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय धर्म, त्रिलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, नन्दीश्वर, पंचमेरु सम्बन्धी चैत्य-चैत्यालय, कैलाश गिरि, सम्मेद शिखर, गिरनार, चम्पापुर, पावापुर आदि निर्वाण क्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, विद्यमान विंशति तीर्थंकर तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो समुच्च महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पुष्पक्षेपण करते हुए शांति पाठ बोले)

शांतिपाठ

शांतिपाठ शांति के दाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
परम शांत मुद्रा जो धारे, जग जीवों के तारण हारे।।
शरण आपकी जो भी आते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
शांतिपाठ पूजा कर गाएँ, पुष्पांजलि कर शांति जगाएँ।।
जिन पद शांती धार कराएँ, जीवन में सुख शांति पाएँ-3।
जीवों को सुख शांति प्रदायी, धर्म सुधामृत के वरदायी।।
शांतिनाथ दुख दारिद्र नाशी, सम्यक्दर्शन ज्ञान प्रकाशी।
राजा प्रजा भक्त नर-नारी, भक्ति करें सब मंगलकारी।।
जैन धर्म जिन आगम ध्यायें, परमेष्ठी पद शीश झुकाएँ।
श्री जिन चैत्य जिनालय भाई, विशद बनें सब शांति प्रदायि।।

(शान्तये शान्तिधारा-3) (कायोत्सर्ग करोमि)

(दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

विसर्जन पाठ

भूल हुई हो जो कोई, जान के या अन्जान।
बोधि हीन मैं हूँ विशद, क्षमा करो भगवान।।
ज्ञान ध्यान शुभ आचरण, से भी हूँ मैं हीन।
सर्व दोष का नाश हो, शुभाचरण हो लीन।।
पूजा अर्चा में यहाँ, आए जो भी देव।
करूँ विसर्जन भाव से, क्षमा करो जिन देव।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

(ठोने में पुष्पक्षेपण करें)

आशिका लेने का मंत्र

पूजा कर आराध्य की, धरे आशिका शीश।
विशद कामना पूर्ण हो, पाएँ जिन आशीष।।

श्री पद्मप्रभु विधान

माण्डला

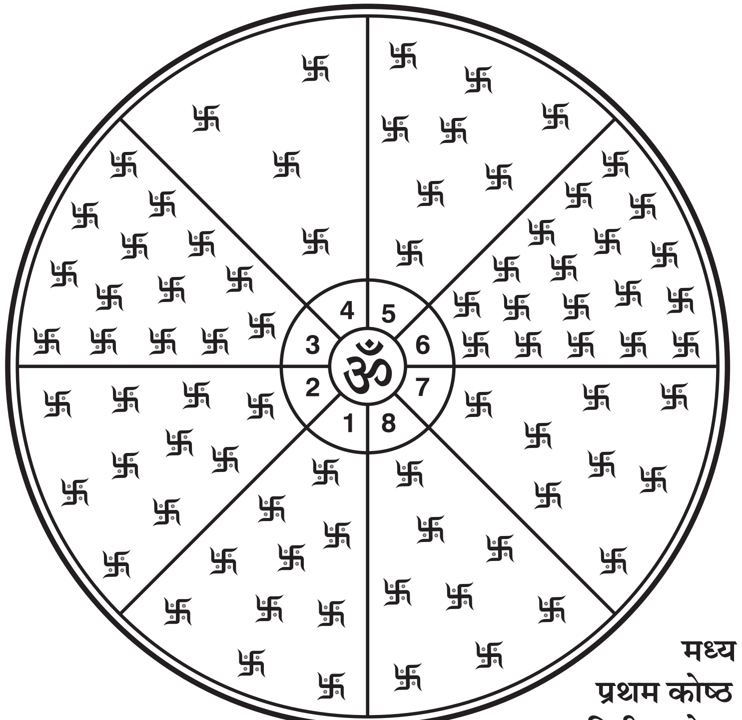

मध्य - ॐ
प्रथम कोष्ठ - 10
द्वितीय कोष्ठ - 10
तृतीय कोष्ठ - 14
चतुर्थ कोष्ठ - 04
पंचम कोष्ठ - 08
षष्ठम कोष्ठ - 18
सप्तम कोष्ठ - 08
अष्टम कोष्ठ - 08
कुल अर्घ्य : 80

रचयिता :
प. पू. क्षमामूर्ति 108
आचार्य श्री विशदसागर जी

श्री पद्मप्रभु विधान स्तवन

दोहा - पद्म प्रभुजी शोभते, जग में पद्म समान।
भव्य जीव जिन का करें, भाव सहित गुणगान।।

(वीर छन्द)

पद्मप्रभु हैं जिनके तनकी, पद्म पत्र सम सुन्दर कान्ति।
ले ली विशद है पद्म अन्तर में, जिन पद्मांकित ने विश्रान्ति।।
दिनकर भर देता है जैसे, पद्मसरों में विमल विकाश।
उसी तरह भर देते हैं वे, भविकमलों में देव प्रकाश।। 1।।
पूर्वकाल में मोक्ष प्राप्ति के, पाई लक्ष्मी और गिरा।
त्यागे ना होकर विमुक्त जो, और बढ़ाया उसे जरा।।
कर समग्र शोभित वाणी को, लक्ष्मी को सर्वज्ञ रमा।
गिरा रमा के नाथ आप हो, और ना कोई आप समा।। 2।।
पद्मराग मणि गिरि का जैसे, सुन्दर दिखता लाल प्रकाश।
कर देता अनुरक्त प्रान्त को, करके अन्धकार का नाश।।
नाथ बाल रवि किरणों जैसी, रही आपके तन की कांति।
नर सुर पूर्ण सभा में भरती, निज प्रकाश औ अनुपम शांति।। 3।।
ज्यों सहस्रदल कमलों के भी, ऊपर करें सुपद संचार।
नाथ ! गगन तल शोभित करते, करें काम के मद को क्षार।।
इस भूतल के देश देश में, किया आपने नाथ ! विहार।
जन-जन को सुख शांती वैभव, अनुपम किया देव ! उपकार।।4।।
गुण सागर के बिन्दू का भी, स्तवन ना कर सके सुरेश।
किया निरन्तर पूर्व काल में, जिसने भाई प्रयत्न विशेष।।
हे ऋषि पुंगव मेरे जैसा, क्या बतलावे इसमें 'शक्ति।
प्रेरित करती है मुझको, हे देव ! आपकी अतिशय भक्ति।। 5।।

दोहा - जिन भक्ती का फल 'विशद', मिलता बारम्बार।
भव्य जीव जिन भक्ति कर, पावें भवदधि पार।।

।। इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत ।।

श्री पद्मप्रभु पूजा (रविवार)

स्थापना

दोहा - पद्म प्रभु ने पद्म सम, धार लिया वैराग।
तिष्ठाते निज हृदय में, करके पद अनुराग।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

हम निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।। 1।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन यह घिसकर लाए, भवताप नशाने आए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत यह यहाँ चढ़ाएँ, हम अक्षय पदवी पाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

यह सुरभित पुष्प चढ़ाएँ, अब काम बाण विनसाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ा हर्षाएँ, हम क्षुधा से मुक्ती पाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत के यह दीप जलाए, मम मोह नाश हो जाए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल यह पूजा को लाए, शिव फल पाने हम आए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

वसु द्रव्य का अर्घ्य बनाए, पाने अनर्घ्य पद आए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – शांती पाने के लिए, देते शांती धार।
विशद भावना है यही, पाएँ भव से पार।।

शान्तये शांतीधारा

दोहा – पुष्पांजलि करते यहाँ, विशद भाव के साथ।
मोक्ष महापद प्राप्त हो, हमको भी हे नाथ!।।

(दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्)

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

चौपाई

गर्भ चिन्ह माँ के उर आए, देव रत्न वृष्टी करवाए।
माघ कृष्ण षष्ठी शुभ गाई, उत्सव देव किए सुखदायी।।1।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल त्रयोदशि पाए, सुर नर इन्द्र सभी हर्षाए।
जन्मोत्सव मिल इन्द्र मनाए, आनन्दोत्सव श्रेष्ठ कराए।।2।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदि तेरस शुभकारी, संयम धार हुए अनगारी।
मन में प्रभु वैराग्य जगाए, जग जंजाल छोड़ वन आए।।3।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल की पूनम पाए, विशद ज्ञान प्रभु जी प्रगटाए।
धर्म देशना आप सुनाए, इस जग को सत्पथ दिखलाए।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी भाई, के दिन प्रभु ने मुक्ती पाई।
अपने सारे कर्म नशाए, तज संसार वास शिव पाए।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – पद्मासन पद में पदम, पद्म प्रभु भगवान।
जयमाला गाते विशद, पाने शिव सोपान।

(रेखता छन्द)

चरण में भक्ती से शत् इन्द्र, झुकाते प्रभु चरणों में शीश।
कहाए पद्मप्रभु भगवान, जगत में जगती पति जगदीश।। 1।।
अनुत्तर वैजयन्त से आप, चये कौशाम्बी नगरी आन।
धरण नृप रही सुसीमा मात, गर्भ में कीन्हे आप प्रयाण।। 2।।
दाहिने पग में कमल का चिन्ह, इन्द्र ने देख दिया शुभ नाम।
कराए न्हवन मेरु पे इन्द्र, चरण में कीन्हे सभी प्रणाम।। 3।।
जगा प्रभु के मन में वैराग, सकल संयम धर हुए मुनीश।
ऋद्धियाँ प्रगटीं अपने आप, अतः कहलाए आप ऋशीष। 4।।
स्वयंभू बनकर के भगवान, जगाए अनुपम केवलज्ञान।
रचाएँ समवशरण तब देव, रहा विधि का कुछ यही विधान।।5।।
पूर्ण कर आयू कर्म अशेष, किए सब कर्मों का प्रभु नाश।
समय इक में सिद्धालय जाय, वहाँ पर कीन्हे आप निवास।।6।।

दोहा – प्रभु अनन्त ज्ञानी हुए, गुण अनन्त की खान।
गुण गाते निज भाव से, मिले मुक्ति का यान।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – इन्द्रिय जेता आप हो, बने आप भगवान।
अतः इन्द्र शत आपका, करें 'विशद' गुणगान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

प्रथम कोष्ठ

दोहा – जन्म के दश अतिशय परम, पाते हैं भगवान।
पाने मुक्ती पथ प्रभो!, करते हम गुणगान।।

।। प्रथम कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(चौपाई)

स्वेद रहित तन पाते स्वामी, तीर्थंकर जिन अन्तर्यामी।
उनके पद हम शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।।1।।

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

निर्मल सहज प्रभू तन पाते, जो मल मूत्र कभी ना जाते।
उनके पद हम शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।।2।।

ॐ ह्रीं निहार रहित सहजातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रुधिर स्वेत है जिनका भाई, वात्सल्य की है प्रभुताई।
उनके पद हम शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्वेत रुधिर सहजातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

समचतुस्र संस्थान बताया, सुन्दर जो सबके मन भाया।
उनके पद हम शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।।4।।

ॐ ह्रीं समचतुष्क संस्थान सहजातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रेष्ठ संहनन प्रभू जी पाए, वज्रवृषभ नाराच कहाए।
उनके पद हम शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।।5।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मन मोहक है रूप निराला, जन-जन का मन हरने वाला।
उनके पद हम शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।।6।।

ॐ ह्रीं अतिशयरूप सहजातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रहा सुगन्धित तन शुभकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी।
उनके पद हम शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।।7।।

ॐ ह्रीं सुगन्धित तन सहजातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सहस्र आठ शुभ लक्षण धारी, तीर्थंकर जिन मंगलकारी।
उनके पद हम शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।।8।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट शुभ लक्षण सहजातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बल अनन्त के धारी जानो, जन्म से अतिशय प्रभु का मानो।
उनके पद हम शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।।9।।

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

प्रिय हित वचन मधुर मनहारी, प्रभू बोलते विस्मय कारी।
उनके पद हम शीश झुकाते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।।10।।

ॐ ह्रीं हितमित प्रिय वचन सहजातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा – अतिशय पाये जन्म के, पद्म प्रभु भगवान।
जिनकी अर्चा कर मिले, मुक्ती का सोपान।।11।।

ॐ ह्रीं जन्मोत्सवे दशातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वितीय कोष्ठ

दोहा – अतिशय केवल ज्ञान के, प्राप्त करें भगवान।
सुर नर मुनि जिनदेव की, पूजा करें महान।।

।। अथ द्वितिय कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

केवल ज्ञान के 10 अतिशय

सौ योजन दुर्भिक्ष न होवे, जहाँ प्रभू का आसन हो।
पापी कामी चोर न बहरे, जहाँ प्रभू का शासन हो।।
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतू, पद में शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

होय गमन आकाश प्रभू का, यह अतिशय दिखलाते हैं।
नृत्यगान करते हैं सुर नर, मन में अति हर्षाते हैं।।
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतू, पद में शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षयजातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्व प्राणियों के मन में शुभ, दया भाव आ जाता है।
प्रभू के आने से अदया का, नाम स्वयं खो जाता है।।
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतू, पद में शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षयजातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुर नर पशु कृत और अचेतन, कोई उपसर्ग नहीं होवें।
महिमा है तीर्थंकर पद की, आप स्वयं सारे खोवें।।
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतू, पद में शीश झुकाते हैं।। 4।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षयजातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

क्षुधा रोग से पीड़ित है जग, बिन आहार नहीं रहते।
क्षुधा वेदना को जीते प्रभु, कवलाहार नहीं करते।।
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतू, पद में शीश झुकाते हैं।। 5।।

ॐ ह्रीं कवलाहाराभाव घातिक्षयजातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

समवशरण के बीच विराजे, पूर्व दिशा सम्मुख होवें।
चतुर्दिशा में दर्शन हों शुभ, भव्य जीव जड़ता खोवें।।
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतू, पद में शीश झुकाते हैं।। 6।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सब विद्या के ईश्वर हैं प्रभु, सर्व लोक के अधीपती।
सुर नरेन्द्र चरणों आ झुकते, गणधर मुनिवर और यती।।
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतू, पद में शीश झुकाते हैं।। 7।।

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वरत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

छाया रहित प्रभू का तन है, कैसा विस्मयकारी है।
मूर्त पुद्गलों से निर्मित है, सुन्दर अरु मनहारी है।।
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतू, पद में शीश झुकाते हैं।। 8।।

ॐ ह्रीं छाया रहित घातिक्षयजातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा

बढ़ें नहीं नख केश प्रभू के, ज्यों के त्यों ही रहते हैं।
तीर्थंकर जिन जिनवाणी में, तीन काल यह कहते हैं।।
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतू, पद में शीश झुकाते हैं।। 9।।

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

निर्निमेष दृग रहते जिनके, नहीं झपकते पलक कभी।
नाशादृष्टी रहे सदा ही, ऐसा कहते देव सभी।।
केवलज्ञान प्रकट होते ही, दश अतिशय शुभ पाते हैं।
प्रभु के गुण को पाने हेतू, पद में शीश झुकाते हैं।। 10।।

ॐ ह्रीं अक्षस्पंद रहित घातिक्षयजातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा - अतिशय केवल ज्ञान के, दस हैं महति महान।
जिनकी अर्चा कर मिले, पावन पद निर्माण।। 11।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानोत्सवें घातिक्षयजातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

तृतीय कोष्ठ

दोहा - देवोंकृत जिनदेव जी, चौदह अतिशयवान।
जिनपद पाने के लिए, करें विशद गुणगान।।

।। तृतीय कोष्ठोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

(चौपाई छन्द)

'अर्धमागधी भाषा' जानो, अतिशय देवोंकृत पहिचानो।
प्रभु जी केवल ज्ञान जगाते, देव विशद अतिशय दिखलाते।। 1।।

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपुनीतातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'मैत्री भाव' जगे सुखदायी, जग जीवों में मंगलदायी।
प्रभु जी केवल ज्ञान जगाते, देव विशद अतिशय दिखलाते।। 2।।

ॐ ह्रीं सर्व मैत्रीभाव देवोपुनीतातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'फल फलते सब ऋतु' के भाई, प्रभु अतिशय पाते शिवदायी।
प्रभु जी केवल ज्ञान जगाते, देव विशद अतिशय दिखलाते।। 3।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरु परिणाम देवोपुनीतातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पाईता छन्द)

'भू दर्पणवत्' हो जावे, जहाँ प्रभु के पद पड़ जावें।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।।4।।

ॐ ह्रीं आदर्शतल प्रतिमा रत्नमयी देवोपुनीतातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वायू सुगन्ध' सुखदायी, चलती है मंगलदायी।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।।5।।

ॐ ह्रीं सुगन्धित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपुनीतातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जग में आनन्द' समावे, आगमन प्रभु का पावें।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वानन्दकारक देवोपुनीतातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भूगत कंटक' हो जाते, जिन के विहार में आते।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।।7।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपुनीतातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हो गंधोदक की वृष्टी', हो जाय हर्षमय सृष्टी।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।।8।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृत गंधोदक वृष्टि देवोपुनीतातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद तल में कमल' रचाते, होवे विहार सुर आते।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।।9।।

ॐ ह्रीं चरणकमलतल रचित स्वर्ग कमल देवोपुनीतातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हो गगन सुनिर्मल' भाई, है देवों की प्रभुताई।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।।10।।

ॐ ह्रीं सर्वदिशा निर्मल देवोपुनीतातिशय धारक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब 'मेघ धूम खो जावे', दिश निर्मलता को पावे।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।।11।।

ॐ ह्रीं शरदकाल वन्निर्मल गमनत्व देवोपुनीतातिशय धारक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आकाश में जयजय' कारे, सुर आके बोलें प्यारे।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।।12।।

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपुनीतातिशय धारक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुभ धर्म चक्र' मनहारी, ले यक्ष चलें शुभकारी।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।।13।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्र चतुष्टय देवोपुनीतातिशय धारक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु 'मंगलद्रव्य' सजावें, प्रभु की महिमा को गावें।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।।14।।

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपुनीतातिशय धारक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – चौदह अतिशय देवकृत, पायें जिन भगवान।
सुर नर मुनि जिनकें चरण, करते हैं गुणगान।।15।।

ॐ ह्रीं चतुर्दश देवोपुनीतातिशय धारक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चतुर्थ कोष्ठ

दोहा – अनन्त चतुष्टय धारते, पद्मप्रभु भगवान।
दिव्य देशना दे करें, सर्व जगत कल्याण।।

।। चतुर्थ कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अनन्त चतुष्टय के अर्घ्य

(चाल छन्द)

'दर्शन अनन्त' गुण पाएँ, प्रभु लोकालोक दिखाएँ।
हम जिनवर के गुण गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन गुण सहिताय श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु ज्ञानावरणी नाशे, फिर 'केवल ज्ञान' प्रकाशे।
हम जिनवर के गुण गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञान गुण सहिताय श्री पद्‌मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु मोह कर्म के नाशी, जिनवर 'अनन्त सुखराशी'।
हम जिनवर के गुण गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं अनन्तसुख गुण सहिताय श्री पद्‌मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

न अन्तराय रह पावे, प्रभु 'वीर्यानन्त' जगावें।
हम जिनवर के गुण गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्य गुण सहिताय श्री पद्‌मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा- अनन्त चतुष्टय धारते, पाके केवल ज्ञान।
जिनकी वाणी है विशद, वीतराग विज्ञान।।5।।

ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय सहिताय श्री पद्‌मप्रभू जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

पंचम कोष्ठ

दोहा - प्रातिहार्य होते विशद, समवशरण में आठ।
अतः भव्य अर्चा करें, होवें ऊँचे ठाठ।।

।। पंचम कोष्ठोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

अष्ट प्रातिहार्य के अर्घ्य

(दोहा)

शोक निवारी जानिए, 'तरु अशोक' सुखदाय।
समवशरण की सभा में, प्रातिहार्य कहलाय।।1।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री पद्‌मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रत्न जड़ित सुंदर दिखे, शुभ 'सिंहासन' होय।
उदयाचल सों छवि दिखे, अधर तिष्ठते सोय।।2।।

ॐ ह्रीं सिंहासनमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री पद्‌मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भांति-भांति के कुसुम से, 'पुष्पवृष्टि' शुभ होय।
मिलकर करते देव गण, महा भक्तिवश सोय।।3।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री पद्‌मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुने पाप क्षय हो भला, 'दिव्य ध्वनि' सुखकार।
सुन नर पशु सब जगत के, पावैं सौख्य अपार।।4।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री पद्‌मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु के आगे देवगण, 'चौंसठ चँवर' ढुराएँ।
अतिशय महिमा प्रकट हो, भक्तिसहित गुण गाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं चामरमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री पद्‌मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'भामण्डल' निज कांति से, सप्त सु भव दर्शाय।
कोटि सूर्य फीके पड़ें, महा ज्योति प्रगटाय।।6।।

ॐ ह्रीं भामण्डलमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री पद्‌मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

करें देव मिलकर सुखद, 'देव दुंदुभि नाद'।
समवशरण में जाय के, करें नहीं उन्माद।।7।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभिमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री पद्‌मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तीन लोक के प्रभू की, जड़ित सुनग 'तिय छत्र'।
महिमाशाली है कहा, दर्शाते सर्वत्र।। 8।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री पद्‌मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा - अष्टप्रातिहार्यों सहित, पद्‌मप्रभु भगवान।
शिवपथ के राही बने, किये जगत कल्याण।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री पद्‌मप्रभू जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

षष्ठम कोष्ठ

दोहा - दोष अठारह से रहित, होते हैं भगवान।
अतः भव्य अर्चा करें, जिन चरणों में आन।।

।। षष्ठम कोष्ठोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

अष्टादश दोष रहित जिनेन्द्र के अर्घ्य

(सखी छन्द)

जो 'क्षुधा' दोष के धारी, वे जग में रहे दुखारी।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी।।1।।

ॐ ह्रीं क्षुधा रोग विनाशक श्री पद्‌मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'तृषा' दोष को पाते, वे अतिशय दु:ख उठाते।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी।।2।।

ॐ ह्रीं तृषा दोष विनाशक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'जन्म' दोष को पावें, वे मरकर फिर उपजावें।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी।।3।।

ॐ ह्रीं जन्मदोष विनाशक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

है 'जरा' दोष भयकारी, दुख देता है जो भारी।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी।।4।।

ॐ ह्रीं जरा दोष विनाशक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'विस्मय' करने वाले, प्राणी हैं दुखी निराले।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी।।5।।

ॐ ह्रीं विस्मय दोष विनाशक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

है 'अरति' दोष जग जाना, दुखकारी इसको माना।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अरति दोष विनाशक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

श्रम करके जग के प्राणी, बहु 'खेद' करें अज्ञानी।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी।।7।।

ॐ ह्रीं खेद दोष विनाशक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

है 'रोग' दोष दुखदायी, सब कष्ट सहें कई भाई।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी।।8।।

ॐ ह्रीं रोग दोष विनाशक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जब इष्ट वियोग हो जाए, तब 'शोक' हृदय में आए।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी।।9।।

ॐ ह्रीं शोक दोष विनाशक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मद' में आकर के प्राणी, करते हैं पर की हानी।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी।।10।।

ॐ ह्रीं मददोष विनाशक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो 'मोह' दोष के नाशी, होते है शिवपुर वासी।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी।।11।।

ॐ ह्रीं मोह दोष विनाशक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'भय' सात कहे दुखकारी, जिनकी महिमा है न्यारी।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी।।12।।

ॐ ह्रीं भय दोष विनाशक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'निद्रा' से होय प्रमादी, करते निज की बरबादी।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी।।13।।

ॐ ह्रीं निद्रा दोष विनाशक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'चिंता' को चिता बताया, उससे ही जीव सताया।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी।।14।।

ॐ ह्रीं चिंता दोष विनाशक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तन से जब 'स्वेद' बहाए, जो भारी दुख पहुँचाए।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी।।15।।

ॐ ह्रीं स्वेद दोष विनाशक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

है 'राग' आग सम भाई, जानो इसकी प्रभुताई।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी।।16।।

ॐ ह्रीं राग दोष विनाशक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिसके मन 'द्वेष' समाए, वह कमठ रूप हो जाए।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी।।17।।

ॐ ह्रीं 'द्वेष' दोष विनाशक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं मरण दोष के नाशी, वे होते शिवपुर वासी।
यह दोष विनाशन हारी, तीर्थंकर हैं अविकारी।।18।।

ॐ ह्रीं 'मृत्यु' दोष विनाशक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा – दोष अठारह से रहित, पद्म प्रभु भगवान।
अष्ट कर्म को नाश कर, पायें शिव सोपान।।19।।

ॐ ह्रीं 'अष्टादस' दोष विनाशक श्री पद्मप्रभू जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

सप्तम कोष्ठ

दोहा – समवशरण में शोभते, गणधर सप्त ऋशीष।
भाव सहित अर्चा करें, सुर नर भव्य मुनीश।।

।। सप्तम कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

गणधर एवं सप्त ऋषि के अर्घ्य

(नरेन्द्र छन्द)

गणधर एक सौ दश बतलाए, पद्मप्रभू के भाई।
वज्र चामरादिक अविकारी, पावन मंगल दायी।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ दशाधिक शत गणधर मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरवधर दो सहस तीन सौ, पद्मनाथ के जानो।
स्वयं आत्मभू पद से भूषित, पद्मनाथ को मानो।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रि शत्युत्तर द्वि सहस्र पूर्वधर मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे लाख दो सहस उनहत्तर, मुनि शिक्षक सुखकारी।
पद्मनाथ के समवशरण में, मुनिगण मंगलकारी।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ एकोनसप्तति: सहस्रोत्तर द्विलक्ष शिक्षक मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस हजार मुनि अवधिज्ञानी, पद्मनाथ गुण गावें।
समवशरण में जो भवि आवें, प्रभु को शीश झुकावें।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ दश सहस्र अवधिज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह सहस मुनि केवल ज्ञानी, सब विघ्नों को टारें।
पद्मनाथ की पूजा करके, कर्म कालिमा जारें।।

तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वादश सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह सहस आठ सौ साधू, ऋद्धि विक्रिया पाये।
पद्मनाथ के समवशरण में, रोग शोक हर गाये।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट शत्युत्तर षोडश सहस्र विक्रियाऋद्धिधारि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विपुलमती दस सहस तीन सौ, पद्मनाथ के गाये।
जग में सुन्दर पद्मनाथ जिन, अघहारी कहलाए।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ शतत्रयोत्तर अधिक दस सहस्र विपुलमति मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मनाथ के वादी मुनिवर, जग में प्रीति करावें।
मुनिवादी नौ हजार छह सौ, प्रभु को शीश झुकावें।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, रहते भाई ज्ञानी।
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, जिन की हम कल्याणी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ षट् शत्युत्तर नवसहस्र वादि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – तीन लाख त्रिशत् सहस, मुनिवर जिनके पास।
गणधरादि जिनपद जजें, शिव रमणी की आस।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ तीर्थंकर समवशरणस्थ सर्व गणधर त्रिंशत् सहस्रोत्तर त्रिलक्ष मुनिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। शांतये शांतिधारा।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अष्टम कोष्ठ

दोहा – अष्ट कर्म को नाश कर, बने प्रभू जी सिद्ध।
भव्य जीव अर्चा करें, तीनों लोक प्रसिद्ध।।

।। अष्टम कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

जो मोह कर्म विनशाएँ, वे सुखानन्त को पाएँ।
हैं सिद्ध कर्म के नाशी, जो हुए मोक्ष पुर वासी।।1।।

ॐ ह्रीं समकितगुण सहिताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो ज्ञानावरण नशाए, वे केवल ज्ञान जगाए।
हैं सिद्ध कर्म के नाशी, जो हुए मोक्ष पुर वासी।।2।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानगुण सहिताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं दर्शावरण विनाशी, प्रभु दर्शानन्त प्रकाशी।
हैं सिद्ध कर्म के नाशी, जो हुए मोक्ष पुर वासी।।3।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनगुण सहिताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो अन्तराय विनशाए, वे वीर्यानन्त जगाए।
हैं सिद्ध कर्म के नाशी, जो हुए मोक्ष पुर वासी।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यगुण सहिताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो नाम कर्म विनशाए, गुण सूक्ष्मत्व वे पाए।
हैं सिद्ध कर्म के नाशी, जो हुए मोक्ष पुर वासी।।5।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्वगुण सहिताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं आयु कर्म के नाशी, गुण अवगाहन के वासी।
हैं सिद्ध कर्म के नाशी, जो हुए मोक्ष पुर वासी।।6।।

ॐ ह्रीं अवगाहनगुण सहिताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जो गोत्र कर्म विनशाए, वे अघरुलघु गुण पाए।
हैं सिद्ध कर्म के नाशी, जो हुए मोक्ष पुर वासी।।7।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघुगुण सहिताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं वेदनीय परिहारी, गुण अव्यावाध के धारी।
हैं सिद्ध कर्म के नाशी, जो हुए मोक्ष पुर वासी।।8।।

ॐ ह्रीं अव्याबाधगुण सहिताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा – प्रभु अष्टकर्म विनशाए, फिर अष्ट सुगुण प्रगटाए।
हैं सिद्ध कर्म के नाशी, जो हुए मोक्ष पुर वासी।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टगुण सहिताय श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

जाप्य – ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐंम् अर्हं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा – महिमा मण्डित आप हैं, पद्मप्रभ भगवान।
जयमाला गाते विशद, करते हैं गुणगान।।

।। टप्पा–चाल ।।

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, कौशाम्बी गाई।
वैजयन्त से चयकर आए, पद्मप्रभु भाई।।
जिनेश्वर पूजो हो भाई।।
जिनकी अर्चा सारे जग में, पावन सुखदायी।। जिने....।।1।।
धरणराज पितु मात सुशीमा, जिनकी शुभ गाई।
गर्भागम जिनने पाया है, जग में अतिशायी।। जिने....।।2।।
नाचें गायें इन्द्र सभी मिल, जन्म घड़ी पाई।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, अतिशय हर्षाई।। जिने....।।3।।
दाएँ पग में कमल प्रभु के, लक्षण था भाई।
एक हजार हाथ प्रभु तन की, पाए ऊँचाई।। जिने....।।4।।
तीस लाख पूरव की आयू, लाल रंग भाई।
जातिस्मरण पाके प्रभु ने, जिन दीक्षा पाई।। जिने....।।5।।
आत्मध्यान में लीन हुए तब, कर्म नशे भाई।
केवल ज्ञान जगाया पावन, जग मंगलदाई।। जिने....।।6।।
मोहन कूट सम्मेद शिखर से, प्रभु मुक्ती पाई।
सारे जग में श्री जिनेन्द्र की, फैली प्रभुताई।। जिने....।।7।।

दोहा – संयम धारा आपने, करने निज कल्याण।
'विशद' भावना है यही, पाएँ पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं रवि अरिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – चरण वन्दना कर मिले, भव्यों को आनन्द।
अर्चा करके आपकी, मिट जाते सब द्वन्द।।

।। इत्याशीर्वाद ।।

श्री पद्मप्रभु चालीसा

दोहा – परमेष्ठी की वन्दना, करते बारम्बार।
चालीसा जिन पद्म का, गाते अपरम्पार।।

चौपाई

जय–जय पद्म प्रभु जिन स्वामी, बने आप मुक्ती पथगामी।
भेष दिगम्बर तुमने पाया, सारे जग का मोह नशाया।।

शांति छवि मुद्रा अविकारी, तीन लोक में मंगलकारी।
अस्त्र-शस्त्र त्यागे तुम सारे, रहे न कोई शत्रु तुम्हारे।।
उपरिम ग्रीवक से चय कीन्हे, स्वर्ग संपदा छोड़ जो दीन्हे।
कौशाम्बी नगरी शुभकारी, चयकर आये प्रभु अवतारी।।
धरणराज के लाल कहाए, मात सुसीमा के उर आए।
वंश इक्ष्वाकु तुमने पाया, इस जग में अनुपम कहलाया।।
माघ कृष्ण षष्ठी शुभकारी, चित्रा नक्षत्र रहा मनहारी।
प्रातःकाल गर्भ में आये, मात-पिता के भाग्य जगाये।।
कार्तिक शुक्ल त्रयोदशि जानो, शुभ नक्षत्र चित्रा पहचानो।
इन्द्र करें जिनकी पदसेवा, जन्मे पद्म प्रभ जिनदेवा।।
कौशाम्बी में मंगल छाया, जन्मोत्सव तव वहाँ मनाया।
इन्द्र मेरु पर न्हवन कराए, कमल चिह्न प्रभु के पद पाए।।
धनुष ढाई सौ उच्च कहाए, लाल रंग तन का प्रभु पाए।
जाति स्मरण प्रभु को आया, प्रभु के मन वैराग्य समाया।।
कार्तिक शुक्ल त्रयोदशि जानो, अपराह्न काल श्रेष्ठ पहिचानो।
तृतिय भक्त प्रभु जी पाए, सहस्त्र भूप सह दीक्षा पाए।।
समवशरण आ देव बनाए, साढ़े नौ योजन का गाए।
बाड़ा गाँव एक बतलाया, मूला जाट वहाँ का गाया।।
उसको तुमने स्वप्न दिखाया, मन ही मन मूला हर्षाया।
उसने गृह की नींव खुदायी, उसमें मूर्ति निकली भाई।।
आस-पास के लोग बुलाए, सबको वह मूर्ति दिखलाए।
कमल चिह्न था उसमें भाई, जय बोले सब मिलके भाई।।
दर्शन करने श्रावक आए, बाधा प्रेत की दूर भगाए।
मनोकामना पूरी करते, दुखियों के सारे दुख हरते।।
पद्म प्रभु के गुण हम गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
यही भावना रही हमारी, सुखी रहे प्रभु जनता सारी।।
धर्मी हों इस जग के प्राणी, पढ़ें-सुनें हर दिन जिनवाणी।
नर जीवन को सफल बनावें, सम्यक् श्रद्धा संयम पावें।।
जिन आतम का ध्यान लगावें, कर्म नाशकर शिवपुर जावें।
मुनिवर तीन सौ चौबिस भाई, साथ में प्रभु के मुक्ति पाई।।

बारह सभा जुड़ी वहाँ भाई, दिव्य देशना श्रेष्ठ सुनाई।
गणधर एक सौ ग्यारह गाए, प्रथम चमर गणधर कहलाए।।
तीस लाख पूरब की स्वामी, आयु पाये हैं प्रभु नामी।
छदमस्थ काल छह माह का पाए, ज्ञानी बनकर शिवसुख पाए।।
प्रभु सम्मेद शिखर पर आए, योग निरोध महिने का पाए।
फाल्गुन शुक्ल चौथ शुभकारी, मुक्ति पाए प्रभु अविकारी।।
मोहन कूट से मोक्ष सिधाए, अग्निदेव भक्ति से आए।
नख केशों को तभी जलाए, प्रभु पद भक्ति कर हर्षाए।।
सिद्ध शिला पर धाम बनाए, सुख अनन्त अविनाशी पाए।
हम भी सिद्ध शिला पर जाएँ, यही भावना पावन भाएँ।।

दोहा – चालीसा प्रभु पद्म का, दिन में चालिस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़ें, पावें शांति अपार।।

श्री पद्मप्रभु की आरती

करहु आरती आज, पद्मप्रभु तुमरे द्वारे,
तुमरे द्वारे स्वामी तुमरे द्वारे। विशद ज्ञान के ताज, पदम्...।। टेक।।
मात सुसीमा के तुम प्यारे, धरणराज के राजदुलारे
कौशांबी महाराज-जिनेश्वर...तुमरे द्वारे(1)
इन्द्रराज ऐरावत लाया, जिस पर प्रभु जी को बैठाया
न्हवन किया शुभकार-जिनेश्वर...(2)
कार्तिक शुक्ल त्रयोदशि स्वामी, जन्म लिए जिन अन्तर्यामी
किए सभी जयकार-जिनेश्वर...(3)
जाति स्मरण आपको आया, मन में तब वैराग्य जगाया।
संयम धारा आप, जिनेश्वर...(4)
गिरि सम्मेदशिखर से स्वामी, मोहन कूट गये जगनामी
पाए शिव का राज, जिनेश्वर...(5)
विशद भावना हम यह भाएँ, पावन मोक्षमार्ग अपनाए।
मिले मोक्ष साम्राज्य, जिनेश्वर...(6)
भाव सहित प्रभु को जो ध्याते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
सफल होय सब काज, जिनेश्वर...(7)

श्री पद्मप्रभु की आरती

हम तो आरती उतारें जी, पद्मप्रभ भगवन् की।
जय - जय पद्मप्रभ, जय - जय - जय-2।।
हम तो आरती...।।टेक।।
श्री धरणराज के लाल, सुसीमा उर आये
जन्मे कौशाम्बी नाथ, जगत् मंगल छाए
इनकी आरती उतारो जी, जय-जय पद्मप्रभ, जय-जय-जय-2।
हम तो आरती...।।1।।
प्रभु भेष दिगम्बर धार, मुनि के व्रत धारे।
किए कर्म घातिया नाश, सभी उनसे हारे।
प्रभु पाये हैं केवल ज्ञान, जगत में उपकारी।
आओ भक्ति में डोल-डोल, हृदय के पर खोल-खोल-होऽऽ।।
इनकी महिमा है अपरम्पार, जगत मंगलकारी।
हम तो आरती...।।2।।
नई जीवन में आये बहार, प्रभु गुणगाने से।
कटे भव-भव के कर्म अपार, चरण में आने से।।
'विशद' मिलती है खुशियाँ अपार, सुखी जीवन होवे।
आओ मंदिर में दौड़-दौड़, हाथों को जोड़-जोड़-होऽऽ।।
प्रभु भक्तों के हैं करतार, प्रभु करूणाकारी।
हम तो आरती...।।3।।

श्री पद्मप्रभु का अर्घ्य

निर्मल भावों का जल लेकर, चन्दन विनय भाव के साथ।
अक्षत भक्ति भाव के लेकर, पुष्प सजाकर लाए हाथ।।
निज गुण का नैवेद्य बनाया, ज्ञान दीप ले मंगलकार।
अष्ट कर्म की धूप जलाएँ, जिन अर्चा का फल शुभकार।।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाने, अर्घ्य चढ़ाते महति महान।
'विशद' भाव से पद्म प्रभु का, आज यहाँ करते गुणगान।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य का अर्घ्य बनाए, पाने अनर्घ्य पद आए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

!! श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः !!

[deX

श्री पार्श्वनाथ विधान

माण्डला

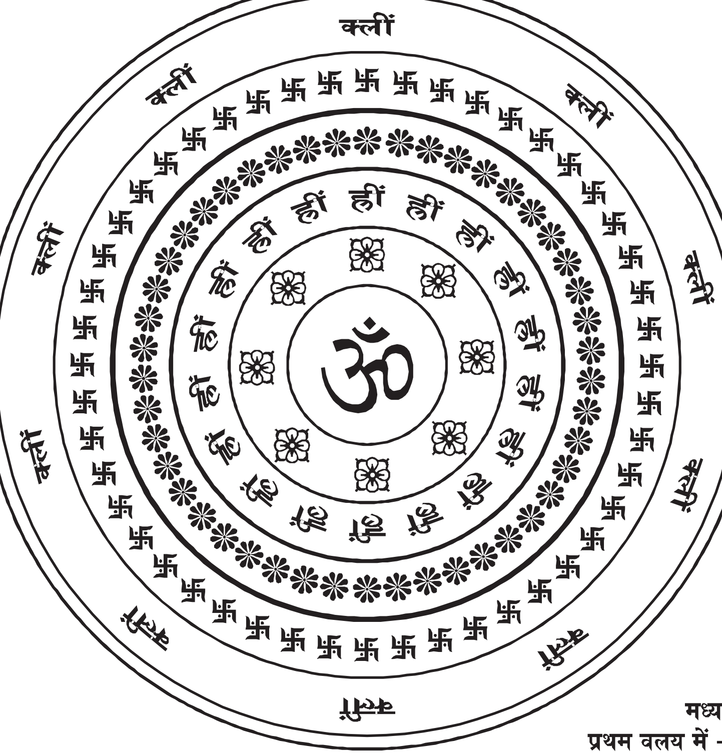

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय में – 8 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 18 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 46 अर्घ्य
चतुर्थ वलय में – 48 अर्घ्य
पंचम वलय में – 10 अर्घ्य
कुल 130 अर्घ्य

रचयिता :
प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य
श्री 108 विशदसागर जी महाराज

श्री पार्श्वनाथ स्तवन

दोहा - अहिच्छत्र में पार्श्व जिन, पाए केवल ज्ञान।
भाव सहित उनका यहाँ, करते हम गुणगान।।

(शम्भू-छन्द)

हे पार्श्वनाथ करुणा निधान!, उपसर्ग विजेता तीर्थंकर।
हे परम ब्रह्म हे कर्मजयी!, हे मोक्ष प्रदाता शिवशंकर।।
हम नमन करें तव चरणों में, शुभ भावों से गुणगान करें।
स्वातम रस परमानन्दमयी, सुज्ञान सुधा का पान करें।। 1।।

वैशाख कृष्ण द्वितिया तिथि को, वामा के गर्भ पधारे थे।
श्री आदि देवियों ने आकर, माता के चरण पखारे थे।।
शुभ पौष वदी ग्यारस तिथि को, श्री पार्श्वनाथ ने जन्म लिया।
तब मेरु सुदर्शन के ऊपर, इन्द्रों ने शुभ अभिषेक किया।। 2।।

वह धन्य घड़ी थी धन्य दिवस, हो गई बनारस शुभ नगरी।
श्री अश्वसेन जी धन्य हुए, हो गई धन्य जनता सगरी।।
नौ हाथ उच्च तन था प्रभु का, शुभ हरितवर्ण जो पाये थे।
सौ वर्ष आयु पाने वाले, पग नाग चिन्ह प्रगटाये थे।। 3।।

तिथि पौषवदी एकादशि को, उत्तम संयम जिनवर धारे।
देवों ने हर्षित होकर के, प्रभुवर के बोले जयकारे।।
वन में जाकर प्रभु योग धरा, तन से ममत्व को त्याग किए।
निज आत्म सुधारस को पाया, निज से निज का ही ध्यान किए।।4।।

जब क्षपक श्रेणी पर चढ़े आप, घाती कर्मों का नाश किया।
श्री चैत्र कृष्ण की तिथि चौथ, प्रभु केवलज्ञान प्रकाश किया।।
शुभ ज्ञान लता फैली जग में, भव्यों को शुभ संदेश दिया।
श्रावण शुक्ल सप्तमी को प्रभु ने, मोक्ष महल को वरण किया।।5।।

दोहा - पार्श्वनाथ भगवान की, महिमा अगम अपार।
अतः भक्ति करते 'विशद', जिन पद बारम्बार।।

।। इत्याशीर्वादः।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री पार्श्वनाथ जिन पूजन (शनिवार-रविवार)

स्थापना

(सखी छन्द)

जय उपसर्गों पर पाए, वे पार्श्वनाथ कहलाए।
जिन की महिमा जग गाए, हम आह्वानन् को आए।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

अर्घ (शम्भू छन्द)

क्षीरोदधि का पय सम जल प्रभु, धारा देने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

मलयागिर चन्दन केसर घिस, चरण चढ़ाने लाए है।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय सुख पाने को अक्षत, पुञ्ज चढ़ाने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरतरु के यह सुमन मनोहर, नाथ चढ़ाने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

घृत के यह नैवेद्य सरस शुभ, ताजे नाथ बनाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

गौघृत भर कंचन दीपक में, दीपक ज्योति जलाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कृष्णागरू की धूप बनाकर, अग्नी बीच जलाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपारी, थाल में श्रीफल लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत आदिक से, हम यह अर्घ्य बनाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक के अर्घ्य

(पद्धरि-छन्द)

वैसाख कृष्ण द्वितिया प्रभू, पाए गर्भ कल्याण।
चय हो अच्युत स्वर्ग से, भूपर किए प्रयाण।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, जन्मे पारस नाथ।
सुर नरेन्द्र देवेन्द्र सब, चरण झुकाए माथ।।2।।

ॐ ह्रीं पौषबदी ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, छोड़ दिया परिवार।
संयम धारण कर बने, पार्श्व प्रभू अनगार।।3।।

ॐ ह्रीं पौषबदी ग्यारस तपकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत कृष्ण वदि चौथ को, पाए केवल ज्ञान।
समवशरण रचना किए, आके देव प्रधान।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, करके आतम ध्यान।
कर्म नाश करके प्रभू, पाए पद निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - ध्यान लगाया आपने, जीते सब उपसर्ग।
गुण माला गाते विशद, पाने हम अपवर्ग।।

(राधेश्याम छन्द)

इन्द्र नरेन्द्र महेन्द्र सुरेन्द्र, गणेन्द्र सुमहिमा गाते हैं।
जिनवर के पञ्च कल्याणक में, खुश हो जयकार लगाते हैं।।1।।
जब गर्भागम में प्रभु आते, तब रत्न वृष्टि करते भारी।
यह तीर्थंकर प्रकृति का फल, इस जग में गाया शुभकारी।।2।।
जब जन्म कल्याणक होता है, तब यशोगान सुर करते हैं।
तीनों लोकों के जीव सभी, उस समय भाव शुभ करत हैं।।3।।
इस जग में रहकर के स्वामी, इस जग में न्यारे रहते हैं।
सबसे रहते हैं वह विरक्त, सब उनको अपना कहते है।। 4।।
गुणगान करें सब जीव सदा, यह पुण्य की ही बलिहारी है।
जो उभय लोक में जीवों को, होता शुभ मंगलकारी है।। 5।।
सब कर्म नाश करके स्वामी, मुक्ती पथ पर बढ़ जाते हैं।
है शिवनगरी में सिद्धशिला, जिस पर निज धाम बनाते हैं।।6।।

दोहा - यह संसार असार है, जान सके ना नाथ।
आज ज्ञान हमको हुआ, अतः झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - भक्त कई तारे प्रभू, आई हमारी बार।
पास बुलालो शीघ्र ही, अब ना करो अवार।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं।।

प्रथम वलयः

दोहा - पार्श्वनाथ जिन ने किए, आठों कर्म विनाश।
पुष्पांजलि करते विशद, हो कर्मों का नाश।।

(अथ प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अष्ट कर्म विनाशक जिन के अर्घ्य

(पद्धड़ि छन्द)

प्रभु ज्ञानावरणी कर्म नाश, फिर करें ज्ञान केवल प्रकाश।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।1।।

ॐ ह्रीं केवल ज्ञान गुण सहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिन कर्म दर्शनावरण नाश, प्रभु करें दर्श क्षायिक प्रकाश।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।2।।

ॐ ह्रीं केवलदर्शन गुण सहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जब करें वेदनीय का विनाश, गुण अव्याबाध में करें वास।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।3।।

ॐ ह्रीं अव्याबाध गुण सहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु मोह कर्म से रहे हीन, जो सुखानन्त में रहें लीन।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्त सुख गुण सहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जिन आयु कर्म का कर विनाश, अवगाहन गुण में करें वास।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।5।।

ॐ ह्रीं अवगाहनत्व गुण सहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु नाम कर्म करते विनाश, सूक्ष्मत्व सुगुण करते प्रकाश।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।6।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्व गुण सहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना गोत्र कर्म का रहा काम, गुण पाए अगुरुलघु रहा नाम।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।7।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्व गुण सहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु अन्तराय करके विनाश, जिन वीर्यानन्त में करें वास।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।।8।।

ॐ ह्रीं वीर्यानन्त गुण सहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा - आठों कर्म विनाश कर, गुण प्रगटाए आठ।
पार्श्व प्रभु के भक्त जन, पाते ऊँचे ठाठ।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्म विनाशकाय तथैवकर्म नाशन शक्ति प्रदाय सम्यक्त्वादि प्रमुख अष्ट सिद्धगुण समन्विताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा - तीर्थंकर पद प्राप्त कर, हुए आप निर्दोष।
शिव पद के राही बने, गुण अनन्त के कोष।।

(अथ द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अष्टादश दोष रहित जिन के अर्घ्य

(तोटक-छन्द)

प्रभु पार्श्वनाथ जिनराज भये, तव क्षुधा रोग को पूर्ण क्षये।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।।1।।

ॐ ह्रीं क्षुधा महादोष रहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तृषा दोष का नाश किए, जिन केवल ज्ञान प्रकाश किए।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।।2।।

ॐ ह्रीं तृषा महादोष रहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भय दोष महा दुखदाय रहा, इसको नाशे प्रभु पूर्ण अहा।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।।3।।

ॐ ह्रीं भय महादोष रहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता में चित्त मलीन रहे, यह दोष प्रभू को नहीं रहे।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।।4।।

ॐ ह्रीं चिंता महादोष रहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जन्म दोष के नाशक हैं, जिन चेतन सुगुण प्रकाशक हैं।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।।5।।

ॐ ह्रीं जन्म महादोष रहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जरा दोष को दूर किए, निज चेतन का आनन्द लिए।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।।6।।

ॐ ह्रीं जरा महादोष रहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है राग आग सम दोष महाँ, जिनवर को वह भी रहे कहाँ।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।।7।।

ॐ ह्रीं राग महादोष रहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह दोष का घात करें, जो कर्म शत्रु को मात करें।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।।8।।

ॐ ह्रीं मोह महादोष रहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मृत्यु के जयवान कहे, जिन अजर अमर भगवान रहे।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।।9।।

ॐ ह्रीं मृत्यु महादोष रहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके ना तन से स्वेद बहे, निर्दोष जिनेश्वर आप कहे।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।। 10।।

ॐ ह्रीं स्वेद महादोष रहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके ना खेद विषाद रहा, ऐसे जिन हैं जगपूज्य अहा।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।। 11।।

ॐ ह्रीं खेद महादोष रहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो आप महा मद हीन प्रभो !, निज गुण में रहते लीन विभो।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।। 12।।

ॐ ह्रीं मद महादोष रहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है शोक दोष का काम नहीं, प्रभु रहें जहाँ हों पूज्य वहीं।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।। 13।।

ॐ ह्रीं शोक महादोष रहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु विस्मय दोष विनाशक हैं, निज में निज के ही शासक हैं।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।। 14।।

ॐ ह्रीं विस्मय महादोष रहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिन निद्रा दोष स्वयं नशते, जन-जन के उर में जा बसते।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।। 15।।

ॐ ह्रीं निद्रा महादोष रहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अरति दोष परिहार करें, निज के सारे जो दोष हरें।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।। 16।।

ॐ ह्रीं अरति महादोष रहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु द्वेष पूर्णतः आप नशे, फिर सिद्ध शिला पर आप बसे।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।। 17।।

ॐ ह्रीं द्वेष महादोष रहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु रोग दोष का नाश किए, फिर निज स्वभाव में वास किए।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।। 18।।

ॐ ह्रीं रोग महादोष रहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - दोष अठारह का प्रभु, करके पूर्ण विनाश।
कर्म घातियाँ नाश कर, कीन्हें ज्ञान प्रकाश।।

ॐ ह्रीं अष्टादश महादोष रहिताय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

तृतीय वलय

दोहा - छियालिस पाये मूलगुण, पार्श्वनाथ भगवान।
तव गुण गाने के लिए, करें आपका ध्यान।।

(अथ तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जन्म के दस अतिशय

(चौपाई)

स्वेद रहित तन पाने वाले, तीर्थंकर जिन रहे निराले।
पार्श्व प्रभू की महिमा गाते, अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाते।। 1।।

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

निर्मल सहज प्रभु तन पावें, जो मल मूत्र कभी ना जावें।
पार्श्व प्रभू की महिमा गाते, अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाते।। 2।।

ॐ ह्रीं निहार रहित सहजातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

रुधिर स्वेत है जिनका भाई, वात्सल्य की है प्रभुताई।
पार्श्व प्रभु की महिमा गाते, अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाते।। 3।।

ॐ ह्रीं श्वेत रुधिर सहजातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

समचतुस्र संस्थान कहाए, सुन्दर जो सबके मन भाए।
पार्श्व प्रभू की महिमा गाते, अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाते।। 4।।

ॐ ह्रीं समचतुष्क संस्थान सहजातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

श्रेष्ठ संहनन पावन पाए, वज्रवृषभ नाराच कहाए।
पार्श्व प्रभू की महिमा गाते, अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाते।। 5।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मन मोहक है रूप सुहाना, जन-जन का मन हरे सुजाना।
पार्श्व प्रभू की महिमा गाते, अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाते।। 6।।

ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

रहा सुगन्धित तन मनहारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी।
पार्श्व प्रभू की महिमा गाते, अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाते।। 7।।

ॐ ह्रीं सुगन्धित तन सहजातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

सहस्र आठ शुभ लक्षण धारी, तीर्थंकर जिन हैं अविकारी।
पार्श्व प्रभू की महिमा गाते, अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाते।। 8।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट शुभ लक्षण सहजातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

बल अनन्त के धारी गाए, जन्म का अतिशय प्रभु जी पाए।
पार्श्व प्रभू की महिमा गाते, अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाते।। 9।।

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

प्रिय हित वचन मधुर शुभकारी, प्रभू बोलते विस्मयकारी।
पार्श्व प्रभू की महिमा गाते, अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाते।। 10।।

ॐ ह्रीं हितमित प्रिय वचन सहजातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

केवलज्ञान के दस अतिशय के अर्घ्य

(सखी-छन्द)

सौ योजन सुभिक्ष हो भाई, है जिनवर की प्रभुताई।
प्रभु पार्श्वनाथ शिवगामी, अतिशय ये पाए नामी।। 11।।

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टूय सूभिक्षत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु होते गगन विहारी, इस जग में मंगलकारी।
प्रभु पार्श्वनाथ शिवगामी, अतिशय ये पाए नामी।। 12।।

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षयजातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु अदया भाव नशाते, शुभ दया भाव प्रगटाते।
प्रभु पार्श्वनाथ शिवगामी, अतिशय ये पाए नामी।। 13।।

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षयजातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

हैं कवलाहार के त्यागी, निज चेतन के अनुरागी।
प्रभु पार्श्वनाथ शिवगामी, अतिशय ये पाए नामी।। 14।।

ॐ ह्रीं कवलाहाराभाव घातिक्षयजातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

उपसर्ग रहित जिन स्वामी, होते हैं शिवपथ गामी।
प्रभु पार्श्वनाथ शिवगामी, अतिशय ये पाए नामी।। 15।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभावघातिक्षयजातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

हो चतुर्दिशा से भाई, जिनका दर्शन सुखदायी।
प्रभु पार्श्वनाथ शिवगामी, अतिशय ये पाए नामी।। 16।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

प्रभु विशद ज्ञान शुभ पाए, जिन विद्येश्वर कहलाए।
प्रभु पार्श्वनाथ शिवगामी, अतिशय ये पाए नामी।। 17।।

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वरत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु छाया रहित निराले, हैं मूर्तिमान तन वाले।
प्रभु पार्श्वनाथ शिवगामी, अतिशय ये पाए नामी।। 18।।

ॐ ह्रीं छाया रहित घातिक्षयजातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नहि नयनों में टिमकारी, नाशा दृष्टी है प्यारी।
प्रभु पार्श्वनाथ शिवगामी, अतिशय ये पाए नामी।। 19।।

ॐ ह्रीं अक्षस्पंद रहित घातिक्षयजातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नख केश ना वृद्धी पाते, ज्यों के त्यों ही रह जाते।
प्रभु पार्श्वनाथ शिवगामी, अतिशय ये पाए नामी।। 20।।

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देवोपुनीत चौदह अतिशय के अर्घ्य

(भुजंगप्रयात-छन्द)

है अर्ध मागधी भाषा, अतिशय देवों का खासा।
गुण पार्श्व प्रभू के गाते, पद सादर शीश झुकाते।। 21।।

ॐ ह्रीं अर्धमागधी भाषा देवोपुनीतातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सब जीव मित्रता पावें, अतिशय जिनवर प्रगटावें।
गुण पार्श्व प्रभू के गाते, पद सादर शीश झुकाते।। 22।।

ॐ ह्रीं सर्व मैत्री भाव देवोपुनीतातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

निर्मल हों दशों दिशाएँ, जिन देव जहाँ पर जाएँ।
गुण पार्श्व प्रभू के गाते, पद सादर शीश झुकाते ।। 23 ।।

ॐ ह्रीं सर्व दिशा निर्मलत्व देवोपुनीतातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

षट् ऋतु के सुमन खिलाते, जिन पर ऋषि आते जाते।
गुण पार्श्व प्रभू के गाते, पद सादर शीश झुकाते ।। 24 ।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरु देवोपुनीतातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्व.।

भू रत्नमयी हो जावे, दर्पण सम शोभा पावे।
गुण पार्श्व प्रभू के गाते पद सादर शीश झुकाते ।। 25 ।।

ॐ ह्रीं आदर्श तल प्रतिमा रत्नमही देवोपुनीतातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

हो गगन सुनिर्मल भाई, ज्यों शरद ऋतू हो आई।
गुण पार्श्व प्रभू के गाते पद सादर शीश झुकाते ।। 26 ।।

ॐ ह्रीं शरदकाल वन्निर्मल गगन देवोपुनीतातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

(भुजंग प्रयात-छन्द)

चले श्रेष्ठ सुरभित पवन सौख्यदायी, प्रभु के चरण की ये महिमा बताई।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी, प्रभु जी कहाते हैं अतिशय के धारी ।। 27 ।।

ॐ ह्रीं सुगन्धित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपुनीतातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

परम श्रेष्ठ आनन्द पाते हैं प्राणी, ये अतिशय भी होता कहे जैनवाणी।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी, प्रभु जी कहाते हैं अतिशय के धारी ।। 28 ।।

ॐ ह्रीं सर्वानन्दकारक देवोपुनीतातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

हो भू स्वच्छ निर्मल परम सौख्यदायी, रहे धूल कंटक जरा भी ना भाई।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी, प्रभु जी कहाते हैं अतिशय के धारी ।। 29 ।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपुनीतातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

करें देव गंधोदक की श्रेष्ठ वृष्टि, हो आनन्दमय सर्वदिशा सर्व सृष्टि।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी, प्रभु जी कहाते हैं अतिशय के धारी ।। 30 ।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृत गंधोदक वृष्टि देवोपुनीतातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चरण तल कमल देव रचते है भाई, दिखे श्रेष्ठ अनुपम परम सौख्यदायी।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी, प्रभु जी कहाते हैं अतिशय के धारी ।। 31 ।।

ॐ ह्रीं चरणकमलतल रचित स्वर्ण कमल देवोपुनीतातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

करे देव जय घोष आके निराले, चारों निकायों के खुश होने वाले।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी, प्रभु जी कहाते हैं अतिशय के धारी ।। 32 ।।

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपुनीतातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

धरम चक्र यक्षेन्द्र सिर पे सम्हाले, जो खुश होके चऊदिश में आगे ही चाले।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी, प्रभु जी कहाते हैं अतिशय के धारी ।। 33 ।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्र चतुष्टय देवोपुनीतातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जो मंगलमयी द्रव्य हैं अष्ट भाई, ध्वजा छत्र कलशादि हैं सौख्यदायी।
अतिशय ये देवोंकृत हैं सौख्यकारी, प्रभु जी कहाते हैं अतिशय के धारी ।। 34 ।।

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपुनीतातिशय धारक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय के अर्घ्य

(सखी-छन्द)

प्रभु ज्ञानावरण नशाते, फिर केवलज्ञान जगाते।
हम वन्दन करने आए, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए ।। 35 ।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञान गुण प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु कर्म दर्शनावरणी, नाशे हैं भव से तरणी।
हम वन्दन करने आए, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए ।। 36 ।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन गुण प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हैं मोह कर्म के नाशी, जिन सुखानन्त प्रतिभासी।
हम वन्दन करने आए, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए ।। 37 ।।

ॐ ह्रीं अनन्तसुख गुण प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्रभु अन्तराय को नाशे, बलवीर्य अनन्त प्रकाशे।
हम वन्दन करने आए, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए ।। 38 ।।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्य गुण प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य के अर्घ्य

(आडिल्य छन्द)

प्रातिहार्य सुर वृक्ष प्रथम जिन पाए हैं, मरकत मणि सम जन-जन के मन भाए हैं।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है, सारे जग में अतिशय जो शुभकार है।। 39।।

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत्प्रातिहार्य गुण मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

पुष्प वृष्टि कर देव सभी हर्षाए हैं, तीर्थंकर की महिमा जो दिखलाए हैं।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है, सारे जग में अतिशय जो शुभकार है।।40।।

ॐ ह्रीं सुर पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य गुण मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चौंसठ चँवर ढौरने वाले देव हैं, तीर्थंकर प्रकृति पाते जिनदेव हैं।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है, सारे जग में अतिशय जो शुभकार है।।41।।

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठि चामर सत्प्रातिहार्य गुण मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कोटि सूर्य सम भामण्डल की कांति है, जिन चरणों में मिटती मन की भ्रांति है।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है, सारे जग में अतिशय जो शुभकार है।।42।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्य गुण मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

देव दुन्दुभी बजती मंगलकार है, जिन महिमा का मानो यह उपहार है।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है, सारे जग में अतिशय जो शुभकार है।।43।।

ॐ ह्रीं देव दुन्दुभी सत्प्रातिहार्य गुण मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

तीन छत्र सिर के ऊपर दिखलाए हैं, तीन लोक के प्रभु हैं यह बतलाए हैं।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है, सारे जग में अतिशय जो शुभकार है।।44।।

ॐ ह्रीं छत्र त्रय सत्प्रातिहार्य गुण मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दिव्य ध्वनि तिय कालों में खिरती अहा, प्रातिहार्य यह भी इक जिनवर का रहा।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है, सारे जग में अतिशय जो शुभकार है।।45।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य गुण मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सिंहासन पर जिन महिमा दिखलाए हैं, प्रातिहार्य जिनवर के अनुपम गाए हैं।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है, सारे जग में अतिशय जो शुभकार है।।46।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य गुण मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चौंतिस अतिशय प्रातिहार्य वसु पाए हैं, अनन्त चतुष्टय जिनानन्त प्रगटाए हैं।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है, सारे जग में अतिशय जो शुभकार है।।47।।

ॐ ह्रीं षट् चत्त्वारिंशद् गुण मण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वा.।

चतुर्थ वलयः

दोहा - कष्टों में जीते विशद, उनके दुख हों दूर।
पार्श्व प्रभू को पूजते, मिले सौख्य भरपूर।।

(अथ चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

संकट निवारक 48 अर्घ्य

।। चौपाई ।।

अति वृष्टी जग में दुखदाई, मरें बाढ़ से प्राणी भाई।
तुम्हें भक्त जो पूज रचावें, अतिवृष्टि से मुक्ती पावें।।1।।

ॐ ह्रीं अति वृष्टि उपद्रव नाशक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अनावृष्टि में मेघ ना बरसें, जल को जग के प्राणी तरसें।
तुम्हें भक्त जो पूज रचावें, अनावृष्टि से मुक्ती पावें।।2।।

ॐ ह्रीं अनावृष्टि उपद्रव नाशक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हों दुर्भिक्ष अकाल निराले, जीवों को दुख देने वाले।
तुम्हें भक्त जो पूज रचावें, दुर्भिक्षों से मुक्ती पावें।।3।।

ॐ ह्रीं दुर्भिक्षोपद्रव नाशक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चोर लुटेरे धन ले जावें, प्राणी हा-हाकार मचावें।
पार्श्व प्रभू पद पूँज रचाते, बाधाओं से मुक्ती पाते।।4।।

ॐ ह्रीं चोर लुटंकादि नाशक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छापा टैक्स आदि के द्वारा, अधिकारी धन लूटें सारा।
पार्श्व प्रभू पद पूज रचाओ, आपत्ती से मुक्ती पाओ।।5।।

ॐ ह्रीं आयकरादिराज्य भयोपद्रव नाशक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं नि.स्वा.।

श्रम करके भी धन ना पायें, जिनको भी दारिद्र सतायें।
पार्श्व प्रभु को पूजा रचावें, सब दरिद्र से मुक्ती पावें।।6।।

ॐ ह्रीं दारिद्रदुःख नाशक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग ज्वरादिक जिन्हें सताए, औषधि भी कोइ काम ना आए।
रोग नाश होते दुखदाई, पूजा करने से वह भाई।। 7।।

ॐ ह्रीं ज्वरमूल रोगादि नाशक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कुष्ट कामलादिक दुखदाई, रोग जलोदर होवे भाई।
इन सबसे भी मुक्ती पाएँ, पार्श्वनाथ को पूज रचाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं कामला कुष्ठ जलोदर भंगदरादिव्याधि विनाशक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्र रोग से जो दुख पावे, औषधि कोई काम ना आवे।
पार्श्वनाथ को पूजें भाई, संकट में प्रभु बनें सहाई।।9।।

ॐ ह्रीं नाना विध नेत्र रोग विनाशक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हृदय रोग से पीड़ा पाते, धन खर्चा कर भी मर जाते।
पूजे जिनवर को जो प्राणी, रोग से मुक्ती पावें ज्ञानी।।10।।

ॐ ह्रीं हृदय रोग पीड़ा नाशक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कैन्सरादि प्राणों के घाती, और कोई क्षय रोग की भाँति।
इनसे प्राणी मुक्ती पावें, पार्श्व प्रभु को पूज रचावें।।11।।

ॐ ह्रीं प्राणघाति कैंसर महाव्याधि विनाशक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कुरूपता से दुख पाते, चर्म रोग भी जिन्हें सताते।
जिन पूजा से मुक्ती पाते, सुन्दर रूप जीव प्रगटाते।।12।।

ॐ ह्रीं कुरूपादि कष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(भुजंत प्रयात-छन्द)

स्त्री स्वजन आदि प्रिय जो कहाए, दुखद वियोग उनका कदाचित्त् हो जाए।
श्री पार्श्व जिन की जो पूजा रचाए, अतिशीघ्र मुक्ती इस संकट से पाए।।13।।

ॐ ह्रीं प्राणघातक इष्ट वियोग दु:ख नाशक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत्रू सम भार्या स्वजनादि होवें, इनसे वियोग की चिंता में रोवें।
श्री पार्श्व जिन की जो पूजा रचाएँ, अतिशीघ्र मुक्ती इस संकट से पाएँ।।14।।

ॐ ह्रीं अनिष्ट संयोग महादु:ख निवारक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यापार या घर की चिन्ता सताए, पीड़ित हो मन में कोइ आकुलता आए।
श्री पार्श्व जिनकी जो पूजा रचाए, अतिशीघ्र मुक्ती इस संकट से पाए।।15।।

ॐ ह्रीं सर्व मानसिकता विनाशक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों से प्रिय बोले पर को ना भावें, जिह्वा के रोगादिक कोई सतावें।
श्री पार्श्व जिन की जो पूजा रचाए, अतिशीघ्र मुक्ती इस संकट से पाए।।16।।

ॐ ह्रीं सर्व वाचनिक कष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायिक दुखों से जो प्राणी सताए, नाना विध कष्टों को जो ना सह पाए।
श्री पार्श्व जिन की जो पूजा रचाए, अतिशीघ्र मुक्ती इस संकट से पाए।।17।।

ॐ ह्रीं नाना विध कायिककष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायुयान में भी दुर्घटना हो जावे, मरणान्त पीड़ा भी आके सतावें।
श्री पार्श्व जिन की जो पूजा रचाए, अतिशीघ्र मुक्ती इस संकट से पाए।।18।।

ॐ ह्रीं सर्ववायुयान दुर्घटनाकष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो रेलयात्रा की बाधा सताए, दुर्घटना आदिक की बाधा हो जाए।
श्री पार्श्व जिन की जो पूजा रचाए, अतिशीघ्र मुक्ती इस संकट से पाए।।19।।

ॐ ह्रीं सर्व लोहपथ गामिनी दुर्घटनादि भय निवारक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बस कार ट्रक आदि यात्रा में जावे, दुर्घटना आदिक का भय जो सतावे।
श्री पार्श्व जिन की जो पूजा रचाए, अतिशीघ्र मुक्ती इस संकट से पाए।।20।।

ॐ ह्रीं सर्वचतुष्चक्रिका वाहन दुर्घटनादि संकट मोचनाय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी-छन्द)

त्रय चक्री वाहन भाई, टकरा जावे दुखदायी।
जो पार्श्व प्रभु को ध्यायें, उन के संकट कट जायें।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वत्रिचक्रिका दुर्घटनादि कष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो चक्री वाहन जानो, टक्कर खा जावें मानो।
वे इससे भी बच जावें, जो प्रभु पद पूज रचावें।।22।।

ॐ ह्रीं सर्वद्धिचक्रिका दुर्घटनादि कष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूकम्प आदि की भारी, दुर्घटना हो दुखकारी।
प्रकृति प्रकोप ना आए, जो प्रभु पद पूज रचाए।।23।।

ॐ ह्रीं भूकम्पदुर्घटना निवारक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आकस्मिक जल बढ़ जाए, सरिता का पूर सताए।
इससे प्राणी बच जाते, जो प्रभु पद पूज रचाते।। 24।।

ॐ ह्रीं नदीपूर प्रवाह संकट मोचनाय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो नहर समुद्र सरिताएँ, इसमें प्राणी गिर जाएँ।
प्रभु नाम मंत्र जो ध्याते, इस संकट से बच जाते।। 25।।

ॐ ह्रीं नदी समुद्रादिपात कष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिच्छू सर्पादि सताएँ, जब वैद्य भी काम ना आएँ।
तब पार्श्व प्रभू की भक्ती, दुख से दिलवाए मुक्ती।। 26।।

ॐ ह्रीं वृश्चिक सर्पादिविषधर विषनिर्णाशनाय श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंह व्याघ्र क्रूर अष्टापद, हिंसक प्राणी की आपद।
जो प्रभु की पूज रचाए, उसकी क्षण में नश जाए।। 27।।

ॐ ह्रीं अष्टापद व्याघ्र सिंहादिक्रूर हिंसकजंतु भय निवारक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गज अश्व बैल भैंसादी, सींगों वाले मैढ़ादी।
जब मारें भय दिखलाएँ, निर्भय हो जिनको ध्याएँ।। 28।।

ॐ ह्रीं गजाश्वगोवृषभादि प्राणी गण भय विनाशक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल-छन्द)

हो क्षरण विषाक्त गैसादी, जिससे हो आधी-व्याधी।
नर पशु के संकट सारे, जिन भक्ती शीघ्र निवारे।। 29।।

ॐ ह्रीं विषाक्तवाष्पक्षरणादि संकटनिवारक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो गैस रसोई वाले, रिसते फट जाएँ निराले।
जो जिन की पूज रचाते, उनके संकट टल जाते।। 30।।

ॐ ह्रीं वाष्प चुल्लिकादि दुर्घटना कष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बम अकस्मात फट जावे, या संकट कोई आवे।
जो जिन पद पूज रचाए, ना संकट उसे सताए।। 31।।

ॐ ह्रीं बम विस्फोटकादि आकस्मिक संकट निवारक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतंकवादि जन द्वारा, भय नशे आकस्मिक सारा।
जो पार्श्व प्रभु को ध्याएँ, उनके संकट कट जाएँ।। 32।।

ॐ ह्रीं आतंकवादिजनकृत आकस्मिक मरणादिभय विनाशक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है सुता जन्म भयकारी, डर है दहेज का भारी।
वे नर निर्भय हो जावें, जो पार्श्व प्रभु को ध्यावें।। 33।।

ॐ ह्रीं बालिका जन्म कष्ट निवारक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन मन का कष्ट सताए, विष खा मरने को जाए।
तरु कूप गिरे बच जाए, जो मन से प्रभु को ध्याये।। 34।।

ॐ ह्रीं कूप नदी पतन विषादि भक्षण निमित्तापघात भाव निवारण समर्थ श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना विधि दुर्घटनाएँ, जिन्हें मृत्यु अकाल सताएँ।
वे भी प्राणी बच जाते, जो पार्श्व प्रभु को ध्याते।। 35।।

ॐ ह्रीं नानाविध दुर्घटनादिनाकाल मृत्यु निवारक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यन्तर पिशाच भूतादी, शाकिन डाकिन ग्रह आदी।
इनकी बाधा हो भारी, अर्चा कर नसती सारी।। 36।।

ॐ ह्रीं भूतपिशाचव्यंतरादि बाधा निवारक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जोगीरासा-छन्द)

किंचित् श्रम कर मिले सफलता, सब व्यापार सफल हो।
पुण्य उदय से धन वैभव पा, जीवन भी मंगल हो।।
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी।। 37।।

ॐ ह्रीं बहुविध व्यापार सफलता कारक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गृह लक्ष्मी अनुकूल रहे जो, पति की हो अनुगामी।
पतिव्रता हो स्वयं के पति को, माने अपना स्वामी।।
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी।। 38।।

ॐ ह्रीं उभय कुल कमल विकासन धर्म पत्नि प्रापक पुण्य प्रदायक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुत्र पौत्र संतति चलती है, होते आज्ञाकारी।
मात पिता की कीर्ति बढ़ाते, होते हैं उपकारी।।
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी।।39।।

ॐ ह्रीं पुत्र पौत्रादिकुल दीपक संतति प्रापकपुण्यदायक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीर्घ आयु पाते हैं प्राणी, शुभ भावों के धारी।
इन्द्र नरेन्द्र सुपद पाते हैं, पर भव मंगलकारी।।
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी।।40।।

ॐ ह्रीं दीर्घायु प्रापक पुण्य प्रदायक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कीर्ति फैले चतुर्दिशा में, सद गुण पावें प्राणी।
रत्नत्रय जिन धर्म प्राप्त कर, बोलें मीठी वाणी।।
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी।।41।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिक कीर्ति सौरभ व्यापक पुण्य प्रदायक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राज्य मान्यता प्राप्त करें नर, जन-जन का मन मोहें।
गुण गाते सब उनके प्राणी, जो मंगल मय सोहें।।
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी।।42।।

ॐ ह्रीं राज्य मान्यतादिप्रशंसन गुणप्रापक पुण्य प्रदायक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग जन जिनकी आज्ञा पालें, ऐसी गरिमा पाते।
इन्द्रादिक सम वैभव पावें, जग जन महिमा गाते।।
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी।।43।।

ॐ ह्रीं आज्ञापालन विभव प्रदायक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आर्त्तादि दुर्ध्यान छोड़कर, अन्त समाधी पावें।
राग द्वेष मोहादि कषायों, के जो भाव नशावें।।
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी।।44।।

ॐ ह्रीं अन्त्यसमाधी मरण फल प्रदायक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण है, जग में मोक्ष प्रदायी।
निश्चय औ व्यवहार मार्ग में, कारण होवे भाई।।
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी।।45।।

ॐ ह्रीं व्यवहार निश्चय रत्नत्रय प्रदायक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमा आदि धर्मों को, धारण करने वाले।
शिव पथ के राही बनते हैं, जग में जीव निराले।।
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी।।46।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदश धर्म प्रदायक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श विशुद्धी आदिक सोलह, श्रेष्ठ भावना भाते।
तीर्थंकर पद की कारण हैं, इन में रुची बढ़ाते।।
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी।।47।।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धयादि सोलह कारण भावना फल प्रदायक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहिरातम अन्तर परमातम, जीव त्रिविध के गाये।
स्वपर भेद ज्ञानी मुनि बनकर, परमातम पद पाए।।
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी।।48।।

ॐ ह्रीं अन्तरात्म स्वरूपनिज शुद्धात्म ध्यानकारिपद प्रदायक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू-छन्द)

अतिवृष्टि अनावृष्टी आदिक, दुर्भिक्ष ज्वरादी दुखकारी।
भूकम्प दरिद्रादिक होवे या, तन में पीड़ा हो भारी।।
श्री पार्श्व नाथ की पूजा से, सारे संकट टल जाते हैं।
जो ऋद्धि वृद्धि समृद्धि पा, अपना सौभाग्य जगाते हैं।।

ॐ ह्रीं अति वृष्टि अनावृष्ट्यादि विविध संकट निवारक श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलय

दोहा - गणधर दश थे आपके, जग में मंगलकार।
पुष्पांजलि करते विशद, वन्दन कर शत्बार।।

(अथ पंचम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री पार्श्वनाथ जी के गणधर के अर्घ्य

(ताटंक छन्द)

पार्श्वनाथ जिन हुए 'स्वयंभू', प्रगटाए जब केवलज्ञान।
गणधर प्रथम स्वयंभू पाए, झेले दिव्य ध्वनि गुणवान।।
चरण कमल की अर्चा करने, में तत्पर जो रहे प्रधान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, उनका हम करते गुणगान।। 1।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू गणधर वंदित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हली' नाम के गणधर गाए, पार्श्वनाथ के जगत महान।
आतम ध्यान लगाने वाले, करते हैं निज का कल्याण।।
चरण कमल की अर्चा करने, में तत्पर जो रहे प्रधान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, उनका हम करते गुणगान।। 2।।

ॐ ह्रीं हली गणधर वंदित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनेन्द्र के चरण कमल में, नत होते जो प्रातः शाम।
विनय भाव से करें वन्दना, 'नतबल' रहा आपका नाम।।
चरण कमल की अर्चा करने, में तत्पर जो रहे प्रधान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, उनका हम करते गुणगान।। 3।।

ॐ ह्रीं नतबल गणधर वंदित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नील गगन में पार्श्व प्रभू के, दर्शन से हो गालित मद।
अर्चा करने वाले गणधर, पार्श्व प्रभु के 'नीलाङ्गद'।।
चरण कमल की अर्चा करने, में तत्पर जो रहे प्रधान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, उनका हम करते गुणगान।। 4।।

ॐ ह्रीं नीलाङ्गद गणधर वंदित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वप्रभू के गणधर पावन, 'महानील' है जिनका नाम।
चरण वन्दना करें भाव से, जिनके चरणों विशद प्रणाम।।
चरण कमल की अर्चा करने, में तत्पर जो रहे प्रधान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, उनका हम करते गुणगान।। 5।।

ॐ ह्रीं महानील गणधर वंदित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम पुरुष श्रद्धा के धारी, करते हैं जिनका अर्चन।
गणधर बनकर के 'पुरुषोत्तम', करें प्रभु पद अभिनन्दन।।
चरण कमल की अर्चा करने, में तत्पर जो रहे प्रधान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, उनका हम करते गुणगान।। 6।।

ॐ ह्रीं पुरुषोत्तम गणधर वंदित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपसर्गों में समताधारी, निज स्वरूप का करके ध्यान।
केवलज्ञानी हुए पार्श्व जिन, गणधर जिनके रहे 'भृनान'।।
चरण कमल की अर्चा करने, में तत्पर जो रहे प्रधान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, उनका हम करते गुणगान।। 7।।

ॐ ह्रीं भृनान गणधर वंदित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल सम्यक् दर्शन धारी, गणधर हैं 'सम्यक्त' महान।
पार्श्व प्रभु के भक्त बने जो, गणधर गुण रत्नों की खान।।
चरण कमल की अर्चा करने, में तत्पर जो रहे प्रधान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, उनका हम करते गुणगान।। 8।।

ॐ ह्रीं सम्यक्त गणधर वंदित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर बने 'देवगन' प्रभु के, प्रगटाए जो चारों ज्ञान।
जिन अर्चा करते हैं नित प्रति, पाने वीतराग विज्ञान।।
चरण कमल की अर्चा करने, में तत्पर जो रहे प्रधान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, उनका हम करते गुणगान।। 9।।

ॐ ह्रीं देवगन गणधर वंदित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय गोचर तन होता है, चेतन रहा इन्द्रियातीत।
गणी 'ज्ञानगोचर' जी रखने, वाले हुए आत्म से प्रीत।।
चरण कमल की अर्चा करने, में तत्पर जो रहे प्रधान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, उनका हम करते गुणगान।। 10।।

ॐ ह्रीं ज्ञानगोचर गणधर वंदित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - गणनायक गण के रहे, गणधर गुण की खान।
शिव पथ के राही बने, पाने पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं स्वयंभू आदिज्ञान गोचर पर्यन्त दश गणधर देव वंदित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा – काशी के रवि आप हैं, तीर्थराज की शान।
जयमाला गाते चरण, पार्श्वनाथ भगवान।।

चौपाई

जय-जय पार्श्वनाथ जिन स्वामी, हो स्वामी तुम अन्तर्यामी।
तुमने भेष दिगम्बर धारा, तुमसे कर्म शत्रु भी हारा।।
अश्वसेन वामा सुत प्यारे, काशी के तुम राज दुलारे।
तुमने पद युवराज का पाया, लेकिन तुम्हें नहीं वह भाया।।
गये सैर करने को वन में, मित्र सभी थे जिनके संग में।
गज की कीन्हें आप सवारी, घटना देखी अति दुखकारी।।
पंचाग्नी तप तपने वाला, तपसी देखा एक निराला।
नाग युगल जलते हैं भाई, हिंसक तप तेरा दुखदायी।।
तपसी ने ली हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।
नाग युगल को उसमें पाया, महामंत्र नवकार सुनाया।।
मरण किए पाताल सिधाए, धरणेन्द्र पद्मावती कहाए।
तपसी मरकर देव कहाया, संवर नाम देव ने पाया।।
पार्श्वनाथ जी दीक्षा पाए, वन में जाके ध्यान लगाए।
संवर देव वहाँ पर आया, उसके मन में वैर समाया।।
ओले शोले खूब गिराए, पत्थर पानी भी बरसाए।
प्रभु ने स्थिर ध्यान लगाया, देव की ना चल पाई माया।।
धरणेन्द्र पद्मावति तब आये, ऋद्धी से जो फण फैलाए।
प्रभु के ऊपर छत्र लगाया, संवर देव शरण में आया।।
प्रभु जी घाती कर्म नशाए, केवल ज्ञान तभी प्रगटाए।
समवशरण तब देव रचाए, अहिच्छत्र यह तीर्थ कहाए।।
पात्र केशरी यहाँ पे आए, शिष्य पाँच सौ साथ में लाए।
देवी एक वहाँ पर आई, मूर्ति के फण में जो भाई।।
जिसने शुभ श्लोक लिखाया, जैन धर्म का सार बताया।
वहाँ विद्वान दर्श को आए, जैन धर्म वह सब अपनाए।।

गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, मुक्ती पद पाए अभिरामी।
पूरे भारत में प्रतिमाएँ, चमत्कार हर जगह दिखाएँ।।
पार्श्व प्रभु के अतिशयकारी, तीर्थ बने कई हैं मनहारी।
बड़ा गाँव चँवलेश्वर जानो, विराट नगर नैनागिरी मानो।।
नागफणी ऐलोरा गाया, मक्सी महुआ क्षेत्र बताया।
ग्वालियर तीर्थ बिजौलिया भाई, बीजापुर जानो सुखदाई।।
तीर्थ अड़िंदा भी कहलाए, भरत सिन्धु जहँ स्वर्ग सिधाए।
'विशद' तीर्थ कई हैं शुभकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।

दोहा – अहिच्छत्र में पार्श्व जिन, पाए केवलज्ञान।
पूजा करते हम चरण, पाने पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि वृद्धि समृद्धि प्रदायक श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – जिन पद पूजें भाव से, पावें ऋद्धि समृद्धि।
जीवन में सुख शान्ति हो, होवे धन की वृद्धि।।

इत्याशीर्वाद।

"श्री पार्श्वनाथ जी की आरती"

(तर्ज : ॐ जय...)

ॐ जय पार्श्व प्रभो-स्वामी जय जय पार्श्व प्रभो।
तव चरणों में आरति, करते भक्त विभो।। ॐ जय...।।
जन्म लिए काशी नगरी में, जग जन हितकारी-2
अश्वसेन वामा माँ के सुत, नाग चिन्ह धारी।। ॐ जय...।।
युवा अवस्था में प्रभु तुमने, संयम धार लिया-2
धार दिगम्बर मुद्रा, निज का ध्यान किया।। ॐ जय...।।
वैर विचार कमठ ने आके, उपसर्ग किया भारी-2
समता रस में लीन हुए प्रभु, जिनवर अनगारी।। ॐ जय...।।
अहिच्छत्र में प्रभु जी तुमने, विशद ज्ञान पाया-2
सौ इन्द्रों ने प्रभु के, पद में सिरनाया।। ॐ जय...।।
भक्त आपके चरणों, आकर सिरनाते-2
भक्ति भाव से गीत प्रभु जी, चरणों में गाते।। ॐ जय...।।

श्री पार्श्वनाथ जी की आरती

तर्ज : जीवन है पानी की बूँद...

अहिच्छत्र में पार्श्व प्रभु , महिमा दिखलाए रे-।
आरति करने जिन चरणों में, हम सब आये रे।। टेक।।
स्वर्ग से चयकर जन्म लिए, काशी नगरी धन्य किए।
घर-घर में तब जले दिए, देव तभी जयकार किए।
अश्वसेन माँ वामा देवी, भाग्य जगाए रे।
आरति करने जिन चरणों में, हम सब आए रे...।। 1।।
वन में शैर को आप गये, अचरज देखे नये-नये।
तपसी से प्रभु यही कहे, जीवों ने कई कष्ट सहे।।
नाग और नागिन हो-हो, क्यों आप जलाए रे।
आरति करने जिन चरणों में, हम सब आये रे...।। 2।।
नागो को महामंत्र दिया, मन में प्रभु वैराग्य लिया।
संयम धारण आप किया, केशलुन्च निज हाथ किया।।
निज आतम का प्रभु, ध्यान लगाए रे।
आरति करने जिन चरणों में, हम सब आए रे...।। 3।।
जीव कमठ का तब आया, देख प्रभु को गुर्राया।
पत्थर पानी बरसाया, मन में भारी हर्षाया।।
धरणेन्द्र हो-हो पद्मावती, उपसर्ग नशाए रे।
आरति करने जिन चरणों में, हम सब आए रे...।। 4।।
प्रभु को केवल ज्ञान जगा, रहा कमठ तब ठगा-ठगा।
प्रभु पद में वह माथ लगा, मिथ्या का फिर भूत भगा।।
विशद कमठ हो-हो, मन में पछताए रे।
आरति करने जिन चरणों में, हम सब आए रे।। 5।।
अहिच्छत्र में पार्श्व प्रभु, महिमा दिखलाए रे।
आरति करने जिन चरणों में, हम सब आए रे।। टेक।।

श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा - चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर।
हरी भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर।।

(चौपाई)

जय-जय पार्श्वनाथ हितकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।
तुम हो तीर्थंकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए।।
जिनके गृह में जन्में स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।
देवों ने तब रहस रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया।।
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।
पंचाग्नि तप करने वाला, अज्ञानी था भोला भाला।।
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।
सर्प देख तपसी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया।।
नाग युगल मृत्यु को पाएँ, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम था देव ने पाया।।
प्रभु बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए।
पौष कृष्ण एकादशि पाए, अहीक्षेत्र में ध्यान लगाए।।
इक दिन देव वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले।।
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।
धरणेन्द्र पद्मावती आए, प्रभु के पद में शीश झुकाए।।
पद्मावती ने फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का छत्र लगाया भाई।।
चैत कृष्ण को चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई।
प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया।।
सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए।।
गणधर दश प्रभु के बतलाए, गणधर प्रथम स्वयं भू गाए।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण भद्र शुभ कूट बताए।।
योग निरोध प्रभु जी पाए, एक माह का ध्यान लगाए।
श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ति पाई।।

श्रावक प्रभु के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते।
भक्ती से जो ढोक लगाते, भोगी भोग संपदा पाते।।
पुत्रहीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई।
योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवसुख पाते।।
पूजा करते हैं नर-नारी, गीत भजन गाते मनहारी।
हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ।।
पार्श्व प्रभू के अतिशयकारी, तीर्थ बने कई हैं मनहारी।
'विशद' तीर्थ कई हैं शुभकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।

दोहा - पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार।।
सुख-शांती सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
'विशद' ज्ञान को प्राप्त कर, पावें शिव पद भोग।।

प्रशस्ति चौपाई

जम्बूद्वीप रहा शुभकार, भरत क्षेत्र जिसमें मनहार।
आर्यखण्ड में भारत देश, जिसमें गाया मध्य प्रदेश।। 1।।
जिला छतरपुर जिसमें भ्रात, ग्राम कुपी अनुपम विख्यात।
जहाँ थे सेठ भरोसे लाल, जिनकी महिमा रही विशाल।। 2।।
जिनके छोटे पुत्र का नाम, लोग बताते नाथूराम।
गृहणी इन्दर देवी नाम, सद्गृहस्थ रह करती काम।। 3।।
जिनके द्वितिय पुत्र रमेश, धर्म कार्य जिनका उद्देश्य।
गुरु विरागसागर महाराज, जिन पर करती दुनिया नाज।। 4।।
सम्वत् बीस सौ इक्कीस जान, द्वितिय चैतकृष्ण पहचान।।
चौदस को जन्मा शुभ लगाए, जिसकी महिमा रही विशाल।। 5।।
जाकर पहुँचे उनके पास, पूर्ण करो गुरु मेरी आस।
दीक्षा दो हमको गुरुदेव, भक्त चरण के बनें सदैव।। 6।।
मगसिर शुक्ल पंचमी जान, सम्वत् बीस सौ बासठ मान।
ऐलक दीक्षा धरे रमेश, बन गये श्रावक श्रेष्ठ विशेष।। 7।।
फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी वार, बीस सौ पैंसठ दिन शनिवार।
सिद्धक्षेत्र द्रोणागिर आन, पाया मुनिपद जहाँ प्रधान।। 8।।
मालपुरा में राजस्थान, आप बने आचार्य महान।
अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान, धर्मपुरा दिल्ली में आन।। 9।।
ज्येष्ठ कृष्ण दशमी सोमवार, विशद सिन्धु मुनि रचनाकार।
मुनि विशालसागर जी जान, के निमित्त से बना विधान।। 10।।
लघु धी से यह कीन्हा कार्य, भूल सुधार पढ़ें सब आर्य।
पढ़े सभी साधू निर्ग्रन्थ, श्रावकोपयोगी है यह ग्रन्थ।। 11।।
प्राप्त करें सब सम्यक् ज्ञान, पुण्य का भी जो रहा निधान।
गुरु आशीष से पूरा काम, हुआ हमारा है बस नाम।। 12।।

श्री चन्द्रप्रभ विधान

माण्डला

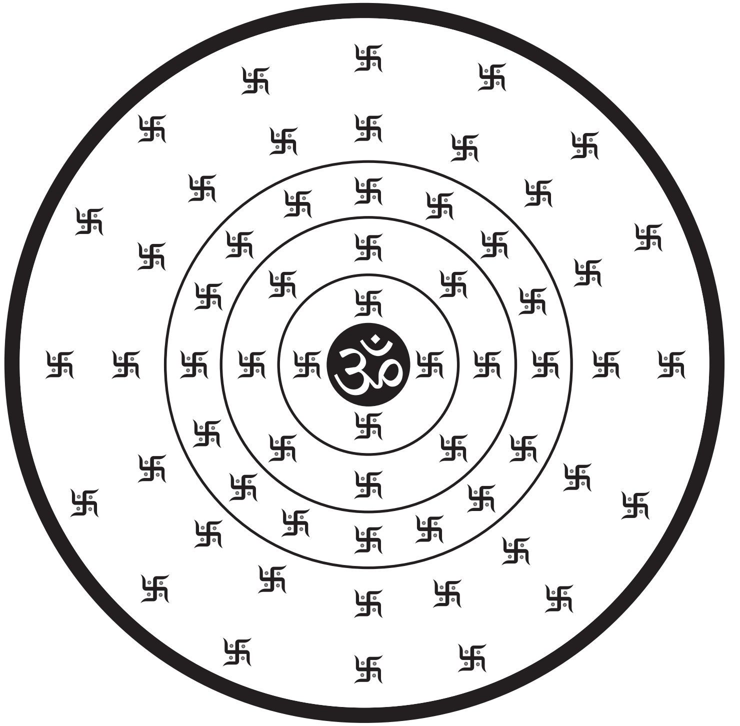

मध्य - ॐ
प्रथम वलय - 4
द्वितीय वलय - 8
तृतीय वलय - 16
चतुर्थ वलय - 32
कुल अर्घ्य - 60

रचयिता :
प. पू. क्षमामूर्ति 108
आचार्य श्री विशदसागर जी

श्री चन्द्रप्रभ स्तवन

चन्द्रप्रभः प्रभाधीशं, चन्द्रशेखर चन्दनम्।
चन्द्र लक्ष्म्यांकं चन्द्रांकं, चन्द्रबीजं नमोस्तु ते।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभः, श्रीं ह्रीं श्रीं कुरु कुरु स्वाहा।
इष्टसिद्धि महाऋद्धि, तुष्टिं पुष्टिं कुरु मम्।।
द्वादश सहस्र जपतो मंत्रः, वांछितार्थ फलप्रदः।
महंतं त्रिसंध्यं जपतः, सर्वाति व्याधि नाशनम्।।
सुरासुरेन्द्र सहितः, श्री पाण्डव नृपस्तुतः।
श्री चन्द्रप्रभः तीर्थेश, श्रियां चन्द्रो ज्वालां कुरु।।
श्री चन्द्रप्रभ विधयं, स्मृतामेय फलप्रदाः।
भवाब्धि व्याधि विध्वंस, दायिनीमेव रक्षदा।।
पवित्रं परमं ध्येयं, परमानंद दायकम्।
भुक्तिमुक्ति प्रदातारं, पठतां मंगल प्रदम्।।
ऋद्धिसिद्धि-महाबुद्धि, धृतिकीर्तिसुकांतिदम्।
मृत्युं जयं शिवात्मानं, जगदानंदनं जिनम्।।
सर्वकल्याण पूर्णेयं, जरामृत्युविवर्जितं।
अणिमार्द्धि महासिद्धि, र्लक्षजाप्येन चाप्नुयात्।।
हर्षदः कामदश्चेति, रिपुघ्नः सर्वसौख्यदः।
पातु नः परमानंदः, तत्क्षणं संस्तुति जिनः।।
तत्त्वरूपमिदं स्तोत्रम्, सर्वमांगल्य सिद्धिदम्।
त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं, नित्यं प्राप्नोति स श्रियम्।।
संसार सागरोत्तीर्ण, मोक्ष सौख्य पद पदम्।
नमामि चन्द्रप्रभ देवं, विशद धर्म प्रकाशकं।।

(इति चन्द्रप्रभ स्तोत्रम्)

श्री चन्द्रप्रभ जिन पूजन (सोमवार)

स्थापना

धवल रंग में शोभते चन्द्रप्रभ भगवान।
अर्चा करने को विशद, करते हैं आह्वान्।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(वेसरो-छन्द)

नीर भराया मंगलकारी, रोग जरादिक का परिहारी।
चन्द्र प्रभ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म मृत्यु विनाशनाय जलं नि. स्वाहा।

चन्दन यहाँ चढ़ाने लाए, भव सन्ताप नाश हो जाए।
चन्द्र प्रभ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं नि. स्वाहा।

अक्षत यहाँ चढ़ाते भाई, जो है अक्षय सुपद प्रदायी।
चन्द्र प्रभ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि. स्वाहा।

सुरभित पुष्प चढ़ाने लाए, काम रोग मेरा नश जाए।
चन्द्र प्रभ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं नि. स्वाहा।

शुभ नैवेद्य चढ़ा हर्षाएँ, क्षुधा रोग से मुक्ती पाएँ।
चन्द्र प्रभ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. स्वाहा।

घृत के पावन दीप जलाएँ, मिथ्यातम से मुक्ती पाएँ।
चन्द्र प्रभ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाय दीपं नि. स्वाहा।

सुरभित धूप जलाने लाए, आठों कर्म नशाने आए।
चन्द्र प्रभ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि. स्वाहा।

फल ताजे हम यहाँ चढ़ाएँ, मोक्ष महा पदवी को पाएँ।
चन्द्र प्रभ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं नि. स्वाहा।

अर्घ्य विशद यह पावन लाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।
चन्द्र प्रभ की महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा - **भक्त पुकारें आपको, हे प्रभु! चन्द्रजिनेश।**
शांतीधारा दे करें अर्चा भक्त विशेष।।

।। शान्तिधारा ।।

दोहा - **पुष्पांजलि करते विशद, पुष्प लिए शुभ हाथ।**
सुखशांती सौभाग हो पूज रहे पद माथ।।

।। दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपामी ।।

जयमाला

दोहा - **भक्तों को तुम हे प्रभो!, करते मालामाल।**
तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभ, की गाते जयमाल।।

हे ज्ञान दिवाकर चन्द्र प्रभो!, जय धर्म प्रभाकर चन्द्र प्रभो!।
जय शांति सुधाकर चन्द्र प्रभो!, हे चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो!।।1।।
हे धर्म प्रचारक चन्द्र प्रभो!, हे कष्ट निवारक चन्द्र प्रभो!।
हे रोग विनाशक चन्द्र प्रभो!, हे चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो!।।2।।
हे धर्म विधायक चन्द्र प्रभो!, हे शांति प्रदायक चन्द्र प्रभो!।
हे शिव दर्शायक चन्द्र प्रभो!, हे चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो!।।3।।
हे रोग निवारक चन्द्र प्रभो!, हे द्वेष निवारक चन्द्र प्रभो!।
हे कर्म विघातक चन्द्र प्रभो!, हे चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो!।।4।।
हे श्री रति नायक चन्द्र प्रभो!, जय-जय श्री दायक चन्द्र प्रभो!।
हे विघ्न विनायक चन्द्र प्रभो!, हे चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो!।।5।।
हे पाप विमोचक चन्द्र प्रभो!, हे आतम शोधक चन्द्र प्रभो!।
हे संकट मोचक चन्द्र प्रभो!, हे चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो!।।6।।
जय मुक्ति रमापति चन्द्र प्रभो!, जय श्रेष्ठ महायति चन्द्र प्रभो!।
जय जय हे जिनपति चन्द्र प्रभो!, हे चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो!।।7।।
हे कर्म विदारक चन्द्र प्रभो!, हे बुद्धि विशारद चन्द्र प्रभो!।
हे शरद नारद चन्द्र प्रभो!, हे चन्द्र प्रभो! जय चन्द्र प्रभो!।।8।।

दोहा - **श्री जिनेन्द्र की भक्ति है, नित नव मंगल वान।**
'विशद' भाव से कर मिले, मुक्ती का सोपान।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्र प्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - **चरण कमल में आपके, झुका रहे हम शीश।**
ऋद्धि सिद्धि सम्पति बढ़े, हे त्रिभुवन पति ईश।।

।। इत्याशीर्वाद।।

प्रथम वलयः

अनन्त चतुष्टय के अर्घ्य

दोहा - **कर्म घातिया नाशकर, अनन्त चतुष्टय वान।**
जिनकी अर्चा हम करें, पाने शिव सोपान।।

(अथ प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(पाइता-छन्द)

जो ज्ञानावरण नशाए, वे केवल ज्ञान जगाए।
हम चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण कर्मविनाशक केवलज्ञानप्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हैं दर्शावरण विनाशी, प्रभु दर्शानन्त प्रकाशी।
हम चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरण कर्मविनाशक केवलदर्शनप्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो मोह कर्म विनशाए, वे सुखानन्त को पाए।
हम चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मविनाशक अनन्तसुख प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो अन्तराय विनशाए, वे वीर्यानन्त जगाए।
हम चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्मविनाशक अनन्तवीर्य प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु घातीकर्म नशाए, जो अनन्त चतुष्टय पाए।
हम चन्द्रप्रभु को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वितीय वलयः

अष्ट प्रातिहार्य के अर्घ्य

दोहा – प्रातिहार्य वसु प्राप्त हैं, चन्द्र प्रभू भगवान।
विशद भाव से आज हम, करते हैं गुणगान।।

(अथ द्वितिय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(पाइता–छन्द)

तरुवर अशोक शुभकारी है, जो सारे शोक निवारी है।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिन की महिमा दर्शाता है।।1।।

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सिंहासन रत्न जड़ित जानो, जिसपे आसन जिनका मानो।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।।2।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

त्रय छत्र आपके शीश रहे, त्रिभुवन के स्वामी आप कहे।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।।3।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत्प्रातिहार्य सहितायश्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

भामण्डल आभा दर्शाए, जो सप्त भवों को दिखलाए।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।।4।।

ॐ ह्रीं भामण्डलसत्प्रातिहार्य सहिताय श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हो दिव्य ध्वनि ॐकार मयी, जो गाई पावन कर्म क्षयी।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिन की महिमा दर्शाता है।।5।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शुभ देव दुन्दुभि वाद्य बजे, जहाँ अतिशयकारी साज सजे।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।।6।।

ॐ ह्रीं देवदुन्दुभि सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सुर चँवर ढौरते है भाई, प्रभु की दर्शाते प्रभुताई।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।।7।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्टि चँवर सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर पुष्प वृष्टि कर हर्षाएँ, जिनवर की महिमा दर्शाएँ।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।।8।।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वसु प्रातिहार्य शुभकारी हैं, जिनकी महिमा अतिभारी है।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा – संकट हारी चन्द्रप्रभ, का करते गुणगान।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, करने निज कल्याण।।

(अथ तृतीय वलयोपरि पुष्पांञ्जलिं क्षिपेत्)

संकट निवारक अर्घ्य

(चाल–छन्द)

हम और पे जोर चलाते, अन्तर में क्रोध जगाते।
वह क्रोध नाश हो जाए, हम पूजा करने आए।।1।।

ॐ ह्रीं परस्पर क्रोध बैर विनाशन समर्थ श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पर से सम्मान न पाते, तब मानी हम हो जाते।।
अब अपना मान गलाएँ, तव चरणों विनय जगाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं मनविकार रोग मान विनाशन समर्थाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

त्रय योगों की चपलाई, जिससे हो माया भाई।
अब माया पूर्ण नसाएँ, शुभ सरल भाव प्रगटाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं कलंक–माया विनाशन समर्थाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

निज में सन्तोष ना आवे, मन में बहु लोभ सतावे।
तृष्णा जग में दुखदायी, निर्लोभ की सुधि मन आई।।4।।

ॐ ह्रीं शांति हारक लोभ विनाशन समर्थाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वा.।

भू कायिक जीव बताए, हमने वे बहुत सताए।
अब उत्तम संयम पाएँ, जीवों के प्राण बचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं पृथ्वी सम्बन्धी दु:ख विनाशन समर्थाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

जल कायिक जीव कहाते, हम उनको सतत सताते।
रक्षा का भाव जगाएँ, उनमें करुणा उपजाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं जल सम्बन्धी समस्याविनाशन समर्थाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

हैं अग्नी कायिक प्राणी, हम घाते हो अज्ञानी।
अब उन पे दया विचारें, ना अग्नी व्यर्थ में जारें।।7।।

ॐ ह्रीं अग्नि सम्बन्धी समस्या विनाशन समर्थाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

जो वायू कायिक गाये, वे हमसे दुख बहु पाए।
अब वे भी जीव बचाएँ, उन पर करुणा उपजाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं वायु सम्बन्धी समस्या विनाशन समर्थाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

तरु कायिक जीव कहाए, अज्ञानी हो बहु खाये।
अब उनके कष्ट मिटाएँ, संयम जीवन में पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं वनस्पति सम्बन्धी समस्या विनाशन समर्थाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

जग में त्रस जीव विचरते, मेरे प्रमाद से मरते।
हम उन पर दया विचारे, पावन समीतियाँ धारें।।10।।

ॐ ह्रीं प्राणी मात्र सम्बन्धी समस्या विनाशन समर्थाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्श आठ बतलाए, जिनके वश हम दुख पाए।
अब इन्द्रिय पर जय पाएँ, जिन चरणों ध्यान लगाएँ।।11।।

ॐ ह्रीं स्पर्शन-दोष विनाशन समर्थ श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रसना वस हो के भाई, की हमने बहुत लड़ाई।
अब रसना पर जय पाएँ, भक्ती में ध्यान लगाएँ।।12।।

ॐ ह्रीं रसना-दोष विनाशन समर्थाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कई घ्राणेन्द्रिय वश प्राणी, दुख पाते हो अज्ञानी।
अब घ्राणेन्द्रिय जय पाएँ, मन में समता उपजाएँ।।13।।

ॐ ह्रीं नासिका-दोष विनाशन समर्थाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

रंगों में सदा लुभाए, जो राग द्वेष करवाए।
हो चक्षू के जयकारी, प्रभु पूजा करें तुम्हारी।।14।।

ॐ ह्रीं दृष्टि दोष विनाशन समर्थाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हमको संगीत लुभाए, उसमें सन्तुष्टी आए।
अब कर्णेन्द्रिय जय पाएँ, हे नाथ! आपको ध्यायें।।15।।

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रिय-दोष विनाशन समर्थाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

मन भारी कुटिल कहाए, इन्द्रियों पर हुकुम चलाए।
मन को हम जीतें स्वामी, हो जाएँ नाथ! अकामी।।16।।

ॐ ह्रीं मन विकार हृदय रोग विनाशन समर्थाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्व.।

संकट में जीव दुखारी, हो जाता है संसारी।
श्री चन्द्रप्रभू को ध्याये, संकट से मुक्ती पाए।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट निवारण समर्थाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

चतुर्थ वलय:

दोहा - संकट हारी चन्द्रप्रभ, का करते गुणगान।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, करने निज कल्याण।।

(अथ चतुर्थ वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(तर्ज-बेसरी छन्द)

मन के सभी विकार नशाए, जिन पूजा मन शांति दिलाए।
चन्द्र प्रभ भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मानसिक पापोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोष वचन के पूर्ण निवारे, जीवन अर्चा शीघ्र सवारे।
चन्द्र प्रभ भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं वाचनिक पापोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय दोष की नाशन कारी, जिन पूजा है अतिशयकारी।
चन्द्र प्रभ भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं कायिक पापोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राज्य गेह लक्ष्मीपुर जानो, होय उपद्रव भारी मानो।
चन्द्र प्रभ भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं राज लक्ष्मीपुर राज्यगेह पदभ्रष्टोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मोदय जीवन में आए, घोर उपद्रव जिन्हें सताए।
चन्द्र प्रभ भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं दरिद्रोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भीम भगन्दर जिन्हें सताए, कुष्ट जलोदर यदि हो जाए।
चन्द्र प्रभ भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं भीमभगंदरगलितकुष्ठगुल्मरक्तपित्तवातकफस्फोटकाद्युभवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इष्ट वियोग का दुःख सताए, अनिष्ट संयोग जीवन में आए।
चन्द्र प्रभ भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी।। 7।।

ॐ ह्रीं इष्टवियोगानिष्टसंयोगोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व-पर चक्रोद्भव से भाई, होय उपद्रव यदि दुख दायी।
चन्द्र प्रभ भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं स्वचक्रपरचक्रोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना आयुध देह नशाए, घोर उपद्रव यदि हो जाए।
चन्द्र प्रभ भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं विविधायुधोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नक्र चक्र घड़ियाल सतावें, जल चर प्राणी दुख पहुँचावें।
चन्द्र प्रभ भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी।।10।।

ॐ ह्रीं जलचरजीवदुष्टोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्याघ्र सिंह गज हैं वनचारी, दुख पहुँचावें कोई भारी।
चन्द्र प्रभ भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी।।11।।

ॐ ह्रीं व्याघ्रसिंहगजादिवनपर्वतवासिश्वापदाद्युपपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूचर खेचर जीव सतावें, तीव्र क्रूरता जो दिखलावें।
चन्द्र प्रभ भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी।।12।।

ॐ ह्रीं भूचरगगनचरक्रूरजीवोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भीम भुजंगम बिच्छू जानो, घोर विषैले प्राणी मानो।
चन्द्र प्रभ भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी।।13।।

ॐ ह्रीं व्यालवृश्चिकादिविषदुर्द्धभवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नख श्रृंगादिक विषधर गाए, विष से प्राणी मुक्ती पाए।
चन्द्र प्रभ भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी।। 14।।

ॐ ह्रीं दुष्टजीवपदकरनखोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंचु तुण्ड दन्तादिक धारी, कोई जीव सतावे भारी।
चन्द्र प्रभ भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी।। 15।।

ॐ ह्रीं चंचुतुंडदाढणुकंटकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दावानल वन मध्य जलावे, उससे प्राणी दुख यदि पावे।
चन्द्र प्रभ भव ताप निवारी, रहे जहाँ में मंगलकारी।। 16।।

ॐ ह्रीं दावानलोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(सखी-छन्द)

हो वेग पवन का भारी, दुर्जय हो विस्मयकारी।
श्री चन्द्रप्रभ को ध्याए, अतिशीघ्र शांत हो जाए।। 17।।

ॐ ह्रीं प्रचंडपवनोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

नौकादिक से गिर जाए, दारुण दुख जिसे सताए।
श्री चन्द्रप्रभ को ध्याए, अतिशीघ्र शांत हो जाए।। 18।।

ॐ ह्रीं नौकास्फुटितपतनोद्भवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन पर्वत भू भयकारी, हो भीम उपद्रव भारी।
श्री चन्द्रप्रभ को ध्याए, अतिशीघ्र शांत हो जाए।। 19।।

ॐ ह्रीं वनगगनभेदिनीभयंकभवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो नदी सरोवर भाई, ह्रद कूप झील दुखदायी।
श्री चन्द्रप्रभ को ध्याए, अतिशीघ्र शांत हो जाए।।20।।

ॐ ह्रीं नदीसरोवराब्धिकूपह्रभवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिजली वर्षा भयकारी, ओला पाला हो भारी।
श्री चन्द्रप्रभ को ध्याए, अतिशीघ्र शांत हो जाए।। 21।।

ॐ ह्रीं विद्युत्पातादिभीमांबुवृष्ट्युभवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रण में शत्रू दल आवे, शस्त्रों का भय दिखलावे।
श्री चन्द्रप्रभ को ध्याए, अतिशीघ्र शांत हो जाए।। 22।।

ॐ ह्रीं संग्रामस्थलारिनिकटभवोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शाकिन डाकिन भयकारी, हो भूत प्रेत दुखकारी।
श्री चन्द्रप्रभ को ध्याए, अतिशीघ्र शांत हो जाए।। 23।।

ॐ ह्रीं डाकिनी भूतप्रेतपिशाचादिभयभयोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उच्चाटन मोहन कारी, स्तंभन हो दुखभारी।
श्री चन्द्रप्रभ को ध्याए, अतिशीघ्र शांत हो जाए।। 24।।

ॐ ह्रीं मोहनस्थंभनोच्चाटनप्रमुखदुष्टविद्योभयोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खोटे ग्रह जिन्हें सताएँ, कर्मोदय से दुख पाएँ।
श्री चन्द्रप्रभ को ध्याए, अतिशीघ्र शांत हो जाए।। 25।।

ॐ ह्रीं दुष्टग्रहाद्युभयोपद्रव निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दृढ़ श्रृंखलादि का भाई, बन्धन होवे दुखदायी।
श्री चन्द्रप्रभ को ध्याए, अतिशीघ्र शांत हो जाए।। 26।।

ॐ ह्रीं श्रृंखलाद्युभयोपद्रनिवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कोई अल्प मृत्यु को पाए, उसका संकट आ जाए।
श्री चन्द्रप्रभ को ध्याए, अतिशीघ्र शांत हो जाए।। 27।।

ॐ ह्रीं अल्पमृत्युभयोपद्रवनिवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दुर्भिक्ष उपद्रव भारी, जीवों में हो भयकारी।
श्री चन्द्रप्रभ को ध्याए, अतिशीघ्र शांत हो जाए।। 28।।

ॐ ह्रीं दुर्भिक्षभयोपद्रवनिवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

व्यापार वृद्धि ना पावे, कोई अन्तराय आ जावे।
श्री चन्द्रप्रभ को ध्याए, अतिशीघ्र शांत हो जाए।। 29।।

ॐ ह्रीं व्यापारवृद्धिभयोपद्रवनिवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बन्धू जन जिन्हे सताएँ, उनसे अतिशय दुख पाएँ।
श्री चन्द्रप्रभ को ध्याए, अतिशीघ्र शांत हो जाए।। 30।।

ॐ ह्रीं बंधुत्वभयोपद्रनिवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अकुटुम्बी हो दुखदायी, संक्लेश बढ़ावे भाई।
श्री चन्द्रप्रभ को ध्याए, अतिशीघ्र शांत हो जाए।। 31।।

ॐ ह्रीं अकुटुंबभयोपद्रवनिवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कोई पाप उदय में आवे अपकीर्ति विशद हो जावे।
श्री चन्द्रप्रभ को ध्याए, अतिशीघ्र शांत हो जाए।। 32।।

ॐ ह्रीं अपकीर्त्युभयोपद्रवनिवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इस जग का वैभव पाकर भी, जिनको ना उससे है राग।
इस संसार देह भोगों से, रहते हैं जो पूर्ण विराग।।
ज्ञान ध्यान संयम तप द्वारा, करने वाले कर्म विनाश।
यह संसार असार छोड़कर 'विशद' करें शिवपुर में वास।। 33।।

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत् अनिष्ट निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साठ अर्घ्यों से विशद, जिनचंद की अर्चा करें।
निज विघ्न सारे शान्त करके, मोक्ष लक्ष्मी को वरें।।

ॐ ह्रीं षष्ठि अर्घ्योपरान्त पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य - **ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः।**

जयमाला

दोहा - जग जीवों को कर रहे, हे जिन! आप निहाल।
अतः आपकी हम यहाँ, गाते हैं जयमाल।।

(चौबोला-छन्द)

अष्टम जिनवर चन्द्रप्रभू जी, आप धवल आभा वाले।
कर्म विजेता अक्षय साधक, निजगुण के हो रखवाले।।
विशद गुणों से इस वसुधा पर, रत्नों जैसे चमक रहे।
और सूर्य मण्डल से ज्यादा, शतक सूर्य से दमक रहे।। 1।।
महानीतियों महाकलाओं, के प्रभु आप हिमालय हो।
लोकालोक प्रकाशी हे जिन, केवलज्ञान के आलय हो।।
सर्व सम्पदाओं के स्वामी, चन्द्र सरीखे उदित हुए।
सुगुण सरोवर के कमलों सम, रवि को पाके मुदित हुए।। 2।।

परम तेज औ परम ओज के, चन्द्रप्रभू जी धाम कहे।
कर्म कलंक रहित अविनाशी, शिवपथ के पैगाम रहे।।
लोकालोक प्रकाशी भगवन्, मोक्ष मार्ग दर्शायक हो।
आप हीनता रहित लोक में, जगत पूज्य शिव नायक हो।।3।।
महामोह अन्तर में रहता, जिसके भी काला काला।
उसके अन्दर जले कषायों, की निशदिन दुखकर ज्वाला।।
सहस्र रश्मि दिनकर भी जिसको, नहीं नशाने योग्य रहा।
किन्तु चन्द्रप्रभु ज्ञान आपका, वह विनाश के योग्य कहा।।4।।
पूज्य चन्द्रप्रभु चरण आपके, महाकांति से वर्धित हैं।
स्वर्ग मोक्ष की विपुल सम्पदा, देने वाले अर्चित हैं।।
भव्य जनों से पूज्य आपकी, वाणी है जग कल्याणी।
मुक्ती मार्ग दिखाने वाली, 'विशद' कही है जिनवाणी।।5।।

दोहा - नाथ! आपके नाम का, जाप हरे सन्ताप।
ध्याते हैं हम आपको, कट जावें सब पाप।

ॐ ह्रीं सर्व कष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभू जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। दोहा ।।

चन्द्रप्रभू भगवान का, जपें निरन्तर नाम।
ऋद्धि सिद्धि समृद्धि हो, करके चरण प्रणाम।।

इत्याशीर्वाद:

श्री चन्द्रप्रभु चालीसा

दोहा - परमेष्ठी की वन्दना, करते योग सम्हाल।
चन्द्र प्रभू के चरण में, वन्दन है नत भाल।।

(शम्भू छन्द) तर्ज - आल्हा

जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र में, चन्द्रपुरी है मंगलकार।
यहाँ सुखी थी जनता सारी, महासेन नृप का दरबार।।
महिषी जिनकी रही सुलक्षणा, शुभ लक्षण से युक्त महान।
वैजयन्त से चयकर माँ के, गर्भ में आये थे भगवान।।1।।
वंश इक्ष्वाकू रहा आपका, सारे जग में अपरम्पार।
चैत कृष्ण पाँचे को प्रभु ने, भारत भू पर ले अवतार।।
शुभ नक्षत्र विशाखा पावन, अन्तिम रात्री थी मनहार।
देव-देवियों ने हर्षित हो, आके किया मंगलाचार।।2।।

पौष कृष्ण ग्यारस को जन्में, हर्षित हुआ राज परिवार।
इन्द्रों ने जाकर सुमेरु पर, न्हवन कराया बारम्बार।।
दाँये पग में अर्द्ध चन्द्रमा, देख इन्द्र ने बोला नाम।
चन्द्र प्रभू की जय बोली फिर, चरणों कीन्हा विशद प्रणाम।।3।।
बढ़ने लगे प्रभू नित प्रतिदिन, गुण के सागर महति महान।
आयू लाख पूर्व दश की शुभ, पाए चन्द्र प्रभ भगवान।।
धनुष डेढ़ सौ थी ऊँचाई, धवल रंग स्फटिक समान।
तड़ित चमकता देख गगन में, हुआ प्रभू को निज का भान।।4।।
मार्गशीर्ष शुक्ला सातें को, धारण कीन्हें प्रभु वैराग्य।
अनुराधा नक्षत्र में भाई, सहस्र भूप के जागे भाग्य।।
वन सर्वार्थ नाग तरु तल में, प्रभु ने कीन्हा आतम ध्यान।
फाल्गुन कृष्ण अष्टमी को प्रभु, पाए अनुपम केवलज्ञान।।5।।
समवशरण की रचना आकर, देवों ने की मंगलकार।
साढ़े आठ योजन का भाई, समवशरण का था विस्तार।।
गणधर रहे तिरानवे प्रभु के, उनमें रहे वैदर्भ प्रधान।
गिरि सम्मेद शिखर पर प्रभु जी, ललित कूट पर किये प्रयाण।।6।।
योग निरोध किया था प्रभु ने, एक माह तक करके ध्यान।
फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को शुभ प्रभू ने पाया पद निर्वाण।।
ज्येष्ठा शुभ नक्षत्र बताया, काल बताया है पौर्वाह्ण।
एक हजार साथ में मुनियों, ने भी पाया पद निर्वाण।। 7।।
वीतराग मुद्रा को लखकर, बने देव चरणों के भक्त।
मनोयोग से जिन चरणों की, भक्ती में रहते अनुरक्त।।
समन्तभद्र मुनिवर को भाई, भस्म व्याधि जब हुई महान।
खाकर भोग रोग का जिनने, शिव मंदिर में किया निदान।। 8।।
राजा समन्तभद्र से बोले, शिव पिण्डी को करो नमन।
पिण्डी नमन झेल न पाए, कर दो सांकल से बन्धन।।
आप स्वयंभू पाठ बनाए, शीश झुकाकर किए नमन।
पिण्डी फटी चन्द्र प्रभु स्वामी, के सबने पाए दर्शन।। 9।।
प्रगट हुए देहरा में प्रभु जी, लोग किए तब जय-जयकार।
सोनागिरि में आप विराजे, समवशरण ले सोलह बार।।
सब जीवों में मैत्री जागे, सुख-शांतीमय हो संसार।
'विशद' भावना भाते हैं हम, होवे भव से बेड़ा पार।। 10।।

दोहा - चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भक्ति के साथ।
सुख-शांती आनन्द पा, होय श्री का नाथ।।
उत्तम पदवी प्राप्त हो, योग्य होय सन्तान।
उभय लोक में सुख मिले, पावे मोक्ष विधान।।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः।

श्री चन्द्रप्रभु जी की आरती

ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी, जय चन्द्रप्रभु स्वामी।
चन्द्रपुरी अवतारी, मुक्ती पथ गामी। ॐ जय...
महासेन घर जन्मे, धर्म ध्वजाधारी-2
स्वर्ग मोक्षपदवी के दाता, ऋषिवर अनगारी ॐ जय...
आतम ज्ञान जगाएं, सद् दृष्टी धारी-2
मोह महामद नाशी, स्व पर उपकारी ॐ जय...
पंच महाव्रत प्रभु जी, तुमने जो धारे-2
समिति गुप्ति के द्वारा, कर्म शत्रु जारे ॐ जय...
इन्द्रिय मन को जीता, आतम ध्यान किया-2
केवल ज्ञान जगाकर, पद निर्वाण लिया ॐ जय...
तुमको ध्याने वाला, सुख शांती पावे-2
'विशद' आरती करके मन में हर्षावे ॐ जय...
प्रभु की महिमा सुनकर, द्वारे हम आये-2
भाव सहित प्रभु तुमरे, हमने गुण गाये ॐ जय...
तुम करुणा के सागर, हम पर कृपा करो-2
भक्त खड़ा चरणों में, सारे कष्ट हरो ॐ जय...
ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी, जय चन्द्रप्रभु स्वामी-2
चन्द्रपुरी अवतारी, मुक्ति पथ गामी। ॐ जय...

श्री वासुपूज्य विधान

माण्डला

मध्य - ॐ
प्रथम वलय - 16
द्वितीय वलय - 10
तृतीय वलय - 12
चतुर्थ वलय - 36
पंचम वलय - 08
कुल अर्घ्य : 82

रचयिता :
प. पू. क्षमामूर्ति 108
आचार्य श्री विशदसागर जी

श्री वासुपूज्य स्तवन

दोहा - वासुपूज्य भगवान शुभ, जग में हुए महान।
मुक्ती पथ का आपने, दिया विशद सोपान।।

(ज्ञानोदय छंद)

वासुपूज्य के चरण कमल में, वन्दन करते बारम्बार।
केवलज्ञान जगाने वाले, सकल जगत के जाननहार।।
महिमा हम गाते जिनवर की, सर्व कर्म क्षय करने को।
बसो हृदय में मेरे प्रभु जी, दुर्निवार के हरने को।। 1।।
प्रथम वालयति तीर्थंकर प्रभु, वासुपूज्य कहलाए महान।
चौवन सागर जिन श्रेयांस के, बाद हुए हैं विश्व प्रधान।।
लाल रंग तन का शुभ पाए, भैंसा जिनकी है पहिचान।
वंश इक्ष्वाकु कश्यप गोत्री, ऊँचे सत्तर धनुष प्रमाण।। 2।।
फाल्गुन वदी चतुर्दशि को प्रभु, जन्मे वासुपूज्य भगवान।
लाख बहत्तर वर्ष की आयु, जन्मत ही धारे त्रय ज्ञान।।
वाद्य बजे आनन्दमयी शुभ, जिसकी महिमा अपरम्पार।
ऐरावत ले इन्द्र ने आके, खुश होके बोला जयकार।। 3।।
पाण्डुक शिला पर न्हवन कराए, होकर के जो भाव विभोर।
इन्द्र बाल ऐरावत पर ले, जाता पाण्डुक वन की ओर।।
सचि से बालक इन्द्र राज ने, लेकर दर्शन किया महान।
पाण्डुक वन में पाण्डु शिला पर, बैठाकर कीन्हा गुणगान।।4।।
एक हजार आठ कलशों से, न्हवन कराया अपरम्पार।
सौ इन्द्रों ने मिलकर बोला, वासुपूज्य का जय-जयकार।।
इन्द्र राज ने बालक का शुभ, वासुपूज्य बतलाया नाम।
भक्तिभाव से चरण कमल में, कीन्हा बारम्बार प्रणाम।। 5।।

दोहा - इन्द्रराज जिनका विशद, करता है गुणगान।
अर्चा करके भव्य जन, पावें पद निर्वाण।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

श्री वासुपूज्य पूजन (मंगलवार)

स्थापना

जग की माया छोड़ प्रभू जी, करने चले जगत कल्याण।
यह संसार असार जानकर, किया आत्मा का शुभ ध्यान।।
विशद भावना भाते हैं प्रभु, प्राप्त करें चारित्र प्रधान।
हृदय कमल में नाथ ! आपका , करते हैं हम भी आह्वान।।

दोहा - ग्रहाराध्य प्रभू भौम के, वासुपूज्य भगवान।
शांति करो संसार में, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(पाइता छन्द)

जल पूजा को भर लाए, भव ताप नशाने आए।
हे वासुपूज्य ! जिन स्वामी, हम चरणों करे नमामी।। 1।।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।
शुभ गंध चढ़ाने लाए, भव ताप नशाने आए।
हे वासुपूज्य ! जिन स्वामी, हम चरणों करे नमामी।।2।।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।
अक्षत यह श्रेष्ठ चढ़ाएँ, अक्षय पद हम भी पाएँ।
हे वासुपूज्य ! जिन स्वामी, हम चरणों करे नमामी।।3।।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षय पद् प्राप्ताय अक्षतं निर्व. स्वाहा।
यह पुष्प चढ़ाने लाए, हम काम नशाने आए।
हे वासुपूज्य ! जिन स्वामी, हम चरणों करे नमामी।।4।।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय कामवाण विधवंसनाय पुष्पम् निर्व. स्वाहा।
नैवेद्य सरस सुखराशी, हैं क्षुधा रोग के नाशी।
हे वासुपूज्य ! जिन स्वामी, हम चरणों करे नमामी।।5।।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।
दीपक की ज्योति जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
हे वासुपूज्य ! जिन स्वामी, हम चरणों करे नमामी।।6।।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप खिवाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हे वासुपूज्य ! जिन स्वामी, हम चरणों करे नमामी।। 7।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल चढ़ा रहे हम भाई, जो रहे मोक्ष फलदायी।
हे वासुपूज्य ! जिन स्वामी, हम चरणों करे नमामी।। 8।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा

यह अर्घ्य चढ़ा हर्षाएँ, हम पद अनर्घ्य पा जाएँ।
हे वासुपूज्य ! जिन स्वामी, हम चरणों करे नमामी।। 9।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यम् निर्व. स्वाहा।

दोहा – आप हमारे देवता, आप रहे भगवान।
शांतीधारा दे यहाँ, करते हम गुणगान।।

।। शांतये शांतिधारा।।

दोहा – नेता मुक्ती मार्ग के, शिवपद के दातार।
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने शिव का द्वार।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

जयमाला

दोहा – मंगल ग्रह आराध्य हैं, वासुपूज्य भगवान।
भाव सहित जिनका यहाँ, करते हम गुणगान।।

(वेसरी छन्द)

पूर्वभवों में पुण्य कमाया, जिससे तीर्थंकर पद पाया ।
देव शास्त्र गुरुवर को ध्याया, मन में सद् श्रद्धान जगाया।। 1।।
दर्श विशुद्धी आदिक भाई, सोलह श्रेष्ठ भावना भाई।
स्वर्ग से चयकर गर्भ में आए, देव गर्भ कल्याण मनाए।। 2।।
जन्म कल्याणक पे सुर आवें, पाण्डुक शिला पे न्हवन करावें।
तप कल्याणक देव मनाते, धन्य धन्य कह महिमा गाते।। 3।।
प्रभु जी केवल ज्ञान जगाते, समवशरण धनराज बनाते।
दिव्यध्वनि प्रभु की शुभकारी, ॐकार मय मंगलकारी।। 4।।
खिरती जन-जन की कल्याणी, कहलाती है जो जिनवाणी।
बारह श्रेष्ठ सभाएँ जानो, सुर नर पशु सुनते हैं मानो।
प्रातिहार्य वसु मंगलकारी, समवशरण में हों मनहारी।।

कर्म अघाती प्रभू नशाए, सिद्ध शिला पर धाम बनाए।
अष्ट कर्म के होकर नाशी, हुए आप शिवपुर के वासी।।

दोहा – नाथ ! आपकी वंदना, सुर नर करें मुनीश।
भाव सहित हम आपके, चरण झुकाते शीश।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – शिवपुर के राही बने, पाए पंच कल्याण।
अर्चा करते आपकी, पाने शिव सोपान।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

प्रथम वलय की अर्घ्यावली

दोहा – सोलह सपने देखती, तीर्थंकर की मात।
गर्भ कल्याणक के समय, निश्चय मानो भ्रात।।

।।प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

गर्भ कल्याणक के अर्घ्य

जिन माँ को सपना आया, ऐरावत श्रेष्ठ दिखाया।
होगा महान शिशु भाई, इस जग में मंगलदाई।। 1।।

ॐ ह्रीं मातुः ऐरावत हस्ति स्वप्न प्रदर्शकाय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ श्वेत वृषभ दिखलाया, तव माँ का मन हर्षाया।
शिशु अधिपति होगा भाई, फैलेगी जग प्रभुताई।। 2।।

ॐ ह्रीं मातुः महावृषभ स्वप्न प्रदर्शकाय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वा.।

सिंह स्वप्न में देखे माता, जैनागम ये बतलाता।
बल वीर पराक्रम धारी, शिशु होगा महिमा कारी।। 3।।

ॐ ह्रीं मातुः सिंह स्वप्न प्रदर्शकाय श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वा.।

द्वय माल स्वप्न में आए, माँ मन में मोद मनाए।
शिशु तीर्थ प्रवृर्तक भाई, होगा जग मंगलदायी।। 4।।

ॐ ह्रीं मातुः मालायुगल स्वप्न प्रदर्शकाय श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वा.।

लक्ष्मी का न्हवन दिखाए, माँ को सपना ये आए।।
शिशु होके वैभव धारी, फिर भी होगा अविकारी।। 5।।

ॐ ह्रीं मातुः लक्ष्मी स्वप्न प्रदर्शकाय श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वा.।

माँ चाँद पूर्ण सुखदायी, देखो सपने में भाई।
जग जीवों को सुख साता, शिशु होगा सौख्य प्रदाता।।6।।

ॐ ह्रीं मातु: चन्द्रस्वप्न प्रदर्शकाय श्री वासुपूज्यजिनेंद्राय नम: अर्घ्यं निर्व. स्वा.।

शुभ सूर्य स्वप्न में आए, माँ देख-देख हर्षाए।
शिशु तेजवंत हो प्यारा, गुण गाए यह जग सारा।।7।।

ॐ ह्रीं मातु: सूर्यस्वप्न प्रदर्शकाय श्री वासुपूज्यजिनेंद्राय नम: अर्घ्यं निर्व. स्वा.।

माँ कलश युगल शुभकारी, देखे पावन मनहारी।
निधियों का होके स्वामी, बालक होगा शिवगामी।।8।।

ॐ ह्रीं मातु: कलशयुगल स्वप्न प्रदर्शकाय श्री वासुपूज्यजिनेंद्राय नम: अर्घ्यं नि.स्वा.।

(चौपाई-छन्द)

मीन युगल सपने में आया, जिन माँ का मन तव हर्षाया।
बालक होगा पावन योगी, सुख अनन्त का होगा भोगी।।9।।

ॐ ह्रीं मातु: मीनयुगल स्वप्न प्रदर्शकाय श्रीवासूपूज्यजिनेंद्राय नम: अर्घ्यं नि.स्वा.।

स्वच्छ सरोवर देखे माता, कहते जिनवाणी के ज्ञाता।
होगा उत्तम लक्षण धारी, बालक जग में मंगलकारी।।10।।

ॐ ह्रीं मातु: सरोवर स्वप्न प्रदर्शकाय श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय नम: अर्घ्यं नि.स्वा.।

शुभ समुद्र सपने में आए, माँ मन में अतिशय हर्षाए।
सर्वदर्शि सुत होगा भाई, फैलेगी जग में प्रभुताई।।11।।

ॐ ह्रीं मातु: समुद्रस्वप्न प्रदर्शकाय श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय नम: अर्घ्यं नि. स्वा.।

रत्न जड़ित सिंहासन भाई, स्वप्न में देखे जिन की माई।
शिशु होगा साम्रज्य का धारी, शिव पद का होवे अधिकारी।।12।।

ॐ ह्रीं मातु: सिंहासन स्वप्न प्रदर्शकाय श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय नम: अर्घ्यं नि.स्वा.।

देव विमान स्वप्न में आया, माँ ने तव आनन्द मनाया।
स्वर्ग से चय करके सुत आए, देव कई जयकार लगाए।।13।।

ॐ ह्रीं मातु: देवविमान स्वप्न प्रदर्शकाय श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय नम: अर्घ्यं नि.स्वा.।

माँ नागेन्द्र भवन शुभकारी, स्वप्न में देखे मंगलकारी।
बालक होगा अवधि ज्ञानी, होगा जग जन का कल्याणी।।14।।

ॐ ह्रीं मातु: धरणेंद्रभवन स्वप्न प्रदर्शकाय श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय नम: अर्घ्यं नि.स्वा.।

रत्न राशि सपने में आई, माँ ने हर्ष मनाया भाई।
सुत होगा रत्नत्रय धारी, संयम धर होगा अनगारी।।15।।

ॐ ह्रीं मातु: रत्नराशि स्वप्न प्रदर्शकाय श्रीवासुपूज्यजिनेंद्राय नम: अर्घ्यं नि.स्वा.।

धूम रहित अग्नी शुभ जानो, स्वप्न मात ने देखा मानो।
शिशु होगा कर्मों का नाशी, स्वयं बनेगा शिवपुर वासी।।16।।

ॐ ह्रीं मातु: निर्धूम-अग्नि स्वप्न प्रदर्शकाय श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह स्वप्नमात को आवें, सपने का फल पिता बतावें।
पुण्य सुफल तीर्थंकर पाते, जिन पद में हम शीश झुकाते।।17।।

ॐ ह्रीं मातु: षोडशस्वप्नप्रदर्शकाय गर्भकल्याणकप्राप्त श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वितीय वलय की अर्घ्यावली

दोहा - **जन्म कल्याणक के रहे, दश अतिशय मनहार।**
अर्घ्य चढ़ा पूजा करें, पावन मंगल कार।।

।। द्वितिय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

जन्म कल्याणक के अर्घ्य

(नरेन्द्र-छन्द)

'स्वेद रहित' तन जानो अनुपम, जन-जन का मन मोहे।
प्रभु के जन्म समय से अतिशय, शुभ तन में यह सोहे।।1।।

ॐ ह्रीं स्वेदरहित सहजातिशयधारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

गर्भ से जन्मे हैं माता के, फिर भी निर्मल गाये।
'मल मूत्रादिक रहित' देह प्रभु, अतिशय पावन पाये।।2।।

ॐ ह्रीं नीहाररहित सहजातिशयधारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तन का 'रुधिर श्वेत' है अनुपम, अतिशय पावन गाया।
रुधिर लाल नहि यह शुभ अतिशय, जन्म समय का पाया।।3।।

ॐ ह्रीं श्वेतरुधिर सहजातिशयधारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तन सुडोल आकार मनोहर, 'सम चतुष्क' बतलाया।
जिस अवयव का माप है जितना, उतना ही मन भाया।।4।।

ॐ ह्रीं समचतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

'वज्र वृषभ नाराच' संहनन, जिनवर तन में पाते।
गणधरादि नित हर्षित मन से, प्रभु का ध्यान लगाते।।5।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशयधारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्व.।

कामदेव का रूप लजावे, जिन प्रभु तन के आगे।
'अतिशय रूप' मनोहर प्रभु का, देखत में शुभ लागे।।6।।

ॐ ह्रीं अतिशयरूप सहजातिशयधारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

परम 'सुगंधित तन' है प्रभु का, अनुपम महिमाकारी।
अन्य सुरभि नहिं है इस जग में, प्रभु तन सम मनहारी।।7।।

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'एक हजार आठ शुभ लक्षण', प्रभु के तन में सोहे।
अद्भुत महिमाशाली जिनवर, त्रिभुवन का मन मोहे।।8।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्टलक्षण सहजातिशयधारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तुलना रहित 'अतुल बल' प्रभु के, अतिशय तन में गाया।
इन्द्र चक्रवर्ती से अद्भुत, शक्ती मय बतलाया।। 9।।

ॐ ह्रीं अतुल्यबल सहजातिशयधारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

'हित मितप्रिय वचन' अमृत सम, प्रभु के होते भाई।
त्रिभुवन के प्राणी सुनते हों, मंत्र मुग्ध सुखदायी।। 10।।

ॐ ह्रीं प्रियहितवचन सहजातिशयधारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा - दश अतिशय पाते प्रभु, होते जन्म कल्याण।
पुष्पांजलि करके यहाँ, करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं दश जन्मातिशय प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तृतीय वलय की अर्घ्यावली

दोहा - द्वादश तप तपके प्रभू, पाये केवलज्ञान।
ऐसे श्री जिनेश का, करते हम गुणगान।।

।। तृतिय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(द्वादश तप कल्याणक के अर्घ्य)

(सखी-छन्द)

जो त्याग करें आहारा, उनने अनशन तप धारा।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 1।।

ॐ ह्रीं अनशन तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तप ऊनोदर के धारी, होते हैं अल्पाहारी।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 2।।

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तप व्रत संख्यान के धारी, संकल्प करें अनगारी।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 3।।

ॐ ह्रीं वृतिपरिसंख्यान तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

रस त्याग सुतप के धारी, जो छोड़े हो अविकारी।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 4।।

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तप विविक्त शैय्याशनधारी, हों अनाशक्त अनगारी।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 5।।

ॐ ह्रीं विविक्त शैय्याशन तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तप कायोत्सर्ग के धारी, तजते ममत्व गुणधारी।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 6।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तप प्रायश्चित जो पाते, वे अपने दोष नशाते।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 7।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जिन विनय सुतप के धारी, इस जग में मंगलकारी।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 8।।

ॐ ह्रीं विनय तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तप वैय्यावृत्ती धारें, वे संयम रतन सम्हारें।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 9।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तप स्वाध्याय के धारी, चिन्तन करते अनगारी।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 10।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

व्युत्सर्ग सुतप जो पावें, वे तन से नेह घटावें।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 11।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

हैं ध्यान सुतप के धारी, चिन्ता रोधी अविकारी।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 12।।

ॐ ह्रीं ध्यान तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

यह द्वादश तप जो पावें, वे अपने कर्म नशावें।
प्रभु वासुपूज्य को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 13।।

ॐ ह्रीं द्वादश तप प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चतुर्थ वलय की अर्घ्यावली

दोहा - ज्ञानावरणी नाशकर, पाए केवलज्ञान।
वासुपूज्य भगवान का, करते हम गुणगान।।

(चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

केवलज्ञान के अर्घ्य

दस ज्ञान के अतिशय
(चाल छन्द)

होवे सुभक्षिता भाई, सौ योजन में सुखदायी।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।। 1।।

ॐ ह्रीं गव्यूतिशत्चतुष्टय सुभिक्षत्व सहजातिशय सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो गगन गमन शुभकारी, इस जग में मंगलकारी।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।। 2।।

ॐ ह्रीं आकाशगमन सहजातिशय सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

प्रभु के मुख चार दिखावें, भवि प्राणी दर्शन पावें।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, हम पावन ये अतिशय पाते।। 3।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुख सहजातिशय सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

होते अदया के त्यागी, तीर्थंकर जिन बड़भागी।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।। 4।।

ॐ ह्रीं अदयाभाव सहजातिशय सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

उपसर्ग नहीं हो पावें, जब केवल ज्ञान जगावें।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।। 5।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव सहजातिशय सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ना होते कवलहारी, केवल ज्ञानी अनगारी।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।। 6।।

ॐ ह्रीं कवलाहार सहजातिशय सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्रभु सब विद्याएँ पावें, ईश्वर अतएव कहावें।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।। 7।।

ॐ ह्रीं सर्वविद्येश्वरत्व सहजातिशय सहित श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वा.।

नख केश वृद्धि ना पावें, जब केवल ज्ञान जगावें।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।। 8।।

ॐ ह्रीं समान नखकेशत्व सहजातिशय सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

अनिमिष दृग पावें स्वामी, प्रभु होते अन्तर्यामी।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।। 9।।

ॐ ह्रीं अक्ष स्पंदरहित सहजातिशय सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्व.।

ना पड़ती जिन की छाया, है केवल ज्ञान की माया।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।। 10।।

ॐ ह्रीं छायारहित सहजातिशय सहित श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

देवोंकृत चौदह अतिशय के अर्घ्य

(चौपाई-छन्द)

अर्धमागधी भाषा जानो, अतिशय देवोंकृत पहिचानो।
प्रभु जी केवल ज्ञान जगाते, देव विशद अतिशय दिखलाते।। 11।।

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैत्री भाव जगे सुखदायी, जग जीवों में मंगलदायी।
प्रभु जी केवल ज्ञान जगाते, देव विशद अतिशय दिखलाते।। 12।।

ॐ ह्रीं सर्व मैत्रीभाव देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फल फलते सब ऋतु के भाई, प्रभु अतिशय पाते शिवदायी।
प्रभु जी केवल ज्ञान जगाते, देव विशद अतिशय दिखलाते।। 13।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरु परिणाम देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पाईता छन्द)

भू दर्पणवत् हो जावे, जो प्रभु के पद पड़ जावें।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।। 14।।

ॐ ह्रीं आदर्शतल प्रतिमा रत्नमयी देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायू सुगन्ध सुखदायी, चलती है मंगलदायी।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।। 15।।

ॐ ह्रीं सुगन्धित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में आनन्द समावे, आगमन प्रभु का पावें।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।। 16।।

ॐ ह्रीं सर्वानन्दकारक देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्व.।

भूगत कंटक हो जाते, जिन के विहार में आते।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।। 17।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो गंधोदक की वृष्टी, हो जाय हर्षमय सृष्टी।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।। 18।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृत गंधोदक वृष्टि देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद तल में कमल रचाते, होवे विहार सुर आते।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।। 19।।

ॐ ह्रीं चरणकमलतल रचित स्वर्ण कमल देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो गगन सुनिर्मल भाई, है देवों की प्रभुताई।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।। 20।।

ॐ ह्रीं सर्वदिशा निर्मल देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब मेघ धूम खो जावे, दिश निर्मलता को पावे।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।। 21।।

ॐ ह्रीं शरदकाल वन्निर्मल गगन गमनत्व देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकाश में जयजय कारे, सुर आके बोलें प्यारे।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।। 22।।

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ धर्म चक्र मनहारी, ले यक्ष चलें शुभकारी।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।। 23।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्र चतुष्टय देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु मंगलद्रव्य सजावें, प्रभु की महिमा को गावें।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, अतिशय तब देव दिखाते।। 24।।

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपुनीतातिशय धारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय के अर्घ्य

हम ज्ञानावरण नशाएँ, फिर केवल ज्ञान जगाएँ।
हे अनन्त चतुष्टय धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।। 25।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञान गुण प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

हे दर्शावरण के नाशी, प्रभु केवल दर्श प्रकाशी।
हे अनन्त चतुष्टय धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।। 26।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन गुण प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

हम मोह कर्म विनसाएँ, फिर सुख अनन्त प्रगटाएँ।
हे अनन्त चतुष्टय धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।। 27।।

ॐ ह्रीं अनन्तसुख गुण प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जो कर्मान्तराय नशाएँ, प्रभु बल अनन्त प्रगटाएँ।
हे अनन्त चतुष्टय धारी, हम पूजा करें तुम्हारी।। 28।।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्य गुण प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य के अर्घ्य

(तोटक-छन्द)

तरुवर अशोक शुभकारी है, जो सारे शोक निवारी है।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।। 29।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सिंहासन रत्न जड़ित जानो, जिसपे आसन जिनका मानो।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।। 30।।

ॐ ह्रीं सिंहासनमहाप्रातिहार्य सहीताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

त्रय क्षत्र आपके शीश रहे, त्रिभुवन के स्वामी आप कहे।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।। 31।।

ॐ ह्वी सुरपुष्पवृष्टिमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

भामण्डल आभा दर्शाए, जो सप्त भवों को दिखलाए।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।। 32।।

ॐ ह्वीं भामण्डलमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

हो दिव्य ध्वनि ॐकारमयी, जो गाई पावन कर्म क्षयी।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।। 33।।

ॐ ह्वीं दिव्यध्वनिमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

शुभ देव दुन्दुभि वाद्य बजे, जहाँ अतिशय कारी साज सजे।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।। 34।।

ॐ ह्वीं देवदुंदभिमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सुर चँवर ढौरते हैं भाई, प्रभु की दर्शाते प्रभुताई।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।। 35।।

ॐ ह्वीं चामरमहाप्रातिहार्य सहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सुर पुष्प वृष्टि कर हर्षाएँ, जिनवर की महिमा दर्शाएँ।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।। 36।।

ॐ ह्वीं सुरपुष्पवृष्टि सहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

वसु प्रातिहार्य शुभकारी हैं, जिनकी महिमा अतिभारी है।
जो प्रातिहार्य कहलाता है, जिनकी महिमा दर्शाता है।। 37।।

ॐ ह्वीं षट् त्रिंशतकेवलज्ञानातिशय सहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

पंचम वलय की अर्घ्यावली

दोहा - मुक्ती के राही बने, शिवपुर किया प्रयाण।
पुष्पांजलि करके यहाँ, करते प्रभु गुणगान।।

।। पंचम वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

अष्ट कर्म रहित श्री जिन के अर्घ्य

(छन्द-मोतियादाम)

प्रभु ज्ञानावरणी कर्म-नाश, फिर करें ज्ञानकेवल प्रकाश।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।। 1।।

ॐ ह्वीं ज्ञानावरणी कर्म रहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जिन कर्म दर्शनावरण नाश, प्रभु करें दर्श क्षायिक प्रकाश।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।। 2।।

ॐ ह्वीं दर्शनावरणी कर्म रहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जब करें वेदनीय का विनाश, गुण अव्यावाध में करें वास।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।। 3।।

ॐ ह्वीं वेदनीय कर्म रहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्रभु मोह कर्म से कहे हीन, जो सुखानन्त में रहें लीन।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।। 4।।

ॐ ह्वीं मोहनीय कर्म रहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जिन आयु कर्म का कर विनाश, अवगाहन गुण में करें वास।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।। 5।।

ॐ ह्वीं आयु कर्म रहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्रभु नाम कर्म करते विनाश, सूक्ष्मत्व सुगुण करते प्रकाश।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।। 6।।

ॐ ह्वीं नामकर्म रहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

ना गोत्र कर्म का रहा काम, गुण पाए अगुरुलघु रहा नाम।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।। 7।।

ॐ ह्वीं गोत्र कर्म रहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्रभु अन्तराय करके विनाश, जिन वीर्यानन्त में करें वास।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार।। 8।।

ॐ ह्वीं अन्तराय कर्म रहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा - आठों कर्म विनाश कर, गुण प्रगटाएँ आठ।
वासुपूज्य के भक्त जन, पाते ऊँचे ठाठ।।

ॐ ह्वीं अष्टकर्म रहिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जाप्य - ॐ ह्वीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः।।

जयमाला

दोहा - अष्ट कर्म को नाशकर, शिवपुर पाए वास।
जयमाला गाते विशद, करने ज्ञान प्रकाश।।

(मोतियादाम छन्द)

जगावें जिनवर केवलज्ञान, चराचर वस्तू लेते जान।
कर्म त्रेसठ प्रकृतियाँ नाश, करें निज आतम ज्ञान प्रकाश।।
सूक्ष्म किरिया प्रतिपाती ध्यान, जगे तेरहवे गुणस्थान।
करें जिनवर जी योग निरोध, जगावें निज आतम का बोध।। 1।।
चौदहवाँ पावें गुणस्थान, व्यूपरत किरिया होवे ध्यान।
बहत्तर कर्म प्रकृतियाँ जान, प्रथम करते हैं प्रभू विनाश।।
शेष तेरह प्रकृतियाँ जान, नाशकर देते हैं भगवान।
काल चौदहवें गुणस्थान, का अ इ उ ऋ लृ प्रमाण।। 2।।
करें इस भाँती कर्म विनाश, होय फिर सिद्ध शिला पर वास।
इन्द्र आकरके अग्नि कुमार, करें नख केशों का संस्कार।।
प्रभू प्रगटाएँ केवल ज्ञान, दर्श क्षायिक पाएँ भगवान।
जगाए सुख अनन्त भगवान, कहाए जो अनन्त बल वान।। 3।।
प्राप्त करके गुण अव्याबाध, अगुरुलघु गुण भी रखना याद।
प्रभू हैं अवगाहन गुणवान, और सुक्ष्मत्व है सुगुण महान।।
कहाए नित्य निरंजन सिद्ध, अचल अविनाशी जगत प्रसिद्ध।
प्रभू उत्पाद ध्रोव्य व्यय वान, प्राप्त प्रभु किए मोक्ष कल्याण।।4।।
लिए पर परणति से विश्राम, बनाए निज में ही ध्रुव धाम।
परम पारिणामिक पा के भाव, प्रकट कीन्हे हैं निज स्वभाव।।
अतिन्द्रिय बने आप अविकार, हुए प्रभु जग में मंगलकार।
विशद जागी मेरे उर चाह, प्राप्त हो हमको सम्यक् राह।। 5।।

दोहा - गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान शुभ, पाये मोक्ष कल्याण।
वासुपूज्य भगवान का, किया 'विशद' गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा - शुद्ध बुद्ध चैतन्यमय, गुणानन्त के कोष।
अर्चा करते भाव से, जीवन हो निर्दोष।।

।। इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

भरत क्षेत्र के मध्य है, भारत देश महान।
मध्य प्रदेश का देश में, रहा अलग स्थान।। 1।।
जिला छतरपुर में रहा, कुपी लघु सा ग्राम।
लाल भरोसे सेठ का, रहा श्रेष्ठ शुभ नाम।। 2।।
उनके अन्तिम पुत्र थे, नाम था नाथूराम।
जिला छतरपुर में गये, वहाँ बनाया धाम।। 3।।
विराग सिंधु गुरू का वहाँ आप सुने उपदेश।
दीक्षा ले जिनने धरा, श्रेष्ठ दिगम्बर भेष।। 4।।
विमल सिन्धु गुरुवर हुए, इस जग में विख्यात।
विराग सिन्धु जग में हुए, जैन धर्म में ख्यात।। 5।।
दीक्षा गुरु कहलाए वह, किया बड़ा उपकार।
भरत सिन्धु जी ने दिया, जिनको पद आचार्य।। 6।।
काव्य कला है श्रेष्ठ शुभ, विशद सिन्धु की खास।
लेखन चिंतन मनन में, जो रखते विश्वास।। 7।।
हरियाणा शुभ प्रान्त के, गुरूग्राम में आन।
वासुपूज्य का पूर्ण यह, लिक्खा 'विशद' विधान।।8।।
पच्चिस सौ त्यालीस शुभ, रहा वीर निर्वाण।
भादों कृष्णा पंचमी, किया पूर्ण गुणगान।। 9।।
जिनने अपनी कलम से, लिखे हैं कई विधान।
सारे भारत देश में, होता है गुणगान।। 10।।
काव्य कथा नाटक तथा, लिखते हैं कई लेख।
शास्त्र और पत्रिकाओं में, जिनका है उल्लेख।। 11।।
सरल शब्द में श्रेष्ठतम, जिसका किया बखान।
ऐसी अनुपम कृति से, करो सभी गुणगान।। 12।।
लघु धी से जो भी लिखा, मानो उसे प्रमाण।
पूजा अर्चा कर 'विशद' पाओ पद निर्वाण।। 13।।

श्री वासुपूज्य भगवान की आरती

श्री वासुपूज्य भगवान, आज थारी आरती उतारें।
आरती उतारें, थारी मूरत निहारें, कर दो भव से पार।।
आज थारी.............
वसुपूज्य के सुत हो प्यारे, जयावती के राजदुलारे।
चम्पापुर महाराज-आज थारी..........।। 1।।
जन्म के अतिशय तुमने पाए, केवलज्ञान को भी प्रगटाए।
देवों कृत शुभकार-आज थारी.............।। 2।।
कर्म घातिया तुमने नाशे, अनुपम केवल ज्ञान प्रकाशे।
शिवपुर के सरताज-आज थारी.............।। 3।।
अनन्त चतुष्टय तुमने पाए, प्रातिहार्य भी शुभ प्रकटाए।
तीर्थंकर जिनराज-आज थारी..............।। 4।।
हम भी द्वार आपके आए, पद में सादर शीश झुकाए।
'विशद' ज्ञान के ताज-आज थारी.................।।5।।

श्री वासुपूज्य चालीसा

दोहा - परमेष्ठी जिन पाँच हैं, तीर्थंकर चौबीस।
वासुपूज्य के पद युगल, विनत झुके मम् शीश।।

(चौपाई)

वासुपूज्य जिनराज कहाए, अपने सारे कर्म नशाए।
अनुपम केवलज्ञान जगाए, अविनाशी अनुपम पद पाए।। 1।।
महाशुक्र से चयकर आए, चम्पापुर नगरी कहलाए।
पिता वसु नृप अनुपम गाए, जयावती के लाल कहाए।। 2।।
अषाढ़ कृष्ण दशमी दिन पाए, इक्ष्वाकु शुभ वंश उपाए।
गर्भ नक्षत्र शतभिषा गाए, प्रातः काल का समय बिताए।। 3।।
फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी गाया, जन्म कल्याणक प्रभु ने पाया।
शुभ नक्षत्र विशाखा गाया, इन्द्र तभी ऐरावत लाया।। 4।।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया, भैंसा चिन्ह पैर में पाया।
वासुपूज्य तब नाम बताया, हर्ष सभी के मन में छाया।। 5।।
लोग सभी जयकार लगाए, सत्तर धनुष ऊँचाई पाए।
फाल्गुण कृष्ण चतुर्दशी बताए, जाति स्मरण प्रभु जी पाए।।6।।

अपराह्न काल का समय बताया, एक उपवास प्रभु ने पाया।
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, लाल वर्ण तन का प्रभु पाए।। 7।।
प्रभु मनोहर वन में आए, तरु पाटला का तल पाए।
राजा छह सौ छह बतलाए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।। 8।।
आयु लाख बहत्तर पाए, उत्तम तप कर कर्म नशाए।
माघ शुक्ल द्वितीया शुभ पाए, प्रभु जी केवलज्ञान जगाए।। 9।।
मिलकर इन्द्र वहाँ पर आए, प्रभु के पद में ढ़ोक लगाए।
समवशरण सुन्दर बनवाए, साढ़े छह योजन कहलाए।। 10।।
गौरी श्रेष्ठ यक्षिणी जानो, सन्मुख यक्ष प्रभु का मानो।
एक माह पूर्व से भाई, योग निरोध किए सुखदायी।। 11।।
भादौ शुक्ल चतुर्दशी आई, जिस दिन प्रभु ने मुक्ति पाई।
शुभ नक्षत्र अश्विनी गाया, अपराह्न काल का समय बताया।। 12।।
मुनिवर छह सौ एक कहाए, साथ में प्रभु के मुक्ति पाए।
छियासठ प्रभु के गणधर गाए, मन्दर उनमें प्रथम कहाए।। 13।।
बारह सौ थे पूरब धारी, दश हजार विक्रिया धारी।
शिक्षक पद के धारी गाए, उन्तालिस हजार दो सौ कहलाए।। 14।।
छह हजार थे केवलज्ञानी, छह हजार मनःपर्यय ज्ञानी।
दश हजार विक्रियाधारी, ब्यालिस सौ वादी शुभकारी।। 15।।
चौवन सौ अवधिज्ञानी पाए, सहस्त्र बहत्तर सब ऋषि गाए।
आर्यिकाएँ प्रभु चरणों आईं, एक लाख छह सहस्त्र बताईं।। 16।।
वरसेना गणिनी कहलाई, आयु लाख हजार बहत्तर पाई।
एक वर्ष छद्मस्थ बिताए, चम्पापुर से मुक्ति पाए।। 17।।
पाँचो कल्याणक शुभ जानो, चम्पापुर से मुक्ती पाए।
ग्रहारिष्ट मंगल के स्वामी, वासुपूज्य जिन अन्तर्यामी।। 18।।
मंगल ग्रह हो पीड़ाकारी, प्रभु का वह बन जाए पुजारी।
आरती कर चालीसा गाए, ग्रह पीड़ा को शीघ्र नशाए।। 19।।
सुख-शांति वह मानव पाए, उसका भाग्य उदय में आए।
यही भावना 'विशद' हमारी, मुक्ति दो हमको त्रिपुरारी।। 20।।

दोहा - चालीसा जो भाव से, पढ़ते दिन चालीस।
पाते सुख शांती विशद, बनते शिवपति ईश।।

श्री शांतिनाथ विधान

माण्डला

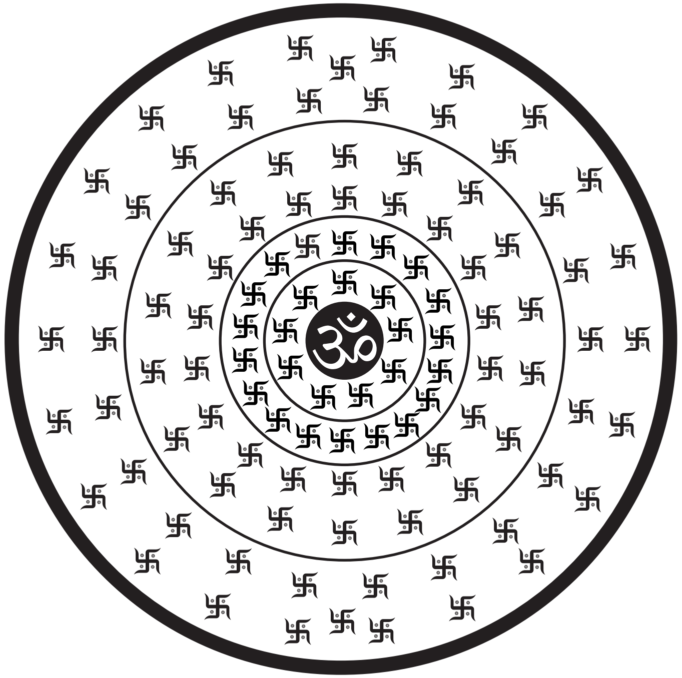

मध्य वलय ॐ
प्रथम वलय - 9
द्वितीय वलय - 18
तृतीय वलय - 36
चतुर्थ वलय - 46
कुल अर्घ्य - 109

रचयिता :
प. पू. क्षमामूर्ति 108
आचार्य श्री विशदसागर जी

श्री शान्तिनाथ स्तवन

समग्र तत्त्व दर्पणम् विमुक्ति मार्ग घोषणम्।
कषाय मोह मोचनम्, नमामि शान्ति जिनवरं।।
त्रिलोक वन्द्य भूषणम्, भवाब्धि नीर शोषणम्।
जितेन्द्रियम् अजंजिनम्, नमामि शान्ति जिनवरं।।
अखण्ड खण्ड गुण धरम, प्रचण्ड काम खण्डनम्।
सुभव्य पद्म दिनकरम, नमामि शान्ति जिनवरं।।
एकान्तवाद मत हरं, सुस्याद्वाद कौशलम्।
मुनीन्द्र वृन्द सेवितम्, नमामि शान्ति जिनवरं।।
नृपेन्द्र चक्र मण्डनम्, प्रकर्म चक्र चूरणम्।
सुधर्म चक्र चालकं, नमामि शान्ति जिनवरं।।
अग्रन्थ नग्न केवलं, विमोक्ष धाम केतनम्।
अनिष्ट घन प्रभजनम्, नमामि शान्ति जिनवरं।।
महाश्रमण किंचनम्, अकाम काम पद धरम।
सुतीर्थ कर्तृ षोडषम्, नमामि शान्ति जिनवरं।।
पंच महाव्रत धरं दया क्षमा गुणाकरम्।
सुदृष्टि ज्ञान व्रत धरम नमामि शान्ति जिनवरं।।

(स्रगधरा छन्द)

सद्बुद्धिं 'विशदं' श्रुताद्यसहितं ज्ञानाब्धि पारङ्गतं।
सेव्यं धीमत्पर्ययैर्गुणशतैः सर्वज्ञसत्केवलम्।।
लोकालोक त्रिलोक भास्करविभं धर्मामृताम्भोनिधिं।
साम्राज्याखिलशर्म विश्वकमलं सम्पूजयामोमुदा।।

श्री शान्तिनाथ विधान पूजा (बुधवार)

''स्थापना''

दोहा - शांती के हैं कोष जिन, शांतिनाथ भगवान।
'विशद' शांति के हेतु हम, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट इति आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

तर्ज- नर तन रतन अमोल... (विष्णु पद छन्द)

प्रासुक शुद्ध सुवासित जल हम, भर लाए झारी।
जन्म जरादिक रोग मिटे प्रभु, तव पद बलिहारी।
शांतिनाथ जिन शांति प्रदाता, इस जग में गाए।
विशद शांति हम पाएँ हे प्रभु!, अर्चा को आए।। 1।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामिति स्वाहा।

चन्दन सरस कपूर मिलाकर, जल में घिसवाए।
भव संताप मिटाने को हम, चरण शरण आए।।
शांतिनाथ जिन शांति प्रदाता, इस जग में गाए।
विशद शांति हम पाएँ हे प्रभु!, अर्चा को आए।। 2।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामिति स्वाहा।

स्वर्ण थाल में अक्षय अक्षत, भरके हम लाए।
कर्म श्रृँखला नश जाए पद, अक्षय मिल जाए।।
शांतिनाथ जिन शांति प्रदाता, इस जग में गाए।
विशद शांति हम पाएँ हे प्रभु!, अर्चा को आए।। 3।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा।

विविध भाँति के पुष्प अनेकों, थाल में भर लाए।
काम रोग के शमन हेतु हम, अर्चा को आए।।
शांतिनाथ जिन शांति प्रदाता, इस जग में गाए।
विशद शांति हम पाएँ हे प्रभु!, अर्चा को आए।। 4।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामिति स्वाहा।

क्षुधा सताती हरदम हमको, प्रभु तुम नाश किए।
षट्रस व्यंजन शुद्ध बनाकर, आए यहाँ लिए।।
शांतिनाथ जिन शांति प्रदाता, इस जग में गाए।
विशद शांति हम पाएँ हे प्रभु!, अर्चा को आए।। 5।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मोह महातम में भटकाए, शिवपथ ना पाए।
घृत के दीप जलाकर चरणों, शिव पाने आए।।
शांतिनाथ जिन शांति प्रदाता, इस जग में गाए।
विशद शांति हम पाएँ हे प्रभु!, अर्चा को आए।। 6।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामिति स्वाहा।

दशविध धूप मनोहर लेकर, खेने यह लाए।
कर्म नाश हों धूप संग ही, प्रभु महिमा गाए।।
शांतिनाथ जिन शांति प्रदाता, इस जग में गाए।
विशद शांति हम पाएँ हे प्रभु!, अर्चा को आए।। 7।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामिति स्वाहा।

श्रीफल आदिक फल यह ताजे, अर्चा को लाए।
मुक्ती पद की है अभिलाषा, चरणों सिरनाए।।
शांतिनाथ जिन शांति प्रदाता, इस जग में गाए।
विशद शांति हम पाएँ हे प्रभु!, अर्चा को आए।। 8।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत कुसुमाकर, चरुवर दीप लिए।
ताजे फल से अर्घ्य बनाया, चरणों अर्घ्य दिए।।
शांतिनाथ जिन शांति प्रदाता, इस जग में गाए।
विशद शांति हम पाएँ हे प्रभु!, अर्चा को आए।। 9।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - जल धारा चरणों करें, लेकर पावन नीर।
सुख पावें सब जगत जन, पावें भव का तीर।।

।। शान्तये शान्तिधारा।।

दोहा - कल्पवृक्ष के पुष्प ले, पुष्पाञ्जलि को हाथ।
शिवपद पाएँ शीघ्र ही, चरण झुकाते माथ।।

।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत।।

''पञ्चकल्याणक के अर्घ्य''

(चाल छन्द)

भादों वदि साते जानो, प्रभु गर्भ में आए मानो।
प्रभु शांतिनाथ जिन स्वामी, जो बने मोक्ष पथ गामी।। 1।।

ॐ ह्रीं भादों वदि सप्तम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वा.।

वदि ज्येष्ठ चतुर्दशि भाई, प्रभु जन्म लिए शिवदायी।
प्रभु शांतिनाथ जिन स्वामी, जो बने मोक्ष पथ गामी।। 2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वदि ज्येष्ठ चतुर्दशि जानो, प्रभु संयम धारे मानो।
प्रभु शांतिनाथ जिन स्वामी, जो बने मोक्ष पथ गामी।। 3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्णचतुर्दश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुदि पौष दशें शुभ पाए, प्रभु केवलज्ञान जगाए।
प्रभु शांतिनाथ जिन स्वामी, जो बने मोक्ष पथ गामी।। 4।।

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वदि ज्येष्ठ चतुर्दशि पाए, शिवपुर में धाम बनाए।
प्रभु शांतिनाथ जिन स्वामी, जो बने मोक्ष पथ गामी।। 5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा - शांतिनाथ भगवान हैं, शांती के दातार।
जयमाला गाते यहाँ, पाने भवदधि पार।।

''पद्धड़ि छन्द''

जय-जय वन्दौं श्री शांतिनाथ, जिन सुपद झुकावें इन्द्र माथ।
छह माह पूर्व नगरी प्रधान, सुर इन्द्र रचे आके महान।।

शुभ कोट रचाए वहाँ तीन, शिल्पी इन्द्रादिक थे प्रवीण।
सर्वार्थ सिद्धि चयकर विमान, जिन माता के प्रभु गर्भ आन।। 1।।
जय हस्तिनागपुर जन्म लीन, जय तीन लोक उद्योतकीन।
पितु विश्वसेन जिनके महान, माँ ऐरादेवी जग प्रधान।।
जन्मे जिनके गृह में जिनेश, तव हर्ष मनाए सुर अशेष।
ऐरावत लाया इन्द्र देव, जो किया चरण की विनत सेव।। 2।।
जो पाण्डुक वन अभिषेक कीन, करके परिक्रमा विशद तीन।
मृग चिन्ह देख करके सुरेश, जो नाम दिया शांति जिनेश।।
चक्री तीर्थंकर काम देव, त्रय पद के धारी हुए एव।
इक लाख वर्ष की आयु जान, चालीस धनुष ऊँचे महान।। 3।।
शुभ जाति स्मरण कर विशेष, वैराग्य जगाए तव जिनेश।
प्रभु होकर के जग से उदास, अनुप्रेक्षा चिन्तन किए खास।।
मुनिवर की दीक्षा लिए धार, तव ध्यान लगाए निर्विकार।
फिर कर्म घातिया आप नाश, केवल्य ज्ञान कीन्हे प्रकाश।। 4।।
तव इन्द्राज्ञा पाके धनेष, कर समवशरण रचना विशेष।
तब त्रय गतियों के जीव आन, दिव्य ध्वनि सुनते हैं प्रधान।।
प्रभु कर्म अघाती कर विनाश, फिर सिद्ध शिला में करें वास।
जय-जय जयश्री शांतिनाथ, तव चरण झुकाए विशद माथ।। 5।।

दोहा - शांतिनाथ के द्वार पर, होती पूरी आस।
पूरी होगी कामना, है पूरा विश्वास।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दोहा - अर्चा करते आपकी, हे जिनवर! तीर्थेश।
गुण गाते हम भाव से, चरणों यहाँ विशेष।।

।। इत्याशीर्वाद।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

परम पूज्य आचार्य 108 श्री विशद सागर जी महाराज का अर्घ

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रथम वलय:

दोहा - पाए क्षायिक लब्धियाँ, शांतिनाथ भगवान।
शिव पथ पाए जो विशद, करते हम गुणगान।।

।। अथ प्रथम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

नौ क्षायिक लब्धियों के अर्घ्य (शम्भू छंद)

ज्ञानावरणी कर्म विनाशे, केवलज्ञान जगाए हैं।
ऐसे श्री अरहंत प्रभू पद, सादर शीश झुकाए हैं।।
तीन गती के जीव भाव से, भक्ती करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं।। 1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म विनाशक क्षायिक ज्ञानलब्धि प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरणी नाशे, क्षायिक दर्शन पाए हैं।
क्षायिक लब्धी पाने वाले, तीर्थंकर कहलाए हैं।।
तीन गती के जीव भाव से, भक्ती करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं।। 2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म विनाशक क्षायिक दर्शनलब्धि प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन मोही कर्म विनाशे, सत् सम्यक्त्व जगाए हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाए हैं।।
तीन गती के जीव भाव से, भक्ती करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं।। 3।।

ॐ ह्रीं दर्शन मोहनीय कर्म विनाशक क्षायिक सम्यक्त्व लब्धि प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित मोही कर्म विनाशे, क्षायिक चारित पाए हैं।
कर्म घातिया नाश किए प्रभु, तीर्थंकर कहलाए हैं।।
तीन गती के जीव भाव से, भक्ती करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं।। 4।।

ॐ ह्रीं चारित्र मोहनीय कर्म विनाशक क्षायिक चारित्र लब्धि प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म विनाशी अन्तराय के, पाए हैं जो क्षायिक दान।
क्षायिक लब्धी पाने वाले, तीन लोक में रहे महान्।।
तीन गती के जीव भाव से, भक्ती करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं।। 5।।

ॐ ह्रीं दान अन्तराय कर्म विनाशक क्षायिक दान लब्धि प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाभ अन्तराय कर्म विनाशे, पाए क्षायिक लाभ महान्।
पूजनीय हो गये लोक में, करते हैं जग का कल्याण।
तीन गती के जीव भाव से, भक्ती करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं।। 6।।

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्म विनाशक क्षायिक लाभ लब्धि प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोग अन्तराय कर्म विनाशे, पाए हैं जो क्षायिक भोग।
तीनों योगों के धारी के, मिटें जन्म मृत्यु के रोग।।
तीन गती के जीव भाव से, भक्ती करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं।। 7।।

ॐ ह्रीं भोग अन्तराय कर्म विनाशक क्षायिक भोग लब्धि प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय कर्मों के नाशी, पाए हैं क्षायिक उपभोग।
करके योग निरोध जिनेश्वर, पाते मुक्ती का संयोग।।
तीन गती के जीव भाव से, भक्ती करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं।। 8।।

ॐ ह्रीं उपभोग अन्तराय कर्म विनाशक क्षायिक उपभोग लब्धि प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्यान्तराय कर्म के नाशी, पाए क्षायिक वीर्य महान्।
क्षायिक लब्धी पाने वाले, करते हैं जग का कल्याण।।
तीन गती के जीव भाव से, भक्ती करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं।। 9।।

ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय कर्म विनाशक क्षायिक वीर्य लब्धि प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक नौ लब्धी जो पाए, कर्म घातिया किए विनाश।
ज्ञाता दृष्टा हुए लोक मे, कीन्हे निज आतम में वास।।
तीन गती के जीव भाव से, भक्ती करने आते हैं।
कर्म घातिया क्षय करके प्रभु, क्षायिक लब्धी पाते हैं।। 10।।

ॐ ह्रीं चतुः घातिया कर्म विनाशक क्षायिक नव लब्धि प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा - दोष अठारह से रहित, शांतिनाथ भगवान।
जिनके गुण पाने विशद, करते प्रभु का ध्यान।।

।। अथ द्वितीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

18 दोषहित जिन

क्षुधा रोग को पूर्ण नशाए, अतः प्रभू शिव पदवी पाए।
चरण पूजते हम हे स्वामी!, मुक्ती पथ के हे शिवगामी!।। 1।।

ॐ ह्रीं क्षुधादोष रहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा दोष के नाशनकारी, तीर्थंकर जिन हैं अविकारी।
चरण पूजते हम हे स्वामी!, मुक्ती पथ के हे शिवगामी!।। 2।।

ॐ ह्रीं तृषादोष रहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म दोष को खोने वाले, केवलज्ञानी होने वाले।
चरण पूजते हम हे स्वामी!, मुक्ती पथ के हे शिवगामी!।। 3।।

ॐ ह्रीं जन्मदोष रहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जरा दोष के होते नाशी, अनुपम केवलज्ञान प्रकाशी।
चरण पूजते हम हे स्वामी!, मुक्ती पथ के हे शिवगामी!।। 4।।

ॐ ह्रीं जरादोष रहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विस्मय दोष नहीं रह पाए, जो नर केवल ज्ञान जगाए।
चरण पूजते हम हे स्वामी!, मुक्ती पथ के हे शिवगामी!।। 5।।

ॐ ह्रीं विस्मयदोष रहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति दोष को पूर्ण नशाया, जिनने तीर्थंकर पद पाया।
चरण पूजते हम हे स्वामी!, मुक्ती पथ के हे शिवगामी!।। 6।।

ॐ ह्रीं अरतिदोष रहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होते खेद दोष के नाशी, बनते सिद्ध शिला के वासी।
चरण पूजते हम हे स्वामी!, मुक्ती पथ के हे शिवगामी!।। 7।।

ॐ ह्रीं खेददोष रहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग दोष सारा नश जाए, जो तीर्थंकर पदवी पाए।
चरण पूजते हम हे स्वामी!, मुक्ती पथ के हे शिवगामी!।। 8।।

ॐ ह्रीं रोगदोष रहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शोक नशाने वाले प्राणी, होते हैं शुभ केवल ज्ञानी।
चरण पूजते हम हे स्वामी!, मुक्ती पथ के हे शिवगामी!।। 9।।

ॐ ह्रीं शोकदोष रहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छंद)

मद दोष नहीं रह पाए, जो केवल ज्ञान जगाए।
वह अर्हत् पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।। 10।।

ॐ ह्रीं मददोष रहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मोह दोष को खोवें, वे केवल ज्ञानी होवें।
वह अर्हत् पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।। 11।।

ॐ ह्रीं मोहदोष रहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भय दोष नहीं रह पाये, जो केवल ज्ञान जगाये।
वह अर्हत् पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।। 12।।

ॐ ह्रीं भयदोष रहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं निद्रा दोष के त्यागी, जिन वीतराग विज्ञानी।
वह अर्हत् पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।। 13।।

ॐ ह्रीं निद्रादोष रहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता जो पूर्ण नशाएँ, वे तीर्थंकर पद पाएँ।
वह अर्हत् पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।। 14।।

ॐ ह्रीं चिंतादोष रहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु स्वेद दोष के नाशी, हो जाते शिवपुर वासी।
वह अर्हत् पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।। 15।।

ॐ ह्रीं स्वेददोष रहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो जाए राग की हानी, बन जाते केवलज्ञानी।
वह अर्हत् पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।। 16।।

ॐ ह्रीं रागदोष रहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन रहे द्वेष परिहारी, केवल ज्ञानी अविकारी।
वह अर्हत् पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।। 17।।

ॐ ह्रीं द्वेषदोष रहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मरण दोष को खोते, फिर जिन तीर्थंकर होते।
वह अर्हत् पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।। 18।।

ॐ ह्रीं मरणदोष रहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा – दोष अठारह से रहित, होते हैं भगवान।
दोष पूर्णतः नाश हों, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा – शान्तिनाथ भगवान के, गणधर हैं छत्तीस।
गुणगाते हम भाव से, चरणों में धर शीश।।

।। अथ तृतीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

छत्तिस गणधर के अर्घ्य

(छन्द जोगीरासा)

गणधर प्रथम रहा ''चक्रायुध'' दिव्य देशना पाए।
शान्तिनाथ के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाए।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, हम पूजा को लाए।
विशद भाव से शान्तिनाथ की, अर्चा करने आए।। 1।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य चक्रायुध गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''श्रृंगनाथ'' गणधर श्री जिनके, पद में शीश झुकाए।
शान्तिनाथ की भक्ती में नित, अपना ध्यान लगाए।।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, हम पूजा को लाए।
विशद भाव से शान्तिनाथ की, अर्चा करने आए।। 2।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य श्रृंगनाथ गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''सिद्धनाथ'' निज गुण की सिद्धी, पाने जिन को ध्याये।
जिन चरणों में विनय भाव से, सादर शीश झुकाए।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, हम पूजा को लाए।
विशद भाव से शान्तिनाथ की, अर्चा करने आए।। 3।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य सिद्धनाथ गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''अदिते'' गणधर की कान्ती लख, सूरज भी शर्माए।
महिमा कहने में ज्ञानी जन, ना समर्थ हो पाए।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, हम पूजा को लाए।
विशद भाव से शान्तिनाथ की, अर्चा करने आए।। 4।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य अदिते गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''अक्षत'' गणधर की कांती है, अक्षत सम शुभकारी।
चार ज्ञान पाएँ जो तुमने, है जिनवर की बलिहारी।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, हम पूजा को लाए।
विशद भाव से शान्तिनाथ की, अर्चा करने आए।। 5।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य अक्षत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिनाथ का गणधर भाई, ''दुर्योधन'' कहलाए।
भक्ती जिसकी रही अलौकिक, महिमा कही न जाए।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, हम पूजा को लाए।
विशद भाव से शान्तिनाथ की, अर्चा करने आए।। 6।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य दुर्योधन गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छन्द)

गणराज 'तपोधन' गाए, जो संयम तप अपनाए।
श्री शान्तिनाथ पद आवें, जो सादर शीश झुकावें।। 7।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य तपोधन गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल बुद्धी जो पाए, गणधर ''निर्मलोत'' कहाए।
श्री शान्तिनाथ पद आवें, जो सादर शीश झुकावें।। 8।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य निर्मलोत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर ''पाण्डू'' शुभकारी, है कांति स्वर्ण सी प्यारी।
श्री शान्तिनाथ पद आवें, जो सादर शीश झुकावें।। 9।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य पाण्डु गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गणराज ''शान्ति'' कहलाए, जो शान्ति हृदय में पाए।
श्री शान्तिनाथ पद आवें, जो सादर शीश झुकावें।। 10।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य शान्ति गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

हैं भरत क्षेत्र के वासी, गणराज ''भरत'' सुख राशी।
श्री शान्तिनाथ पद आवें, जो सादर शीश झुकावें।। 11।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य भरत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गणराज ''नवाक्ष'' कहाए, जो अक्ष जयी कहलाए।
श्री शान्तिनाथ पद आवें, जो सादर शीश झुकावें।। 12।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य नवाक्ष गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ज्यों सिंह पराक्रम पाए, गणराज ''सिंह'' ज्यों गाए।
श्री शान्तिनाथ पद आवें, जो सादर शीश झुकावें।। 13।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य सिंह गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

है कण्ठ में जिनवर वाणी, गणराज ''कंठ'' हैं ज्ञानी।
श्री शान्तिनाथ पद आवें, जो सादर शीश झुकावें।। 14।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य कंठ गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जो सुस्वर कंठ को पाए, गणराज ''सुकंठ'' कहाए।
श्री शान्तिनाथ पद आवें, जो सादर शीश झुकावें।। 15।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य सुकंठ गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''प्रहलाद'' नाम के धारी, गणधर हैं मुनि अनगारी।
श्री शान्तिनाथ पद आवें, जो सादर शीश झुकावें।। 16।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य प्रहलाद गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''चौपाई''

गणधर कहे ''दयोखिल'' भाई, जिनकी महिमा जग ने गाई।
शान्तिनाथ की जो शुभकारी, भक्ती करते मंगलकारी।। 17।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य दयोखिल गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''भुवन'' नाम गणधर का गाया, भवि जीवों के मन को भाया।
शान्तिनाथ की जो शुभकारी, भक्ती करते मंगलकारी।। 18।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य भुवन गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोष पलायन करते सारे, गणी ''पलायन'' रहे हमारे।
शान्तिनाथ की जो शुभकारी, भक्ती करते मंगलकारी।। 19।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य पलायन गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''विस्वाभर'' की महिमा न्यारी, गुण गावे यह दुनिया सारी।
शान्तिनाथ की जो शुभकारी, भक्ती करते मंगलकारी।। 20।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य विस्वाभर गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''विश्वलोक'' गणधर अविकारी, अर्चा करते जिन की प्यारी।
शान्तिनाथ की जो शुभकारी, भक्ती करते मंगलकारी।। 21।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य विश्वलोक गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''खिन्नत'' हैं गणराज निराले, रत्नत्रय शुभ पाने वाले।
शान्तिनाथ की जो शुभकारी, भक्ती करते मंगलकारी।। 22।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य खिन्नत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यू काल होय क्षय भाई, है ''क्षतकाल'' गणी सुखदायी।
शान्तिनाथ की जो शुभकारी, भक्ती करते मंगलकारी।। 23।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य क्षतकाल गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर ''लिंगन'' दोष निवारी, शिव पथ के राही अनगारी।
शान्तिनाथ की जो शुभकारी, भक्ती करते मंगलकारी।। 24।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य लिंगन गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर हैं ''बलिभद्र'' निराले, मोक्ष मार्ग दर्शाने वाले।
शान्तिनाथ की जो शुभकारी, भक्ती करते मंगलकारी।। 25।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य बलिभद्र गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''ह्मगत'' की रंगत शुभकारी, जिसमें रंगी है दुनिया सारी।
शान्तिनाथ की जो शुभकारी, भक्ती करते मंगलकारी।। 26।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य ह्मगत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धरी छन्द)

गणराज ''वकानन'' हैं महान, जो करें प्रभू का नित्य ध्यान।
श्री शान्तिनाथ जिनवर ऋषीश, जिन पद वन्दन शत् करें ईश।। 27।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य वकानन गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

उत्पन्न किए जो चार ज्ञान, ''उत्पन्न'' कहे गणधर महान।
श्री शान्तिनाथ जिनवर ऋषीश, जिन पद वन्दन शत् करें ईश।। 28।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य उत्पन्न गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर ''अनंत'' केवल मुनीश, नित झुका रहे जिन चरण शीश।
श्री शान्तिनाथ जिनवर ऋषीश, जिन पद वन्दन शत् करें ईश।। 29।।

ॐ ह्रीं श्री मत अनंत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''संश्रृत'' करते हैं नित्य ध्यान, जो पाना चाहें विशद ज्ञान।
श्री शान्तिनाथ जिनवर ऋषीश, जिन पद वन्दन शत् करें ईश।। 30।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य संश्रृत गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''संवल'' के बल का नहीं पार, जिनने संयम को लिया धार।
श्री शान्तिनाथ जिनवर ऋषीश, जिन पद वन्दन शत् करें ईश।। 31।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य संवल गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर ''कालिद'' हैं ज्ञानवंत, करने वाले हैं कर्म अंत।
श्री शान्तिनाथ जिनवर ऋषीश, जिन पद वन्दन शत् करें ईश।। 32।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य कालिद गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''उग्गवता'' तप को लिए धार, जो तप से करते कर्मक्षार।
श्री शान्तिनाथ जिनवर ऋषीश, जिन पद वन्दन शत् करें ईश।। 33।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य उग्गवता गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

''मुक्तामणि'' मोती के समान, जो प्राप्त किए हैं चार ज्ञान।
श्री शान्तिनाथ जिनवर ऋषीश, जिन पद वन्दन शत् करें ईश।। 34।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य मुक्तामणि गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर हैं ''सम्यक्नाथ'' आप, जो करें प्रभु का नाम जाप।
श्री शान्तिनाथ जिनवर ऋषीश, जिन पद वन्दन शत् करें ईश।। 35।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य सम्यक्नाथ गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कहलाए ''जिनेन्द्र'' केवल गणीश, जो धरें प्रभू पद विनत शीश।
श्री शान्तिनाथ जिनवर ऋषीश, जिन पद वन्दन शत् करें ईश।। 36।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथस्य जिनेन्द्र गणधरेभ्यो नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - शान्तिनाथ भगवान के, गणधर हैं छत्तीस।
करते हैं हम वन्दना, चरणों में धर शीश।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथस्य गणधर समूहेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा - शान्तिनाथ भगवान जी, हैं छियालिस गुणवान।
जिनकी अर्चा कर विशद, पाएँ शिव सोपान।।

।। अथ चतुर्थ वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

10 जन्म के अतिशय

(चौपाई)

दश अतिशय जनमत जिन पाय, पूजत सुर नर हर्ष मनाय।
स्वेद रहित जिनवर तन पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।। 1।।

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशयधारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल नहिं होय प्रभू तन मांहि, निर्मल रही देह सुख दाय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।। 2।।

ॐ ह्रीं निहार रहित सहजातिशयधारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम चतुष्क संस्थान जो पाय, हीनाधिक तन होवे नाय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।। 3।।

ॐ ह्रीं सम चतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

संहनन वज्र वृषभ जो होय, अद्भुत शक्ती धारे सोय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।। 4।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशयधारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

परम सुगंधित पाते देह, भव्य जीव सब पावें स्नेह।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।। 5।।

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशयकारी सुंदर रूप, फीके पड़ें जगत् के भूप।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।। 6।।

ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशयधारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्षण एक सहस हैं आठ, सहस नाम जो पढ़ते पाठ।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।। 7।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट शुभ लक्षण सहजातिशयधारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

श्वेत रक्त प्रभु के तन होय, वात्सल्य महिमा युत सोय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।। 8।।

ॐ ह्रीं श्वेत रक्त सहजातिशयधारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित मित प्रिय वचन सुखदाय, सुनकर हर प्राणी सुख पाय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।। 9।।

ॐ ह्रीं प्रियहित वचन सहजातिशयधारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बल अतुल्य पाये जिनदेव, जग के जीव करें पद सेव।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।। 10।।

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशयधारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान के 10 अतिशय

(अडिल्ल छंद)

अतिशय जिनवर केवलज्ञान के, दश कहे।
योजन शत् इक में, सुभिक्षता ही रहे।।

केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।। 11।।

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञानी होय, गमन नभ में करें।
प्रभू चले जिस ओर, देवगण अनुसरें।।
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।। 12।।

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षयजातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिनवर का हो गमन, सदा हितदाय जी।
तिस थानक नहिं कोई, मारने पाय जी।।
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।। 13।।

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षयजातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर पशु जड़ कृत उपसर्ग, चऊ कहे।
इनकी बाधा प्रभु के, ऊपर नहीं रहे।।
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।। 14।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षयजातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा आदि की पीड़ा से, जग दुख सह्यो।
सो जिन कवलाहार, जान सब पर हर्यो।।
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।। 15।।

ॐ ह्रीं कवलाहाराभाव घातिक्षयजातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समवशरण में श्री जिनवर, स्थित कहे।
पूर्व दिशा मुख होय, चतुर्दिक दिख रहे।।

केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।। 16।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुख घातिक्षयजातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राकृत संस्कृत सकल, देश भाषा कही।
सब विद्या अधिपत्य, सकल जानत सही।।
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।। 17।।

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वरत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मूर्तिक तन पुद्गल के अणु से, बन रह्यो।
पड़े नहीं छाया महा, अचरज भयो।।
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।। 18।।

ॐ ह्रीं छाया रहित घातिक्षयजातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर के नख केश, नाहिं वृद्धी करें।
ज्यों के त्यों ही रहें, प्रभू यह गुण धरें।।
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।। 19।।

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नेत्रों ने टिमकार, केश भौं नहिं हिलें।
दृष्टी नाशा रहे, कोई हेतू मिलें।।
केवलज्ञान का अतिशय, जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में, शीश झुकाए हैं।। 20।।

ॐ ह्रीं अक्षस्पंद रहित घातिक्षयजातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

14 देवकृत अतिशय

(दोहा) **अतिशय देवों कृत कहे, चौदह सर्व महान्।**
सर्व जीव को सुख करे, अर्धमागधी वान।। 21।।

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधीय भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जीवों में मैत्री रहे, जहँ जिन की थिति होय।
देव निमित्तक जानिए, अतिशय जिनके जोय।। 22।।

ॐ ह्रीं सर्व जीव मैत्रीभाव देवोपनीतातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फूल फलें षट् ऋतू के, जहँ जिन की थिति होय।
देवों का तो निमित्त है, अतिशय जिनका सोय।। 23।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरु परिणाम देवोपनीतातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पणवत् भूमी रहे, जहँ जिन करें विहार।
अतिशय देवों कृत रहा, होय मंगलाचार।। 24।।

ॐ ह्रीं आदर्शतल प्रतिमा रत्नमही देवोपनीतातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंद सुगंधित शुभ सुखद, पुनि-पुनि चले बयार।
अतिशय श्री जिनदेव का, करता मंगलकार।। 25।।

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जीव आनंदमय, होवें मंगलकार।
अतिशय होवे यह परम, प्रभु का होय विहार।। 26।।

ॐ ह्रीं सर्वानंद कारक देवोपनीतातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अतिशय से जिनदेव के, भू गत कंटक होय।
ये अतिशय भी जहाँ में, देव निमित्तक सोय।। 27।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधोदक की वृष्टि हो, अतिशय करते देव।
महिमा यह जिनदेव की, सेवा करें सदैव।। 28।।

ॐ ह्रीं मेघकुमार कृत गंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव रचें पद तल कमल, गगन गमन जब होय।
अतिशय श्री जिनदेव का, देव निमित्तक सोय।। 29।।

ॐ ह्रीं चरण कमल तल रचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखकारी सब जीव को, निर्मल दिश आकाश।
देव करें भक्ती विमल, अतिशय जिन सुख राश।। 30।।

ॐ ह्रीं गगन निर्मल देवोपनीतातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धूम मेघ वर्जित सुभग, सब दिश निर्मल होय।
देव करें भक्ती परम, अतिशय जिन का जोय।। 31।।

ॐ ह्रीं सर्व दिशा निर्मल देवोपनीतातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भक्ती के वश देव शुभ, करते जय-जयकार।
पृथ्वी से आकाश तक, होवे मंगलकार।। 32।।

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्वाण्ह यक्ष आगे चले, धर्म चक्र धर शीश।
अतिशय श्री जिनदेव का, चरण झुकें शत् ईश।। 33।।

ॐ ह्रीं धर्म चक्र चतुष्टय देवोपनीतातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

मंगल द्रव्य वसु देवगण, लेकर चलते साथ।
अतिशय कर सुर नर सभी, चरण झुकाते माथ।। 34।।

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशय धारक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपा. स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

(चौपाई छन्द)

तरु अशोक है मंगलकारी, जो है सारे शोक निवारी।
प्रातिहार्य अतिशय कहलाए, श्री जिनवर की महिमा गाए।। 35।।

ॐ ह्रीं तरु अशोक सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न जड़ित सिंहासन जानो, जिसपे जिनवर सोहें मानो।
प्रातिहार्य अतिशय कहलाए, श्री जिनवर की महिमा गाए।। 36।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षत्र त्रय सिर पे शुभ गाए, त्रिभुवन पति जिन जी कहलाए।
प्रातिहार्य अतिशय कहलाए, श्री जिनवर की महिमा गाए।। 37।।

ॐ ह्रीं छत्र त्रय सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भामण्डल आभा दर्शाए, सप्त भवों को जो दर्शाए।
प्रातिहार्य अतिशय कहलाए, श्री जिनवर की महिमा गाए।। 38।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐकार भयौ श्री जिनवाणी, भवि जीवों की है कल्याणी।
प्रातिहार्य अतिशय कहलाए, श्री जिनवर की महिमा गाए।। 39।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव दुन्दुभि विस्मय कारी, आकर्षित करती मनहारी।
प्रातिहार्य अतिशय कहलाए, श्री जिनवर की महिमा गाए।। 40।।

ॐ ह्रीं देव दुंदुभि सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चँवर ढौरते पक्ष निराले, प्रभुता विशद दिखाने वाले।
प्रातिहार्य अतिशय कहलाए, श्री जिनवर की महिमा गाए।। 41।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि चँवर सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प दृष्टि कर सुर हर्षाएँ, प्रभु की जयजय कार लगाएँ।
प्रातिहार्य अतिशय कहलाए, श्री जिनवर की महिमा गाए।। 42।।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य सहिताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत चतुष्टय के अर्घ्य

(शम्भू छंद)

तीन काल अरु तीन लोक की, सर्व वस्तु के ज्ञाता हैं।
एक साथ सब कुछ दर्शायक, ज्ञानी आप विधाता हैं।।
ज्ञानावरणी का क्षय करके, केवलज्ञान को पाया है।
गुण अनंत की प्राप्ती हेतू, चरणों शीश झुकाया है।। 43।।

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान गुण प्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व लोक के द्रव्य चराचर, उन सबके दर्शायक हैं।
दर्श अनंत के धारी प्रभुवर, सर्व जगत् में लायक हैं।।
कर्म दर्शनावरणी क्षय कर, दर्श अनंत उपजाया है।
गुण अनंत की प्राप्ती हेतू, चरणों शीश झुकाया है।। 44।।

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन गुण प्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंत रहित अंतर से वर्जित, सुख अनंत को पाया है।
'विशद' गुणों को पाने हेतू, आतमध्यान लगाया है।।
महामोह का क्षय कर प्रभु ने, इन्द्रियातीत सुख पाया है।
गुण अनंत की प्राप्ती हेतू, चरणों शीश झुकाया है।। 45।।

ॐ ह्रीं अनन्त सुख गुण प्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतम बल से प्रभु तुमने, बल अनंत प्रगटाया है।
जो बल पाया है प्रभु तुमने, उसका शुभ भाव बनाया है।।
अंतराय का छेदन करके, वीर्य अनंत उपजाया है।
गुण अनंत की प्राप्ती हेतू, चरणों शीश झुकाया है।। 46।।

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य गुण प्राप्ताय श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंतिस अतिशय पाए प्रभु जी, अनन्त चतुष्टय के धारी।
प्रातिहार्य वसु पाने वाले, हुए आप मंगल कारी।।
छियालिस मूल गुणों के धारी, तीर्थंकर पद पाए हैं।
विशद शांति को हम भी पाए, नाथ शरण में आए हैं।।

ॐ ह्रीं षट् चत्त्वारिंशद मूल गुण सहित श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय जाप - ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत शांतिकराय सर्वोपद्रव शांतिं कुरु कुरु ह्रीं नमः स्वाहा।

जयमाला

दोहा - महिमा गाने आपकी, हुए आज वाचाल।
शांतिनाथ भगवान की, गाते हम जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

श्री शांतिनाथ की पूजा से, जीवों को शांती मिलती है।
जो श्रद्धा भक्ती हृदय धरें, तो ज्ञान रोशनी खिलती है।।

प्रभू पूर्व भवों में भी तुमने, सद् संयम को अपनाया था।
सर्वार्थ सिद्धि के सुख भोगे, ये पुण्य का ही फल पाया था।। 1।।
तैंतिस सागर की आयुपूर्ण, करके तुमने अवतार लिया।
श्री हस्तिनागपुर में माता, ऐरादेवी को धन्य किया।।
शुभ ज्येष्ठ वदी चौदश अनुपम, बालक ने भूपर जन्म लिया।
तब इन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्रों ने, उत्सव आकर के महत् किया।। 2।।
सौधर्म इन्द्र ने बालक का, पाण्डुक वन में अभिषेक किया।
फिर शची ने चंदन चर्चित कर, बालक के तन को पोंछ दिया।।
दाँये पग में लख हिरण चिन्ह, सौधर्म इन्द्र ने उच्चारा।
यह शांतिनाथ हैं तीर्थंकर, बोलो सब मिलकर जयकारा।। 3।।
अनुक्रम से वृद्धी को पाकर, फिर युवा अवस्था को पाया।
लखकर स्वरूप प्रभु के तन का, तब कामदेव भी शर्माया।।
फिर शांतिराज भी हुए विशद, श्री कामदेव पद के धारी।
बन गये चक्रवर्ती जिनवर, शुभ चक्र रत्न के अधिकारी।। 4।।
छह खण्ड राज्य का भोग किया, पर योग मयी न हो पाए।
भोगों से भोगे गये स्वयं, पर भोग पूर्ण न जो गाए।।
यह सोच हृदय में आने से, वैराग्य भाव मन में आया।
शुभ ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी, को संयम प्रभु ने अपनाया।। 5।।
फिर ध्यान अग्नि से कर्म चार, प्रभु कर्म घातिया नाश किए।
फिर पौष शुक्ल की दशमी को, शुभ केवल ज्ञान प्रकाश किए।।
श्री शांतिनाथ तीर्थंकर जिन, सोलहवे जग में कहलाए।
प्रभुस मवशरणउ पदेशर् दिए,त बस ुननेभ व्यज ीवअ ाए।।6 ।।
वह श्रद्धा ज्ञानावरण प्राप्त, कर मोक्ष मार्ग को अपनाए।
पूजा भक्ती कर भाव सहित, श्री जिनवर की महिमा गाए।।
फिर ज्येष्ठ कृष्ण की चौदश को, प्रभु कर्म अघाती नाश किए।
श्री विश्व हितंकर शांतिनाथ, जिन मोक्ष महल में वास किए।। 7।।

प्रभु की महिमा जग में अनुपम, जिसका कोई और न छोर कहीं।
शांती का दाता अवनी पर, हे नाथ! आप सम कोई नहीं।।
भक्ति से मुक्ती मिलती है, यह आज समझ में आया है।
जीवन का पाया राज अहा, जब से तव दर्शन पाया है।। 8।।
श्री शांतिनाथ की पूजा कर, कई लोगों ने फल पाया है।
दुखियों के दुख नश गये पूर्ण, उनने सौभाग्य जगाया है।।
हम पूजा करने हेतु विशद, यह द्रव्य मनोहर लाए हैं।
दो मुक्ति हमे भव सागर से, यह फल पाने को आए हैं।। 9।।

दोहा - कामदेव चक्रेश अरू, जिन तीर्थेश महान।
तीन-तीन पद धार कर, शिवपुर किया प्रयाण।।

ॐ ह्रीं सर्व संकट हारी परम शांतिदायक श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - शान्ति जिन के नाम का, करो 'विशद' तुम जाप।
चरण कमल की भक्ति से, कट जायेंगे पाप।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्य जातास्तत् शिष्य श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्य जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्ते जयपुर नाम नगरे वी निर्वाण सम्वत् 2542 वि.सं. 2072 मासे मगसिर पक्षे रवि वासरे श्री शांतिनाथ विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

श्री शान्तिनाथ भगवान की आरती

शांतिनाथ दरबार है, अनुपम विस्मयकार है।
श्री जिनेन्द्र की आज यहाँ पर, हो रही जयकार है।।
शांतिनाथ दरबार है.....।। टेक।।

चयकर के सर्वार्थ सिद्धि से, हस्तिनागपुर जन्म लिए-2
विश्वसेन माँ ऐरादेवी, को आकर प्रभु धन्य किए-2
शांतिनाथ दरबार है.....।। 1।।

चालिस धनुष रही ऊँचाई, स्वर्ण रंग शुभ पाए जी-2
एक लाख वर्षों की आयू, चिह्न हिरण प्रगटाए जी-2
शांतिनाथ दरबार है.....।। 2।।

कामदेव चक्री तीर्थंकर, हुए तीन पद धारी जी-2
जग वैभव सब छोड़ प्रभू जी, हुए आप अनगारी जी-2
शांतिनाथ दरबार है.....।। 3।।

भादों बदी सप्तमी को सुर, गर्भ कल्याण मनाए जी-2
ज्येष्ठ कृष्ण चौदस को सुरनर, जन्मोत्सव में आए जी-2
शांतिनाथ दरबार है.....।। 4।।

ज्येष्ठ कृष्ण की चतुर्दशी को, मुनिवर दीक्षा पाए जी-2
पौष शुक्ल दशमी को स्वामी, केवल ज्ञान जगाए जी-2
शांतिनाथ दरबार है.....।। 5।।

ज्येष्ठकृ ष्णच ौदसक ोस् वामी,स म्मेदाचलअ ाएज ी-2
कर्म नाश कर अपने सारे, ''विशद'' मोक्ष पद पाए जी-2
शांतिनाथ दरबार है.....।। 6।।

श्री शान्तिनाथ भगवान चालीसा

दोहा - परमेष्ठी जिन धर्म जिन, आगम मंगलकार।
जिन चैत्यालय चैत्य को, वन्दन बारम्बार।।
तीर्थंकर श्री शांति जिन, का करते गुणगान।
चालीसा गाते विशद, करके चरण प्रणाम।।

(चौपाई)

जम्बूद्वीप में क्षेत्र बताया, भरत क्षेत्र अनुपम कहलाया।। 1।।
भारत देश रहा शुभकारी, जिसकी महिमा जग में न्यारी।। 2।।
नगर हस्तिनापुर के स्वामी, विश्वसेन राजा थे नामी।। 3।।
रानी ऐरादेवी पाए, जिनके सुत शांति जिन गाए।। 4।।
माँ के गर्भ में प्रभु जब आए, रत्नवृष्टि तब देव कराए।। 5।।
भादव कृष्ण सप्तमी जानो, शुभ नक्षत्र भरणी पहिचानो।। 6।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश शुभकारी, मेष राशि जानो मनहारी।। 7।।
जन्म प्रभु जी ने जब पाया, देवराज ऐरावत लाया।। 8।।
शचि ने प्रभु को गोद उठाया, फिर ऐरावत पर बैठाया।। 9।।
पाण्डुक वन अभिषेक कराया, सहस्र नेत्र से दर्शन पाया।। 10।।
पग में हिरण चिह्न शुभ गाया, शांतिनाथ तब नाम कहाया।। 11।।
पंचम चक्रवर्ती कहलाए, कामदेव बारहवें गाए।। 12।।
तीर्थंकर सोलहवें जानो, यथा नाम गुणकारी मानो।। 13।।
नव निधियों के स्वामी गाये, चौदह रत्न श्रेष्ठ बताए।। 14।।
सहस्र छियानवे रानी गाए, छह खण्डों पर राज्य चलाए।। 15।।
नीतिवन्त हो राज्य चलाया, दुखियों का सब दुःख मिटाया।। 16।।
सूर्य वंश के स्वामी गाए, सारे जग में यश फैलाए।। 17।।
जाति स्मरण प्रभु को आया, महाव्रतों को प्रभु ने पाया।। 18।।
स्वर्गों से लौकान्तिक आये, अनुमोदन कर हर्ष मनाए।। 19।।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, हुए दिगम्बर मुनि अविकारी।। 20।।
एक लाख राजा संग आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।। 21।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि जानो, तप कल्याण प्रभु का मानो।।22।।

आत्म ध्यान कीन्हे तब स्वामी, किये निर्जरा अन्तर्यामी।। 23।।
पौष सुदी दशमी शुभ आई, केवलज्ञान की ज्योति जलाई।। 24।।
समवशरण आ देव बनाए, प्रभु की जय जयकार लगाए।। 25।।
दिव्य देशना आप सुनाए, धर्म ध्वजा जग में फहराए।। 26।।
छत्तिस गणधर प्रभु जी पाए, प्रथम गणी चक्रायुध गाए।। 27।।
यक्ष गरूण जानो तुम भाई, यक्षी श्रेष्ठ मानसी गाई।। 28।।
योग निरोध किए जगनामी, गुण अनन्त पाये जिन स्वामी।। 29।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि जानो, गिरि सम्मेद शिखर से मानो।।30।।
नौ सौ मुनि श्रेष्ठ बतलाए, साथ में प्रभु के मुक्ती पाए।। 31।।
महामोक्ष फल तुमने पाया, शिवपुर अपना धाम बनाया।। 32।।
कूट कुन्द प्रभ जानो भाई, कायोत्सर्गासन शुभ गाई।। 33।।
शांतिनाथ शांती कर गाए, अतिशय जो भारी दिखलाए।। 34।।
जो भी अर्चा करते भाई, अर्चा होती है फलदायी।। 35।।
कई लोगों ने शुभ फल पाए, रोक शोक दारिद्र नशाए।। 36।।
शांतिनाथ शांति के दाता, तीन लोक में भाग्य विधाता।। 37।।
भाव सहित प्रभु को जो ध्याये, इच्छित फल वह मानव पाए।। 38।।
पूजा अर्चा कर जो ध्यावें, सुख शांति सौभाग्य जगावे।। 39।।
'विशद' भाव से जिन गुण गाएँ, हम भी शिव पदवी को पाएँ।।40।।

दोहा - चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख शांति आनन्द पा, बने श्री का नाथ।।
दीन दरिद्री होय जो, या हो पुत्र विहीन।
सुत पावे धन सम्पदा, होवे ज्ञान प्रवीण।।

श्री आदिनाथ विधान

माण्डला

मध्य - ॐ
प्रथम कोष्ठ - 5
द्वितीय कोष्ठ - 10
तृतीय कोष्ठ - 20
चतुर्थ कोष्ठ - 46
कुल अर्घ्य : 81

रचयिता :
प. पू. क्षमामूर्ति 108
आचार्य श्री विशदसागर जी

श्री आदिनाथ जिन स्तवन

दोहा - धर्म प्रवर्तन कर हुए, आप धर्म के ईश।
अतः आपके पद युगल, झुका रहे हम शीश।।

(ज्ञानोदय-छन्द)

सत्त्व हितैषी स्वयंभूत है, जिनका नेत्र समंजस ज्ञान।
वस्तु तत्त्व के निर्णायक 'शुभ, जिस विभूति से हैं अम्लान।।
अन्धकार नाशी किरणों युत, जैसे सोहे निशि में चन्द।
गुण समूह युत उसके जैसा, सदा विराजित वसुधानन्द।। 1।।
कृषि आदिक का प्रजा जनो को, दिया जीविकोचित उपदेश।
अतः आप कहलाए जग में, प्रथम प्रजा स्वामी परमेश।।
तत्त्व बोध को पाने वाले, अद्भुत उदयी हे धी मान!।
त्याग ममत्व हुए वैरागी, पाए उज्ज्वल केवल ज्ञान।। 2।।
जिन इक्ष्वाकू कुलाग्रणी ने, किया बन्धुजन का ज्यों त्याग ।
सागर वसना वसुधा का भी, त्याग किए है त्यों अनुराग।।
सहनशील वे अच्युत जिनवर, दीक्षा ले सन्यास लिए।
आत्मभाव उन शिवगामी को, सभी पुनीत प्रशस्त किए।। 3।।
ज्वाला में झौंके समाधि की, निज दोषों के करण सर्व।
जलकर भस्म हुए जो निर्मम, कर्म निषेक सभी निर्गर्व।।
जिज्ञासू जीवों को जग में, दिए तत्त्व का जो उपदेश।
हुए दयामय आप स्वयं ही, परम ब्रह्मधारी सर्वेश।। 4।।
विश्व नेत्र हे वृष के कर्त्ता!, सत्पुरुषों में पूज्य प्रधान।
विविधामय तन के धारी प्रभु, परम निरंजन हे भगवान!।।
क्षुद्र वादियों के शासन का, विजयी जिनका है सद्ज्ञान।
करें नाभिनन्दन वे मेरा, चित्त पुनीत और अम्लान।। 5।।

दोहा - आप स्वयंभू हो किए, जग जन का कल्याण।
अतः आपके पद युगल, करें विशद गुणगान।।

।। इत्याशीर्वाद।।

श्री आदिनाथ पूजा (गुरुवार)

स्थापना

प्रथम तीर्थंकर इस युग के हैं, ऋषभनाथ है जिनका नाम।
धर्मचक्र का किए प्रवर्तन, जिनके चरणों विशद प्रणाम।।
षट्कर्मों के उपदेशक जो, तीन लोक में हुए महान।
हृदय कमल के सिंहासन पर, जिनका हम करते आह्वान।।
दोहा - पूजा करते आपकी, शुभ भावों के साथ।
कृपावंत हो भक्त के, हृदय पधारो नाथ!।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

पूजा (सखी छन्द)

यह कलश में जल भर लाए, जल धार कराने आए।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

केशर चन्दन में गारा, भव ताप नाश हो सारा।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत से पूजा रचाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, हम काम रोग विनशाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाने लाए, अब क्षुधा नशाने आए।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

है मोह कर्म का नाशी, ये दीपक ज्ञान प्रकाशी।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल सरस चढ़ाने लाए, मुक्ती फल पाने आए।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

वसु द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यम् निर्व. स्वाहा।

दोहा - शांतीधारा जो करें, पावें शांति अपार।
शिवपद के राही बनें, होवें भव से पार।।

।। शान्तये-शान्तिधारा ।।

दोहा - पुष्पांजलि करते विशद, लेकर पावन फूल।
कर्म अनादी से लगे, हो जावें निर्मूल।।

।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत।।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चौपाई)

दूज कृष्ण अषाढ़ की जानो, गर्भ कल्याणक पाएँ मानो।
आदिनाथ जी को हम ध्याएँ, अपने सारे कर्म नशाए।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नौमी शुभकारी, जन्में तीर्थंकर अवतारी।
आदिनाथ जी को हम ध्याएँ, अपने सारे कर्म नशाए।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत कृष्ण नौमी को स्वामी, दीक्षा पाए शिव पथ गामी।
आदिनाथ जी को हम ध्याएँ, अपने सारे कर्म नशाए।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि एकादशि गाए, कर्म नाशकर ज्ञान जगाए।
आदिनाथ जी को हम ध्याएँ, अपने सारे कर्म नशाए।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां केवलज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ कृष्ण चौदश तिथि पाए, सिद्ध शिला पर धाम बनाए।
आदिनाथ जी को हम ध्याएँ, अपने सारे कर्म नशाए।।5।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - आदिनाथ भगवान की, महिमा रही विशाल।
भाव सहित जिनकी यहाँ, गाते हम जयमाल।।

(ज्ञानोदय छन्द)

तीन लोक के ज्ञाता जिनवर, वीतराग पद धारी हैं।
दोष अठारह रहित जिनेश्वर, निजानंद अविकारी हैं।।
आदि ब्रह्म आदीश आदि जिन, आदि सृष्टि के हैं कर्त्ता।
नमन् करूँ अरहंत प्रभू को, मुक्ति वधू के जो भर्त्ता।। 1।।
वृषभनाथ है नाम आपका, वृषभ चिन्ह के धारी हैं।
वृषभ धर्म को पाने वाले, आतम ब्रह्म विहारी हैं।।
असि मसि कृषि वाणिज्य कला अरु, शिल्प कला के दाता हैं।
जगती को आलोकित करते, जग के भाग्य विधाता हैं।। 2।।
हे कर्मभूमि के अधिनायक!, प्रभु जग के करुणाकारी हैं।
जो जिनवाणी के अधिपति हैं!, प्रभु तीर्थंकर अवतारी हैं।।
हे परम शांत! पावन पुनीत, हे कृपा सिंधु! करुणा निधान।
हे ऋषभदेव तव चरणों में, मम भाव सहित शत्-शत् प्रणाम्।।3।।
हे महिमा! मण्डित गुण निधान, हे अक्षय! जीवन ज्योतिधाम।
हे मोक्ष पंथ! के उन्नायक, प्रभु जन जन के अमृत ललाम्।।
हे अजर अमर सृष्टी कर्त्ता! हे परम पिता! हे परम ईश!
हे आदि विधाता! युग दृष्टा, हे मुक्ती पथ पंथी मुनीश!।। 4।।

तुम इन्द्रिय मन को जीत लिए, प्रभु जी जितेन्द्रिय कहलाए।
निज चेतन रस में लीन हुए, आतम स्वरूप को प्रभु ध्याए।।
हे जग उद्धारक! जगत पती, हे जिनवर! आदीश्वर स्वामी!।
सब बोल रहे हैं जयकारा, हे ऋषभदेव अंतर्यामी!।। 5।।

दोहा - पूजा करते आपकी, आदिनाथ भगवान।
विशद भाव से गा रहे, जिनका हम जयगान।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - तीर्थंकर श्री आदि जिन, पावन परम पुनीत।
भाव सहित जो पूजते, प्रभु हों उनके मीत।।

।। इत्याशीर्वादः।।

प्रथम वलयः

दोहा - सम्यक् चारित पंच शुभ, धारे आदि जिनेश।
कर्म नाश कर शिव गये, धार दिगम्बर भेष।।

।। प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(पाँच प्रकार का चारित्र)

समता भाव कहा सामायिक, धारण करते जो ऋषिराज।
कर्म नाशकर होते अर्हत्, जिन की अर्चा करते आज।।1।।

ॐ ह्रीं सामायिक चारित्र प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संयम छेद होय फिर संयम, में दृढ़ता धारें मुनिराज।
छेदोपस्थापना चारित धरके, अर्हत हो पावे शिवराज।।2।।

ॐ ह्रीं छेदोपस्थापना चारित्र प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तीर्थंकर के पाद मूल में, करें साधना ऋषी प्रधान।
परिहार विशुद्धी संयम धर के, अर्हत् होवें पूज्य महान।।3।।

ॐ ह्रीं परिहार विशुद्धी चारित्र प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सर्व कषाएँ नाश करें फिर, सूक्ष्म साम्पराय चारित वान।
अर्हत् पदवी को पाते हैं, जिन का भव्य करें गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्म साम्पराय चारित्र प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रहा आत्मा का स्वभाव जो, यथाख्यात चारित्र प्रधान।
अर्हत् पाते हैं चारित यह, पूज्य लोक में कहे महान।।5।।

ॐ ह्रीं यथाख्यात चारित्र प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच भेद चारित के धारी, प्रगटाते हैं केवलज्ञान।
तीन लोक में पूज्य जिनेश्वर, प्राप्त करें जो पद निर्वाण।।6।।

ॐ ह्रीं पंच चारित्र प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा - आदिनाथ जिनराज पद, पूज रहे हम आज।
पुष्पांजलि करते विशद, पाने धर्म स्वराज।।

।। द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

दश धर्म के अर्घ्य

(चौपाई छन्द)

अन्दर में समता उपजाई, क्रोध नहीं जो करते भाई।
उत्तम क्षमा धर्म के धारी, मुनिवर हैं जग में उपकारी।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मधारी श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में अहंकार न आवे, प्राणी समता भाव जगावे।
मार्दव धर्म हृदय में धारें, धर्म ध्वजा को हाथ सम्हारें।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्म प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कुटिल भाव मन में न आवे, सरल भाव प्राणी उपजावे।
आर्जव धर्म हृदय में धारें, धर्म ध्वजा को हाथ सम्हारें।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्म प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिसके मन मूर्छा न आवे, जो संतोष भाव को पावे।
उत्तम शौच हृदय में धारें, धर्म ध्वजा को हाथ सम्हारें।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कहे वचन जो मन में होवे, असत् वचन की सत्ता खोवे।
उत्तम सत्य हृदय में धारें, धर्म ध्वजा को हाथ सम्हारें।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इन्द्रिय मन जीते सुखदायी, प्राणी रक्षा करते भाई।
वे हैं उत्तम संयम धारी, जन-जन के हैं करुणाकारी।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इच्छाओं को तजने वाले, द्वादश तप को तपने वाले।
वे हैं उत्तम तप के धारी, जन जन के हैं करुणाकारी।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्म प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पर द्रव्यों से राग हटावें, मन में समता भाव जगावें।
उत्तम त्याग धर्म के धारी, तन मन से होते अविकारी।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

किंचित् मन में राग न होवे, सारी इच्छाओं को खोवे।
वह हैं आकिंचन व्रतधारी, जन जन के हैं करुणाकारी।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन धर्म प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो हैं काम भोग के त्यागी, परम ब्रह्म के हैं अनुरागी।
वे है ब्रह्मचर्य व्रतधारी, जन जन के हैं करुणाकारी।।10।।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चित् चेतन को ध्याने वाले, निज आतम के हैं रखवाले।
उत्तम क्षमा आदि व्रतधारी, मोक्ष महल के हैं अधिकारी।।11।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमादि दश धर्म प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तृतीय वलयः

स्थापना

दोहा - जीवों में त्रय लोक के, दोष अनन्तानन्त।
कर्म घातिया नाश कर, पाये भव का अन्त।।

।। तृतिय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अठारह दोष, मिथ्यात्व, वेद रहित प्रभु

(रोला छन्द)

क्षुधा व्याधि से घात, जग जीवों का होवे।
संज्ञा होय आहार, आतम के गुण खोवे।।
विशद भाव के साथ, भक्ती कर दोष नशावें।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष फल प्राणी पावें।।1।।

ॐ ह्रीं क्षुधा दोष विनाशक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा वेदना व्याप्त, जग जीवों के होवे।
तन में पीड़ा होय, हृदय की शांति खोवे।
विशद भाव के साथ, भक्ति कर दोष नसावें।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष फल प्राणी पावें।।2।।

ॐ ह्रीं तृषा दोष विनाशक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लगे जीव के साथ, सप्त महाभयभारी।
संयम तप से नाश, मुनि करते अविकारी।।
विशद भाव के साथ, भक्ति कर दोष नसावें।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष फल प्राणी पावें।।3।।

ॐ ह्रीं सप्त भय दोष विनाशक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्ता चिता समान, जिसको भी लग जावे।
करती जीवन हानि, जीवित उसे जलावे।।
विशद भाव के साथ, भक्ति कर दोष नसावें।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष फल प्राणी पावें।।4।।

ॐ ह्रीं चिन्ता दोष रहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जर्जर करती देह, जरा जीवों को आकर।
शिथिल करे सब अंग, वृद्ध अवस्था पाकर।।
विशद भाव के साथ, भक्ति कर दोष नसावें।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष फल प्राणी पावें।।5।।

ॐ ह्रीं जरा दोष रहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ प्राणों के साथ, प्राणी जीवन पावे।
प्राण छूटते साथ, जीव का मरण कहावे।।
विशद भाव के साथ, भक्ति कर दोष नसावें।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष फल प्राणी पावें।।6।।

ॐ ह्रीं मरण दोष रहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जले राग की आग, सारे सुगुण जलावें।
हो प्रभु से अनुराग, जग से मुक्ति पावें।।
विशद भाव के साथ, भक्ति कर दोष नसावें।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष फल प्राणी पावें।।7।।

ॐ ह्रीं राग दोष रहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह महाबलवान, कोइ भी जीत न पावे।
जीते जो बलवान, वही महावीर कहावे।।
विशद भाव के साथ, भक्ति कर दोष नसावें।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष फल प्राणी पावें।।8।।

ॐ ह्रीं मोह दोष रहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरे करोड़ों रोग, जहाँ प्राणी के तन में।
पाते हैं बहु क्लेश, स्वयं अपने जीवन में।।
विशद भाव के साथ, भक्ति कर दोष नसावें।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष फल प्राणी पावें।।9।।

ॐ ह्रीं रोग दोष रहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से बहकर स्वेद, करे तन मन को आकुल।
पावें केवलज्ञान, स्वेद बिन रहे निराकुल।।
विशद भाव के साथ, भक्ति कर दोष नसावें।
पाकर केवल ज्ञान, मोक्ष फल प्राणी पावें।।10।।

ॐ ह्रीं स्वेद दोष रहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रम करके जग जीव, स्वयं की शांती खोवे।
करे कर्म का नाश, कभी फिर खेद न होवे।।
विशद भाव के साथ, करें जो भक्ती प्राणी।
मिले मोक्ष का द्वार, कहे यह जिनवर वाणी।।11।।

ॐ ह्रीं खेद दोष रहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे महामद आठ, मान जग में उपजावें।
करें मान की हान, जीव वह मुक्ति पावें।।
विशद भाव के साथ, करें जो भक्ती प्राणी।
मिले मोक्ष का द्वार, कहे यह जिनवर वाणी।।12।।

ॐ ह्रीं मद दोष रहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रही दोष से प्रीत, उपजती पर प्राणी से।
जानो इसका दोष, बन्धू जिनवाणी से।।
विशद भाव के साथ, करें जो भक्ती प्राणी।
मिले मोक्ष का द्वार, कहे यह जिनवर वाणी।।13।।

ॐ ह्रीं रति दोष रहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कौतूहल को देख, करें, जो विस्मय भारी।
स्थिर न हो ध्यान, रहें न वे अनगारी।।
विशद भाव के साथ, करें जो भक्ती प्राणी।
मिले मोक्ष का द्वार, कहे यह जिनवर वाणी।। 14।।

ॐ ह्रीं विस्मय दोष रहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रा के वश जीव, स्वयं को जान न पावे।
निद्रादिक का नाश, किए निज में रम जावे।।
विशद भाव के साथ करें जो भक्ती प्राणी।
मिले मोक्ष का द्वार, कहे यह जिनवर वाणी।। 15।।

ॐ ह्रीं निद्रा दोष रहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म अनन्तों बार, पाय पाए दुख भारी।
कर्म नाशकर जीव, स्वयं होते अविकारी।।
विशद भाव के साथ, करें जो भक्ती प्राणी।
मिले मोक्ष का द्वार, कहे यह जिनवर वाणी।। 16।।

ॐ ह्रीं जन्म दोष रहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति दोष के साथ, रहे मन भी अतिभारी।
मन में हो संताप, दुखी होवें नर नारी।।
विशद भाव के साथ, करें जो भक्ती प्राणी।
मिले मोक्ष का द्वार, कहे यह जिनवर वाणी।। 17।।

ॐ ह्रीं अरति दोष रहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाक्रोध की अग्नि, मन में द्वेष जगावे।
तज के ईर्ष्या द्वेष, चेतन में रम जावे।।
विशद भाव के साथ, करें जो भक्ती प्राणी।
मिले मोक्ष का द्वार, कहे यह जिनवर वाणी।। 18।।

ॐ ह्रीं द्वेष दोष रहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करता है मिथ्यात्व, घात सम्यक् दर्शन का।
भ्रमण अनन्तानन्त, काल हो जग में जन का।।
विशद भाव के साथ, करें जो भक्ती प्राणी।
मिले मोक्ष का द्वार, कहे यह जिनवर वाणी।। 19।।

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व दोष रहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्त्री आदिक वेद जगत् में, भ्रमण करावें।
करके वेद विनाश, मोक्ष की पदवी पावें।।
विशद भाव के साथ, करें जो भक्ती प्राणी।
मिले मोक्ष का द्वार, कहे यह जिनवर वाणी।। 20।।

ॐ ह्रीं वेद रहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

दोष अठारह वेद तथा, मिथ्यात्व सदा भटकाते हैं।
संसार में रहते जो प्राणी, इससे वह न बच पाते हैं।।
जो इनको जीते वह जिनेन्द्र, इन्द्रों से पूजे जाते हैं।
हम जीत सके इन दोषों को, प्रभु चरणों शीश झुकाते हैं।। 21।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा (दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चतुर्थ वलयः

दोहा – छियालिस पाए मूलगुण, आदिनाथ भगवान।
जिनगुण पाने को यहाँ, करते हम गुणगान।।

।। चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

जन्म के अतिशय

(चौपाई)

स्वेद रहित प्रभु जी तन पाते, जन्म का अतिशय यह प्रगटाते।
तीर्थंकर पद जो प्रगटाते, अतः लोक में पूजे जाते।। 1।।

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

रहित निहार प्रभू जी गाए, मल से रहित प्रभू तन पाए।
तीर्थंकर पद जो प्रगटाते, अतः लोक में पूजे जाते।। 2।।

ॐ ह्रीं नीहार रहित सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

समचतुष्क संस्थान के धारी, सुन्दर तन पाते मनहारी।
तीर्थंकर पद जो प्रगटाते, अतः लोक में पूजे जाते।। 3।।

ॐ ह्रीं सम चतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू संहनन पावन पावें, वज्रवृषभ नाराच कहावें।
तीर्थंकर पद जो प्रगटाते, अतः लोक में पूजे जाते।।4।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभ नाराच संहनन सहजातिशयधारक श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

परम सुगन्धित तन के धारी, होते हैं जिनवर अविकारी।
तीर्थंकर पद जो प्रगटाते, अतः लोक में पूजे जाते।।5।।

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जन्म से सुन्दर तन प्रभु पाते, सुरनर मुनि सब महिमा गाते।
तीर्थंकर पद जो प्रगटाते, अतः लोक में पूजे जाते।।6।।

ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सहस्राष्ट लक्षण जो पावें, देव आपकी महिमा गावें।
तीर्थंकर पद जो प्रगटाते, अतः लोक में पूजे जाते।।7।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट शुभ लक्षण सहजातिशयधारक श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

स्वेत रुधिर तन में प्रभु पाते, वात्सल्य धारी कहलाते।
तीर्थंकर पद जो प्रगटाते, अतः लोक में पूजे जाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्वेत रक्त सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हित मित प्रिय हो प्रभु की वाणी, होती जग जन की कल्याणी।
तीर्थंकर पद जो प्रगटाते, अतः लोक में पूजे जाते।। 9।।

ॐ ह्रीं प्रियहित वचन सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बल अतुल्य के धारी स्वामी, होते हैं प्रभु अन्तर्यामी।
तीर्थंकर पद जो प्रगटाते, अतः लोक में पूजे जाते।।10।।

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

केवलज्ञान के दस अतिशय

(सखी छन्द)

सौ योजन सुभिक्ष हो भाई, है जिनवर की प्रभुताई।
जब केवलज्ञान जगाते, तब यह अतिशय प्रगटाते।।11।।

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्ट्य सूभिक्षत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु होते गगन विहारी, इस जग में मंगलकारी।
जब केवलज्ञान जगाते, तब यह अतिशय प्रगटाते।।12।।

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षयजातिशय धारक श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

प्रभु अदया भाव नशाते, शुभ दया भाव प्रगटाते।
जब केवलज्ञान जगाते, तब यह अतिशय प्रगटाते।।13।।

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षयजातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्व.।

हैं कवलाहार के त्यागी, निज चेतन के अनुरागी।
जब केवलज्ञान जगाते, तब यह अतिशय प्रगटाते।।14।।

ॐ ह्रीं कवलाहारभाव घातिक्षयजातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्व.।

उपसर्ग रहित जिन स्वामी, होते हैं शिवपथ गामी।
जब केवलज्ञान जगाते, तब यह अतिशय प्रगटाते।।15।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभावघातिक्षयजातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्व.।

हो चतुर्दिशा से भाई, जिनका दर्शन सुखदायी।
जब केवलज्ञान जगाते, तब यह अतिशय प्रगटाते।।16।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्व.।

प्रभु विशद ज्ञान शुभ पाए, जिन विद्येश्वर कहलाए।
जब केवलज्ञान जगाते, जब यह अतिशय प्रगटाते।।17।।

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वरत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

प्रभु छाया रहित निराले, हैं मूर्तिमान तन वाले।
जब केवलज्ञान जगाते, तब यह अतिशय प्रगटाते।।18।।

ॐ ह्रीं छाया रहित घातिक्षयजातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

नहिं नयनों में टिमकारी, नाशा दृष्टी है प्यारी।
जब केवलज्ञान जगाते, तब यह अतिशय प्रगटाते।।19।।

ॐ ह्रीं अक्षस्पंद रहित घातिक्षयजातिशय धारक श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

नख केश ना वृद्धी पाते, ज्यों के त्यों ही रह जाते।
जब केवलज्ञान जगाते, जब यह अतिशय प्रगटाते।।20।।

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाह।

चौदह देवकृत अतिशय

(छन्द जोगीरासा)

अर्धमागधी भाषा वान, जिनवर गाए जगत प्रधान।
अतिशय देवोंकृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।।21।।

ॐ ह्रीं अर्धमागधी भाषाधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिती स्वाहा।

जन-जन में हो मैत्री भाव, श्री जिन का यह रहा प्रभाव।
अतिशय देवोंकृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।। 22।।

ॐ ह्रीं सर्व मैत्री भावधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब ऋतुओं के खिलते फूल, मौसम हो सबके अनुकूल।
अतिशय देवोंकृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।। 23।।

ॐ ह्रीं सर्वऋतुफलादि तरू देवोपनीतातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पण सम हो भूमि विशेष, गमन करें जहँ श्री जिनेश।
अतिशय देवोंकृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।। 24।।

ॐ ह्रीं आदर्श तल प्रतिमा रत्नमई देवोपनीतातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायू चले सुगन्धीवान, गमन जहाँ करते भगवान।
अतिशय देवोंकृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।। 25।।

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वातातिशयधारक श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

लोक में होवे सर्वानन्द, वायू मानो चले सुगन्ध।
अतिशय देवोंकृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।। 26।।

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशयधारक श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

कंटक धूलि आदि से हीन, भू होती सब दोष विहीन।
अतिशय देवोंकृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।। 27।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधोदक वृष्टी कर देव, हर्ष मनावें सभी सदैव।
अतिशय देवोंकृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।। 28।।

ॐ ह्रीं मेघकुमार कृत गंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरण कमल तल कमल विशेष, रचें जहाँ पग रखें जिनेश।
अतिशय देवोंकृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।। 29।।

ॐ ह्रीं चरण कमल तल रचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल द्रव्य शोभतीं आठ, दिखते जिससे ऊँचे ठाठ।
अतिशय देवोंकृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।। 30।।

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशयधारक श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

शरद काल सम हो आकाश, निर्मलता पाए जो खास।
अतिशय देवोंकृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।। 31।।

ॐ ह्रीं शरदकाल वन्निर्मल गगन देवोपनीतिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल दशों दिशाएँ जान, चलते जहाँ पे श्री भगवान।
अतिशय देवोंकृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।। 32।।

ॐ ह्रीं आकाश गमन देवोपनीतातिशयधारक श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

गगन में होवे जय-जय कार, जिनवर करते जहाँ विहार।
अतिशय देवोंकृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।। 33।।

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म चक्र ले चलते यक्ष, जिन भक्ती में होते दक्ष।
अतिशय देवोंकृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।। 34।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्र चतुष्टय देवोपनीतातिशयधारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

(छन्द चाल)

जो शोक से रहित कराए, वह तरु अशोक कहलाए।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, होते जग मंगलकारी।। 35।।

ॐ ह्रीं तरु अशोक सत् प्रातिहार्य सहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्व.।

सुर पुष्प वृष्टि करवाते, मन में अति हर्ष बढ़ाते।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, होते जग मंगलकारी।। 36।।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि सत् प्रातिहार्य सहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वा.।

चौंसठ सुर चँवर ढुरावें, मानो पद शीश झुकावें।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, होते जग मंगलकारी।। 37।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्टि चँवर सत् प्रातिहार्य सहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भामण्डल है शुभकारी, होता अति महिमा कारी।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, होते जग मंगलकारी।।38।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत् प्रातिहार्य सहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

दुन्दुभि शुभ वाद्य बजाएँ, सुर नाचें हर्ष मनाऐं।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, होते जग मंगलकारी।।39।।

ॐ ह्रीं देव दुन्दुभी सत् प्रातिहार्य सहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्व.।

त्रय छत्र शीश पे सोहें, जो जन-जन का मन मोहें।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, होते जग मंगलकारी।।40।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत् प्रातिहार्य सहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

हो दिव्य ध्वनि शुभकारी, इस जग में मंगलकारी।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, होते जग मंगलकारी।।41।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि सत् प्रातिहार्य सहिताय श्रीआदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

हो रत्न जड़ित सिंहासन, जिस पर हो प्रभु का आसन।
प्रभु प्रातिहार्य के धारी, होते जग मंगलकारी।।42।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत् प्रातिहार्य सहिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय

(वेसरी छन्द)

कर्म दर्शनावरण विनाशी, होते केवलदर्श विकाशी।
अनन्त चतुष्टय प्रभु जी पाते, अतः लोक में पूजे जाते।।43।।

ॐ ह्रीं अनंत दर्शनगुण सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ज्ञानावरण कर्म के नाशी, होते केवल ज्ञान प्रकाशी।
अनन्त चतुष्टय प्रभु जी पाते, अतः लोक में पूजे जाते।।44।।

ॐ ह्रीं अनंत ज्ञान गुण सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मोहनीय जो कर्म विनाशी, होते सुखानन्त के वासी।
अनन्त चतुष्टय प्रभु जी पाते, अतः लोक में पूजे जाते।।45।।

ॐ ह्रीं अनंत सुख गुण सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अन्तराय जो कर्म नशावें, बलानन्त को स्वामी पावें।
अनन्त चतुष्टय प्रभु जी पाते, अतः लोक में पूजे जाते।।46।।

ॐ ह्रीं अनंत वीर्य गुण सहित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - आदिनाथ जिन प्रभू की, भक्ति फले अविराम।
श्री जिन के पद पूज कर, पावें मुक्ती धाम।।47।।

ॐ ह्रीं षड्चत्त्वारिंशद मूलगुण प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि.स्वा.।

जाप्य - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम अर्हं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः

समुच्चय जयमाला

दोहा - धर्म प्रवर्तक आदि जिन, मैटे भव का जाल।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य के, हेतु कहूँ जयमाल।।

(चौपाई छन्द)

आदिनाथ तीर्थंकर गाए, धर्म प्रवर्तक आप कहाए।
सर्वार्थ सिद्धी से चय कीन्हें, नगर अयोध्या जन्म जो लीन्हें।।1।।
नाभिराय के भाग्य जगाये, मरुदेवी को धन्य बनाये।
देवों ने उत्सव कर भारी, पूजा कीन्ही अतिशयकारी।। 2।।
पद युवराज आपने पाया, लोगों ने तब हर्ष मनाया।
हुई कल्पवृक्षों की हानी, व्याकुल हुए जगत् के प्राणी।। 3।।
भूख प्यास ने उन्हें सताया, लोगों ने उत्पात मचाया।
रोते गाते चरणों आये, प्रभु से अपनी अर्ज सुनाए।। 4।।
प्रभु ने तब षट् कर्म बताए, प्राणी पाकर नाचे गाये।
आजीविका पाकर हर्षाए, जीवन सुखमय सभी बिताए।। 5।।
हुआ स्वयंवर उनका भाई, सुविधि सभी ने यह अपनाई।
लाख तिरासी पूरव जानो, भोग में बीती उनकी आयू मानो।।6।।
नीलाञ्जना ने मरण को पाया, प्रभु ने तब वैराग्य जगाया।
धर्म प्रर्वतक प्रभु कहलाये, मुक्ती का शुभ मार्ग दिखाए।। 7।।
प्रभु ने रत्नत्रय को पाया, कई राजाओं ने अपनाया।
छह महिने का ध्यान लगाया, निज आतम को प्रभु ने ध्याया।।8।।
सुविधि दान की प्रभू बताए, नृप श्रेयांश के भाग्य जगाए।
तीज शुक्ल वैशाख की पाई, अक्षय तृतिया जो कहलाई।। 9।।
प्रभु ने अतिशय ध्यान लगाया, क्षण में केवल ज्ञान जगाया।
समवशरण तब देव बनाए, प्रभु की दिव्य देशना पाए।। 10।।
मुक्ती पद को प्रभु ने पाया, सारे जग को मार्ग दिखाया।
हम भी यही भावना भाते, प्रभु पद सादर शीश झुकाते।। 11।।

जग में भ्रमण किया है भारी, अब आयी मुक्ती की बारी।
मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ, कर्म नाशकर मुक्ती पाएँ।। 12।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय संयमधारी, हे अविकारी, मोक्ष महल के अधिकारी।
जय ज्ञान पुजारी, अतिशयकारी, धर्म प्रवर्तक शिवकारी।।

ॐ ह्रीं धर्म प्रर्वतक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

(अडिल्य-छन्द)

प्रथम जिनेश्वर आप हुए यह जानिए। मोक्ष मार्ग की राह बताए मानिए।।
भव भोगों की नहीं है मन में चाहना। 'विशद' मोक्ष पद पाएँ है यह भावना।।

(इत्याशीर्वाद : पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्)

श्री आदिनाथ चालीसा

दोहा - परमेष्ठी जिन पाँच हैं, मंगल उत्तम चार।
शरण चार की प्राप्ति कर, भवदधि पाऊँ पार।।
वंदन करके भाव से, करते हम गुणगान।
चालीसा जिन आदि का, गाते विशद महान।।

चौपाई

लोकालोक अनन्त बताया, जिसका अन्त कहीं न पाया।। 1।।
लोक रहा है विस्मयकारी, चौदह राजू है मनहारी।। 2।।
ऊर्ध्व लोक ऊर्ध्व में गाया, अधोलोक नीचे बतलाया।। 3।।
मध्य लोक है मध्य में भाई, सागर दीप युक्त सुखदायी।। 4।।
नगर अयोध्या जन्म लिया है, नाभिराय को धन्य किया है।। 5।।
सर्वार्थ-सिद्धि से चय कर आये, मरुदेवी के लाल कहाए।। 6।।
चिन्ह बैल का पद में पाया, लोगों ने जयकार लगाया।। 7।।
आदिनाथ प्रभु जी कहलाए, प्राणी सादर शीश झुकाए।। 8।।
जीवों को षट् कर्म सिखाए, सारे जग के कष्ट मिटाए।। 9।।
पद युवराज का पाये भाई, विधि स्वयंवर की बतलाई।। 10।।
सुत ने चक्रवर्ति पद पाया, कामदेव सा पुत्र कहाया।। 11।।
हुई पुत्रियाँ उनके भाई, कालदोष की यह प्रभुताई।। 12।।
ब्राह्मी को श्रुत लिपि सिखाई, ब्राह्मी लिपि अतः कहलाई।। 13।।
लघु सुता सुन्दरी कहलाई, अंक ज्ञान की कला सिखाई।। 14।।

लाख तिरासी पूरब जानो, काल भोग में बीता मानो।। 15।।
इन्द्र के मन में चिंता जागी, प्रभु बने बैठे हैं रागी।। 16।।
उसने युक्ति एक लगाई, देवी नृत्य हेतु बुलवाई।। 17।।
उससे अतिशय नृत्य कराया, तभी मरण देवी ने पाया।। 18।।
दृश्य प्रभु के मन में आया, प्रभु को तब वैराग्य समाया।। 19।।
केश लुंच कर दीक्षा धारी, संयम धार हुए अविकारी।। 20।।
छह महीने का ध्यान लगाया, चित् का चिंतन प्रभु ने पाया।। 21।।
चर्या को प्रभु निकले भाई, विधि किसी ने जान न पाई।। 22।।
छह महीने तक प्रभु भटकाए, निराहार प्रभु काल बिताए।। 23।।
नृप श्रेयांश को सपना आया, आहार विधि का ज्ञान जगाया।। 24।।
अक्षय तृतीया के दिन भाई, चर्या की विधि प्रभु ने पाई।। 25।।
भूप ने यह सौभाग्य जगाया, इक्षु रस आहार कराया।। 26।।
पंचाश्चर्य हुए तब भाई, ये है प्रभुवर की प्रभुताई।। 27।।
प्रभुजी केवलज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए।। 28।।
प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए, दिव्य ध्वनि तब प्रभु सुनाए।। 29।।
बारह योजन का शुभ गाए, गणधर चौरासी प्रभु पाए।। 30।।
माघ वदी चौदश कहलाए, अष्टापद से मोक्ष सिधाए।। 31।।
मोक्ष मार्ग प्रभु ने दर्शाया, जैनधर्म का ज्ञान कराया।। 32।।
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, कर्म नाश सारे कर दीन्हें।। 33।।
शिव पदवी को प्रभु ने पाया, सिद्ध शिला स्थान बनाया।। 34।।
बने पूर्णतः प्रभु अविकारी, सुख अनन्त पाये त्रिपुरारी।। 35।।
हम भी यही भावना भाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 36।।
जगह-जगह प्रतिमाएँ सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें।। 37।।
क्षेत्र बने कई अतिशयकारी, सारे जग में मंगलकारी।। 38।।
जिस पदवी को तुमने पाया, वह पाने का भाव बनाया।। 39।।
तव पूजा का फल हम पाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।। 40।।

दोहा - चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख शांति आनन्द पा, बने श्री का नाथ।।
दीन दरिद्री होय जो, या हो पुत्र विहीन।
सुत पावे धन सम्पदा, होवे ज्ञान प्रवीण।।

श्री आदिनाथ की आरती

(तर्ज - आज करे हम............)

आज करें हम विशद भाव से, आरति मंगलकारी।
मणिमय दीपक लेकर आये, आदिनाथ दरबार।।
हो जिनवर-हम सब उतारें मंगल आरती।। टेक।।
जन्म प्राप्त कर नगर अयोध्या, को प्रभु धन्य बनाया।
नाभिराय राजा मरुदेवी, ने सौभाग्य जगाया।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।। 1।।
षट् कर्मों की शिक्षा देकर, सबके भाग्य जगाए।
नर-नारी सब नाचे गाये, जय जयकार लगाए।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।। 2।।
रत्नत्रय पाकर हे स्वामी, मोक्ष मार्ग अपनाया।
आतम ध्यान लगाकर तुमने, केवलज्ञान जगाया।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।। 3।।
यही भावना भाते हैं हम, तव पदवी को पावें।
मोक्ष प्राप्त न होवें जब तक, शरण आपकी आवें।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।। 4।।
जिन मंदिर में भक्ति भाव से, दर्श आपका पाते।
'विशद' आरती करने वाले, बिगड़े भाग्य बनाते।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।। 5।।

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्य जातास्तत् शिष्य श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्य जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सदर गुडगाँव (हरि.) नगरे वी.नि. सम्वत् 2543 श्रावण मासे शुक्ल पक्षे सप्तमी दिने श्री आदिनाथ विधान सम्पूर्ण इति शुभ भूयात।

श्री पुष्पदंतनाथ विधान

मण्डला

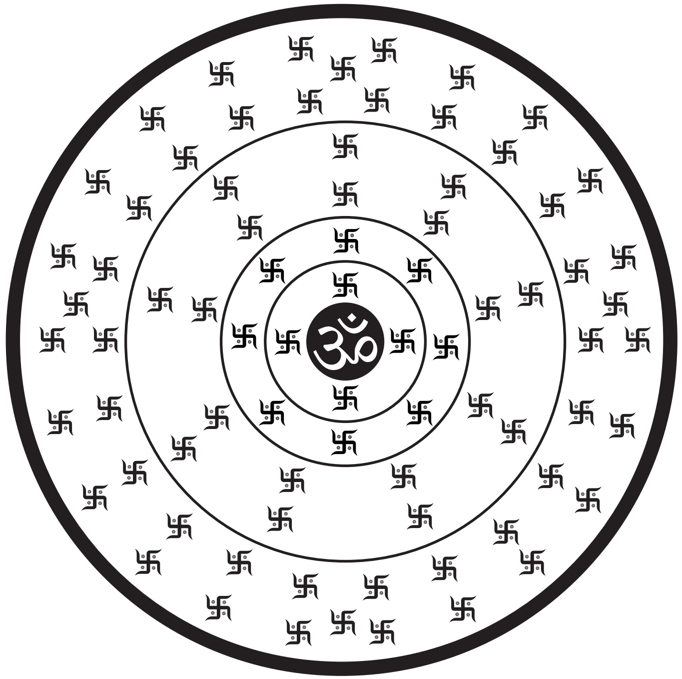

मध्य - ॐ
प्रथम वलय - 4
द्वितीय वलय - 8
तृतीय वलय - 18
चतुर्थ वलय - 48
कुल अर्घ्य : 78

रचयिता :
प. पू. क्षमामूर्ति 108
आचार्य श्री विशदसागर जी

श्री पुष्पदंतनाथ स्तवन

अर्चा करते आपकी, पुष्पदन्त भगवान।
मनोकामना पूर्ण हो, पाएँ शिव सोपान।।

किसी रूप है तत्त्व कथंचित, और कथंचित अन्य स्वरूप।
दृष्टि नहीं एकान्त रूप शुभ, स्याद्वाद है दृष्टि अनूप।।
बात आपने यही प्रमाणिक, कही ज्ञान से हे सुविधीश।
समझ ना पाए श्रेष्ठ कथन ये, नाथ ! अन्य जग के वागीश।।1।।
जो पदार्थ है निज स्वभाव के, दृष्टिकोंण अस्ति स्वरूप।
वही प्रमाणित पर स्वभाव से, दृष्टिकोंण से नास्ति स्वरूप।।
विधि निषेध यह वस्तु तत्त्व में, नहीं अन्य हैं नहीं अनन्य।
शून्य होयगा सब कुछ ही यदि, माने कोई एकान्तिक जन्य।।2।।
यह है वही वस्तु ऐसा जो, नित्य बताता है सद्ज्ञान।
'रहा नहीं वह' यह प्रतीति का, तत्त्व अनित्य बताए मान।।
है विरोध उसमें ना क्योंकि, मिलते अन्तर्बाह्य निमित्त।
उस पदार्थ को ही परिवर्तित, मान लिया करता है चित्त।।3।।
वृक्ष कथन से हो जाता है, जैस वृक्ष वस्तु का ज्ञान।
वैसे एकानेक कथन से, होय वस्तु का भी परिज्ञान।।
होय विवक्षा द्वारा किन्तू, किसी वस्तु का मुख्य विचार।
गौड़ दृष्टि भी होय साथ ही, हो ना उपेक्षित किसी प्रकार।।4।।
गौड़ प्रधान अर्थ युत पावन, नाथ ! आपका कथन यथार्थ।
रहे विरोधी वादि जनों के, कथन में जो भी आएँ पदार्थ।।
वन्दन करते इसीलिए इस, जगती के ऐश्वार्याधीश।
नाथ ! आपके चरण कमल में, हम भी झुका रहे हैं शीश।।5।।

दोहा - पुष्पदन्त भगवान का, जपें निरन्तर नाम।
रिद्धि, सिद्धि सम्पत्ति बड़े, पूरे होंगे काम।।

।। इति श्री पुष्पदन्त स्तवनम्।।

श्री पुष्पदंत नाथ पूजा (शुक्रवार)

स्थापना

पुष्पों सम सुंदर रहे, पुष्पदंत भगवान।
धवलकांति से शोभते,करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(चाल-छन्द)

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, अपने त्रय रोग नशाएँ।
जिन पुष्पदंत को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन भव ताप नशाए, हम यहाँ चढ़ाने लाए।
जिन पुष्पदंत को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत अक्षय पद दायी, हम यहाँ चढ़ाते भाई।
जिन पुष्पदंत को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

हम काम रोग विनशाएँ, प्रभु चरणों पुष्प चढ़ाएँ।
जिन पुष्पदंत को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

प्रभु क्षुधा रोग नश जाए, नैवेद्य चढ़ाने लाए।
जिन पुष्पदंत को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

पावन ये दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
जिन पुष्पदंत को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

सुरभित ये धूप जलाएँ, अब आठों कर्म नशाएँ।
जिन पुष्पदंत को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

प्रभु मोक्ष महाफल पाएँ, फल चरण चढ़ा हर्षाएँ।
जिन पुष्पदंत को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

शुभ अर्घ्य बनाकर लाए, पाने अनर्घ्य पद आए।
जिन पुष्पदंत को ध्याएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

दोहा - शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।
वन्दन करते आपके, पद में बारम्बार।

(शान्तये शांतिधारा)

दोहा - जीवन महके पुष्प सा, पुष्पांजलि कर नाथ!।
अतः करें पुष्पांजलि, चरण झुकाकर माथ।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(छन्द-मोतियादाम)

(तर्ज - रची नगरो छदमास....)

फागुन कृष्णा नौमी प्रधान, प्रभु स्वर्ग से चय आये महान।
तव देव किए मिल नमस्कार, जो रत्नवृष्टि कीन्हे अपार।।1।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा नवम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित मार्गशीर्ष एकम विशेष, प्रभु पुष्पदन्त जन्मे जिनेश।
देवों ने कीन्हा नृत्य गान, शुभ न्हवन कराए हर्ष मान।।2।।

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित मार्ग शीर्ष एकम जिनेश, दीक्षा धारे पावन विशेष।
मन में जागा जिनके विराग, फिर किए प्रभु जी राग त्याग।।3।।

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल द्वितिया महान, प्रगटाए प्रभु कैवल्य ज्ञान।
शुभ समवशरण रचना अपार, सुर किए जहाँ पर भक्ति धार।।4।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादव शुक्ला आठें ऋशीष, प्रभु सिद्ध शिला के हुए ईश।
जिनके गुण गाते हैं सुदेव, भक्ती रत रहते हैं सदैव।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(चौपाई)

दोहा - मंगलमय भगवान हैं, मंगल जिनका नाम।
मंगलमय जयमाल गा, करते चरण प्रणाम।।

चौपाई

पुष्पदन्त तीर्थंकर गाए, प्राणत स्वर्ग से चयकर आये।
पितु सुग्रीव मात जयरामा, काकन्दी नगरी का नामा।। 1।।
मगर चिन्ह दाँये पद पाए, इक्ष्वाकू कुल नन्दन गाए।
धनुष एक सौ ऊँचे जानो, धवल रंग तन का शुभ मानो।। 2।।
दो लख पूर्व की आयू पाये, निष्कंटक प्रभु राज्य चलाए।
उल्का पात देखकर स्वामी, बने मोक्ष पथ के पथगामी।। 3।।
दीक्षा सहस्र भूप संग पाए, दीक्षा वृक्ष पुष्प कहलाए।
प्रभु जब केवल ज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए।। 4।।
ब्रह्म आपका यक्ष कहाए, काली आप यक्षिणी पाए।
गणधर आप अठासी पाए, गणधर प्रमुख नाग कहलाए।। 5।।
सर्व ऋषी दो लाख बताए, गुण छियालिस प्रभु जी के गाए।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, ''विशद'' हुए मुक्ती पथगामी।।6।।

दोहा - शुक्र आरिष्ट नाशक प्रभू, पुष्पदन्त भगवान।
जीवन मंगलमय बने, करते तव गुण गान।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - करें चरण की वन्दना, जग के सारे जीव।
शिव पद में कारण बने, पावें पुण्य अतीव।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

प्रथम वलयः

दोहा - अनन्त चतुष्टय प्राप्त हैं, तीर्थंकर भगवान।
पुष्पांजलि के साथ हम, करते हैं गुणगान।।

।। प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

(सखी-छन्द)

प्रभु ज्ञानावरण नशाते, फिर केवलज्ञान जगाते।
हम वन्दन करने आये, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए।।1।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञान गुण प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु कर्म दर्शनावरणी, नाशे हैं भव से तरणी।
हम वन्दन करने आये, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए।।2।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन गुण प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हैं मोह कर्म के नाशी, जिन सुखानन्त प्रतिभासी।
हम वन्दन करने आये, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए।।3।।

ॐ ह्रीं अनन्तसुख गुण प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु अन्तराय को नाशे, बलवीर्य अनन्त प्रकाशे।
हम वन्दन करने आये, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्य गुण प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - होते तीर्थंकर प्रभो!, अनन्त चतुष्टयवान।
जिन अर्चा हम भी करें, पायें केवलज्ञान।।

ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय गुण प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा - प्रातिहार्य पाते प्रभू, अतिशयकारी आठ।
अर्चा से जिनदेव की, होते ऊँचे ठाठ।।

।। द्वितिय वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

(सोरठा)

तरु अशोक सुखदाय, शोक निवारी जानिए।
प्रातिहार्य कहलाय, समवशरण की सभा में।।1।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षमहाप्रातिहार्य संयुक्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुभ सिंहासन होय, रत्न जड़ित सुंदर दिखे।
अधर तिष्ठते सोय, उदयाचल सों छवि दिखे।।2।।

ॐ ह्रीं सिंहासनमहाप्रातिहार्य संयुक्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पुष्पवृष्टि शुभ होय, भांति-भांति के कुसुम से।
महा भक्तिवश सोय, मिलकर करते देव गण।।3।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिमहाप्रातिहार्य संयुक्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दिव्य ध्वनि सुखकार, सुने पाप क्षय हो भला।
पावैं सौख्य अपार, सुर नर पशु सब जगत के।।4।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिमहाप्रातिहार्य संयुक्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौंषठ चँवर ढुरांय, प्रभु के आगे देवगण।
भक्ति सहित गुण गाय, अतिशय महिमा प्रकट हो।।5।।

ॐ ह्रीं चामरमहाप्रातिहार्य संयुक्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सप्त सुभव दर्शाय, भामण्डल निज कांति से।
महा ज्योति प्रगटाय, कोटि सूर्य फीके पड़ें।।6।।

ॐ ह्रीं भामण्डलमहाप्रातिहार्य संयुक्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देव दुंदुभि नाद, करें देव मिलकर सुखद।
करें नहीं उन्माद, समवशरण में जाय के।।7।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभिमहाप्रातिहार्य संयुक्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जड़ित सुनग तिय छत्र, तीन लोक के प्रभू की।
दर्शाते सर्वत्र, महिमाशाली है कहा।। 8।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयमहाप्रातिहार्य संयुक्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - पुष्पदंत भगवान हैं, प्रातिहार्य संयुक्त।
जिनकी अर्चा जो करें, होवें भव से मुक्त।।

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्य संयुक्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तृतिय वलयः

दोहा - दोष अठारह से रहित, होते हैं भगवान।
जिनकी अर्चा कर मिले, पावन पद निर्वाण।।

।। तृतिय वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

(चाल छन्द)

जो 'क्षुधा दोष' के धारी, वे जग में रहे दुखारी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।1।।

ॐ ह्रीं क्षुधा दोष रहिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो 'तृषा दोष' को पाते, वे अतिशय दुःख उठाते।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।2।।

ॐ ह्रीं तृषा दोष रहिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो 'जन्म दोष' को पावें, मरकर के फिर उपजावें।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।3।।

ॐ ह्रीं जन्म दोष रहिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है 'जरा दोष' भयकारी, दुख देता है जो भारी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।4।।

ॐ ह्रीं जरा दोष रहिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो 'विस्मय' करने वाले, प्राणी हैं दुखी निराले।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।5।।

ॐ ह्रीं विस्मय दोष रहिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है 'अरति दोष' जग जाना, दुखकारी इसको माना।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।6।।

ॐ ह्रीं अरति दोष रहिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्रम करके जग के प्राणी, बहु 'खेद' करें अज्ञानी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।7।।

ॐ ह्रीं खेद दोष रहिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है 'रोग दोष' दुखदायी, सब कष्ट सहें कई भाई।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।8।।

ॐ ह्रीं रोग दोष रहिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जब इष्ट वियोग हो जाए, तब 'शोक' हृदय में आए।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।9।।

ॐ ह्रीं शोक दोष रहिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'मद' में आकर के प्राणी, करते हैं पर की हानी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।10।।

ॐ ह्रीं मद दोष रहिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो 'मोह दोष' के नाशी, होते हैं शिवपुर वासी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।11।।

ॐ ह्रीं मोह दोष रहिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'भय' सात कहे दुखकारी, जिनकी महिमा है न्यारी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।12।।

ॐ ह्रीं भय दोष रहिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'निद्रा' से होय प्रमादी, करते निज की बरबादी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।13।।

ॐ ह्रीं निद्रा दोष रहिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'चिन्ता' को चिता बताया, उससे ही जीव सताया।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।14।।

ॐ ह्रीं चिन्ता दोष रहिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तन से जब 'स्वेद' बहाए, जो भारी दुख पहुँचाए।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।15।।

ॐ ह्रीं स्वेद दोष रहिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है 'राग' आग सम भाई, जानो इसकी प्रभुताई।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।16।।

ॐ ह्रीं राग दोष रहिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिसके मन 'द्वेष' समाए, वह भारी क्षति पहुँचाए।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।।17।।

ॐ ह्रीं द्वेष दोष रहिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हैं 'मरण दोष' के नाशी, वे होते शिवपुर वासी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।। 18।।

ॐ ह्रीं मरण दोष रहिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - दोष अठारह से रहित, पुष्पदंत भगवान।
जिनकी अर्चा कर विशद, पायें हम सद्ज्ञान।।

ॐ ह्रीं अष्टादस दोष रहिताय श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा - प्रगटाते प्रभु ऋद्धियाँ, श्री जिन अड़तालीस।
पुष्पांजलि कर पूजते, चरण झुकाते शीश।।

।। चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

(चौपाई छन्द)

'केवल बुद्धि ऋद्धि' के धारी, चार घातिया नाशनहारी।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते।। 1।।

ॐ ह्रीं केवल बुद्धि ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उत्तम तप जिन मुनिवर पाते, 'देशावधि मुनि' ज्ञान जगाते।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते।। 2।।

ॐ ह्रीं देशावधि ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'परमावधी ज्ञान' प्रगटावें, फिर निज केवलज्ञान जगावें।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते।। 3।।

ॐ ह्रीं परमावधि ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'सर्वावधी ज्ञान' के धारी, केवल ज्ञानी हों शिवकारी।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते।। 4।।

ॐ ह्रीं सर्वावधी ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'अनन्तावधि' मुनिवर जी पाएँ, परम विशुद्धी हृदय जगाएँ।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते।। 5।।

ॐ ह्रीं अनन्तावधि ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'बीज बुद्धि' ऋद्धीधर गाये, बीजभूत सब ज्ञान जगाए।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते।। 6।।

ॐ ह्रीं बीज बुद्धि ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'पदानुसारिणी' ऋद्धीधारी, जानें सब आगम अनगारी।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते।। 7।।

ॐ ह्रीं पदानुसारिणी ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'संभिन्न संश्रोतृ' ऋद्धीधर भाई, जाने सब भाषा सुखदायी
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते।। 8।।

ॐ ह्रीं संभिन्न संश्रोतृ ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'स्वयंबुद्ध ऋद्धी' जो पाएँ, निज आतम का ज्ञान जगाएँ।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते।। 9।।

ॐ ह्रीं स्वयं बुद्ध ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'प्रत्येक बुद्ध' ऋद्धीधर ज्ञानी, पाएँ संयमादि कल्याणी।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते।। 10।।

ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'बोधित बुद्ध' ऋद्धि शुभ पाते, आतम में निज बोधि जगाते।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते।। 11।।

ॐ ह्रीं बोधित बुद्ध ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'ऋजूमति ज्ञानी' शुभकारी, सरल भाव जानें अनगारी।
तप करे मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते।। 12।।

ॐ ह्रीं ऋजुमति ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'विपुलमती ऋद्धी' शुभ पाते, आगम से निज बोधि जगाते।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते।। 13।।

ॐ ह्रीं विपुल मति ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'कोष्ठ बुद्धि' ऋद्धी जो पावें, भिन्न-भिन्न सब विषय बतावें।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते।। 14।।

ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'दश पूर्वित्व' ऋद्धिधर गाये, विद्याओं की चाह भुलाए।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते।। 15।।

ॐ ह्रीं दश पूर्वित्व ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'चौदह पूरवधर' श्रुत पावें, ऋद्धी से प्रत्यक्ष जगावें।
तप कर मुनि ऋद्धी प्रगटाते, उनके पद हम शीश झुकाते।। 16।।

ॐ ह्रीं चौदह पूर्व ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(बारहमासा चाल)

'ज्योतिष आदिक' लक्षण जाने, निमित्त ऋद्धि के धारी जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी।। 17।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष चारण ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बहु विधि 'अणिमादिक' ऋद्धी शुभ, पाए विक्रिया धारी जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी।। 18।।

ॐ ह्रीं अणिमादिक ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'भूमी जल जन्तू' आदिक का, मुनिवर घात निवारे जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी।। 19।।

ॐ ह्रीं भूचारण ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

पग छूते ही चलें गगन में, 'चारण ऋद्धीधारी' जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी।। 20।।

ॐ ह्रीं चारण ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

खग सम चलें गगन में मुनिवर, 'गगन चारिणी' धारी जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी।। 21।।

ॐ ह्रीं गगनचारिणी ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वाद कुशल को करें पराजित, 'ऋद्धि परामर्श' धारी जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी।। 22।।

ॐ ह्रीं परामर्ष ऋद्धि धारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा

विष को अमृत करें ऋद्धि से, 'आशीनिर्विष' धारी जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी।। 23।।

ॐ ह्रीं आशी निर्विष ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

विष का करें विनाश देखते, 'दृष्टी निर्विषधारी' जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी।। 24।।

ॐ ह्रीं दृष्टी निर्विष ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'उग्र सुतप' की करें साधना, मुनिवर ऋद्धी धारी जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी।। 25।।

ॐ ह्रीं उग्र सुतप ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बढ़े देह की कांती अनुपम, 'दीप्त ऋद्धि' के द्वारा जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी।। 26।।

ॐ ह्रीं दीप्त तप ऋद्धि धारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चन्द्र कला सम बढ़े साधना, 'तप्त सुतप' के द्वारा जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी।। 27।।

ॐ ह्रीं तप्त तप ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वृद्धिंगत नित करें साधना, 'ऋद्धि महातप' धारी जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी।। 28।।

ॐ ह्रीं महातप ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गिरि सरिता तट करें साधना, ऋद्धि 'घोर तप' धारी जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी।। 29।।

ॐ ह्रीं घोर तप ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वन में निर्विकार हो तिष्ठें, 'ऋद्धि पराक्रम' धारी जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी।। 30।।

ॐ ह्रीं घोर पराक्रम ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

महागुणों को पाने वाले, 'ऋद्धि घोर गुण' धारी जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी।। 31।।

ॐ ह्रीं घोर गुण ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

काम विजय को पाने वाले, 'ऋद्धि ब्रह्मचर्य' धारी जी।
उत्तम तप कर ऋद्धी पाते, श्रेष्ठ सुगुण अनुसारी जी।। 32।।

ॐ ह्रीं घोर ब्रह्मचर्य ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(भुजंगप्रयात)

'आमर्ष औषधि' जिन सिद्ध पाए।
सकल रोग स्पर्श करते नशाए।।
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी।। 33।।

ॐ ह्रीं आमर्षौषधि ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'क्ष्वेलौषधी' श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
बने क्ष्वेल औषधि है ऋद्धी सुखारी।
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी।। 34।।

ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'विडौषधि ' जिन्हें प्राप्त ऋद्धी है भाई।
बने मूत्र औषधि शुभम् सौख्यदायी।
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धि के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी।। 35।।

ॐ ह्रीं विडौषधि ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बने 'जल्ल औषधि' मुनी तन का प्यारा।
ऋद्धी का पाया है जिनने सहारा।।
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी।। 36।।

ॐ ह्रीं जल्ल औषधि ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

करे मुनि को स्पर्श वायू बहाए।
तभी रोग वायू सभी के नशाए।।
'ऋषी सर्व औषधि' ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी।।37।।

ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मन बल' बढ़ाते हैं मुनि ऋद्धिधारी।
करें श्रुत का चिन्तन मुहूरत में भारी।।
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी।। 38।।

ॐ ह्रीं मन बल ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'वचन बल' करें प्राप्त ऋद्धी के धारी।
करें श्रुत का वर्णन मुहूरत में भारी।।
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी।। 39।।

ॐ ह्रीं वचन बल ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनि काय 'बल' ऋद्धि धारी जो होते।
वे श्रम खेद तन की थकावट को खोते।।
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी।। 40।।

ॐ ह्रीं काय बल ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनी 'क्षीर स्रावी' शुभ ऋद्धि जो पावें।
विरस भोज को क्षीर सम जो बनावें।।
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी।। 41।।

ॐ ह्रीं क्षीर स्रावी ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बने रुक्ष आहार रसदार भाई।
मुनि 'सर्पि स्रावी' के कर सौख्यदायी।।
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी।। 42।।

ॐ ह्रीं सर्पि स्रावी ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'मधुस्रावि' के हाथ में रुक्ष आहार।
मधु सम मधुर, हो शुभ ऋद्धि के आधार।।
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी।। 43।।

ॐ ह्रीं मधुस्रावि ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनि 'अमृतस्रावि' हैं ऋद्धी के धारी।
बने रुक्ष आहार, अमृत सा भारी।।
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी।। 44।।

ॐ ह्रीं अमृतस्रावि ऋद्धि धारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जहाँ जीमते 'ऋद्धि अक्षीण' धारी।
बढ़े श्रेष्ठ आहार अक्षय हो भारी।।
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी।। 45।।

ॐ ह्रीं अक्षीण महानश ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बढ़े सिद्ध राशि 'हो वर्धमान' भारी।
बने सिद्ध वह भी जो हैं ऋद्धि धारी।।
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी।। 46।।

ॐ ह्रीं अक्षीण महात्मय ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

करें दर्श 'सिद्धायतन' के निराले।
मुनिश्रेष्ठ हैं जो महत् ज्ञान वाले।
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी।।47।।

ॐ ह्रीं सिद्धायतन ऋद्धिधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

णमो भयवदोमहदि महावीर नामी।
कहाए प्रभू वर्धमान मोक्षगामी।।
सुतप धारते श्रेष्ठ ऋद्धी के धारी।
विशद ढोक ऋषि के चरण में हमारी।।48।।

ॐ ह्रीं 'वर्धमान ऋद्धिधारक' श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा – अड़तालिस यह ऋद्धियाँ, पाते हैं भगवान।
कर्म नाश करके विशद, प्राप्त करें निर्वाण।।49।।

ॐ ह्रीं अष्टचत्त्वारिंशद ऋद्धीधारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

जाप – ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा – पुष्पदन्त भगवान का, जपे निरन्तर नाम।
जयमाला गाए विशद, पावे वह शिव धाम।।

(शम्भू छन्द)

धीर वीर सम्यक् गुणधारी, पुष्पदन्त मेरे भगवान।
अष्ट कर्म मल के परिहारी, अविनाशी बहुगुण की खान।।
विमल गुणों के शुभ करण्ड हैं, निर्मलतम जिन श्री के धाम।
जग का मंगल करने वाले, जिनवर तव पद 'विशद' प्रणाम।।1।।
प्रभु दुर्मोह नशाने वाले, प्रहत मदन जिनवर अविकार।
जन्माटवी के पार गये हैं, विशद धर्म के बन आधार।।
हो निरातिशय चारित धारी, बने आप लोकाधीनाथ।
अतः चरण का वन्दन करने, आते हैं देवों के नाथ।। 2।।
गणधर आदिक श्रेष्ठ ऋद्धिधर, जिनपद शीश झुकाते हैं।
तीन लोकवर्ती जीवों से, जो नित पूजे जाते हैं।।
जिनकी पूजा का फल पाकर, प्राणी भव सुख पाते हैं।
अपने सारे कर्म नाशकर, मोक्ष सुनिधि प्रगटाते हैं।। 3।।
पंच कल्याणक पाने वाले, श्रीयुत होते हैं भगवान।
विघ्न विनाशक हैं त्रिलोक में, अतिशयकारी महिमावान।।

भवि जीवों के भाग्य विधाता, अर्चनीय हैं जिन अविकार।
निराबाध निर्ग्रन्थ मुनीश्वर, शुद्ध ध्यान के हैं आधार।।4।।
शाप अनुग्रह शक्ति आदि की, रुचि से हैं जो रहित मुनीश।
श्रेष्ठ ऋद्धियाँ प्रगटाते हैं, ज्ञान शिरोमणि श्रेष्ठ ऋशीश।।
गुणगण के हैं कोष निरन्तर, उनके पद मेरा वन्दन।
अष्ट द्रव्य के थाल सजाकर, करते हैं हम भी अर्चन।।5।।

दोहा – पुष्पदन्त के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
विमल स्तवन कर रहे, पाने शिव दरबार।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – पुष्पदन्त जिनके चरण, वन्दन बारम्बार।
जिनकी अर्चा से मिले मोक्ष महल का द्वार।।

।। इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत ।।

श्री पुष्पदन्त चालीसा

दोहा – अर्हत् सिद्धागम धरम, आचार्योपाध्याय संत।
जिन मंदिर जिनबिम्ब को, नमन अनन्तानंत।।
कुन्द पुष्प सम रूप शुभ, पुष्पदन्त है नाम।
चरण-कमल द्वय में विशद, बारम्बार प्रणाम।।

(चौपाई)

जय-जय पुष्पदन्त जिन स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी!।
तुम हो सब देवों के देवा, इन्द्र करें तव पद की सेवा।।
महिमा है इस जग से न्यारी, सारी जगती बनी पुजारी।
महिमा सारा जग ये गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आए, काकन्दी नगरी कहलाए।
पिता श्री सुग्रीव कहाए, माता श्री जयरामा पाए।।
फाल्गुन कृष्ण नौमी कहलाए, मूल नक्षत्र में गर्भ में आए।
प्रातः काल का समय बताए, इक्ष्वाकु कुल नन्दन गाए।।
मगसिर शुक्ला एकम जानो, प्रभु ने जन्म लिया यह मानो।
मगर चिन्ह प्रभु का बतलाया, इन्द्रों ने पद शीश झुकाया।।
धवल रंग प्रभु जी शुभ पाए, धनुष एक सौ ऊँचे गाए।
उल्कापात देख के स्वामी, बने आप मुक्ति पथगामी।।

मगसिर कृष्णा एकम पाए, अनुराधा नक्षत्र कहाए।
अपराह्न काल दीक्षा का गाया, तृतिय भक्त प्रभु ने पाया।।
दीक्षा वन पुष्पक शुभ गाया, नाग वृक्ष तल ध्यान लगाया।
सहस्र भूप संग दीक्षा पाए, निज आतम का ध्यान लगाए।।
कार्तिक शुक्ला दोज बखानी, हुए प्रभुजी केवलज्ञानी।।
काकन्दी नगरी फिर आए, अक्ष तरु वन पुष्प कहाए।।
समवशरण वसु योजन पाए, सुन्दर आके देव रचाए।
एक माह पूर्व से स्वामी, योग निरोध किए जगनामी।।
यक्ष आपका ब्रह्म कहाए, काली श्रेष्ठ यक्षणी पाए।
गणधर आप अठासी पाए, उनमें नाग प्रथम कहलाए।।
आयु लाख पूर्व दो पाए, चार वर्ष छद्मस्थ बिताए।
सर्व ऋषि दो लाख बताए, समवशरण में प्रभु के गाए।।
घोषा प्रथम आर्यिका जानो, छियालीस गुण के धारी मानो।
गिरि सम्मेद शिखर पर आए, निज आतम का ध्यान लगाए।।
भादौ शुक्ल अष्टमी जानो, छियालीस गुण के धारी मानो।।
मूल नक्षत्र प्रभु जी पाए, अपराह्न काल में मोक्ष सिधाए।
शुक्रारिष्ट ग्रह जिन्हें सताए, पुष्पदंत प्रभु को वह ध्याये।।
पूजा और विधान रचाए, भावसहित चालीसा गाए।।
करे आरती मंगलकारी, शुक्रवार के दिन मनहारी।
जीवन में सुख-शांति पावे, भक्ती भाव से जो गुण गावे।।
प्रभु की महिमा रही निराली, है सौभाग्य जगाने वाली।
महिमा सुनकर के हम आए, भाव सुमन अपने उर लाए।।
मम जीवन हो मंगलकारी, विघ्न व्याधि नश जाए हमारी।
तव प्रतिमा के दर्शन पाएँ, हर्ष-हर्ष करके गुण गाएँ।।
पद में सादर शीश झुकाएँ, अपने सारे कर्म नशाएँ।
भव सिन्धु से मुक्ति पाएँ, हम भी अब शिव पदवीं पाएँ।।

दोहा - चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांती आनन्द पा, बने श्री का नाथ।।
विधि सहित पूजा करें, करके 'विशद' विधान।
पाते हैं सौभाग्य वह, अन्त में हो निर्वाण।।

प्रशस्ति

लोका-लोक के मध्य में, मध्य लोक मनहार।
मध्य लोक के मध्य है, मेरू मंगलकार।। 1।।
मेरू की दक्षिण दिशा, में शुभ क्षेत्र महान।
भरत क्षेत्र शुभ नाम है, अलग रही पहिचान।। 2।।
उत्तर में हिमवन गिरि, दक्षिण लवण समुद्र।
तिय नदियाँ जिसमें महा, अन्य कई हैं क्षुद्र।। 3।।
मध्य रहा विजयार्द्ध शुभ, जिसमें हैं छह खण्ड।
रहते हैं नर पशु जहाँ, और रहे कई खण्ड।। 4।।
कर्मभूमि जो है परम, बना है धनुषाकार।
मंगलमय रचना बनी, जग में अपरम्पार।। 5।।
वर्तमान अवसर्पिणी, में चौबीस जिनेश।
तीर्थंकर पद में हुए, धार दिगम्बर भेष।। 6।।
नौवें तीर्थंकर विशद, पुष्पदंत है नाम।
मगर चिन्ह से शोभते, जग जन करें प्रणाम।। 7।।
पुष्पदंत प्रभु जो कहे, तीनों लोक प्रसिद्ध।
अष्ट कर्म को नाशकर, आप हुए हैं सिद्ध।। 8।।
सुख शांती की चाह में, घूमें सारे जीव।
कर्मोदय से लोक में, पाते दुःख अतीव।। 9।।
पुष्पदंत की अर्चना, करे दुःखों का नाश।
जीवन मंगलमय बने, होवे आत्मप्रकाश।। 10।।
अश्विन सुदी एकम तिथि, पच्चिस सौ तियालीस।
रहा वीर निर्वाण शुभ, तारीख है इक्कीस।। 11।।
गुड़गाँव जैकमपुरा में, श्री पुष्पदन्त विधान।
शान्ति के शुभ भाव से, पूर्ण किया गुणगान।। 12।।
लघु धी से जो कुछ लिखा, मानो यही प्रमाण।
सर्व गुणी जन दें 'विशद', हमको करुणा दान।। 13।।
खास दास की आस यह, और न कोई अरदास।
संयम मय जीवन रहे, अन्तिम मुक्तीवास।। 14।।

श्री पुष्पदंत की आरती–1

(तर्ज–नर तन रतन अमोल इसे.................)

रत्न जड़ित मंगलमय पावन, दीप जलाओ जी।
पुष्पदंत तीर्थंकर जिन की, आरती गाओ जी।। रत्न जड़ित...........

1. जन्म लिया काकन्दी नगरी, आनन्द मंगल छाया जी।
इन्द्र ने पाण्डुक शिला के ऊपर, मंगल न्हवन कराया जी।
जिनवर की आरति करने, ओ ऽऽऽ थाल सजाओ जी। पुष्पदंत.........

2. उल्कापात देखकर प्रभु के, मन वैराग्य समाया जी।
पंचमुष्ठि से केशलुंच कर, महाव्रतों को पाया जी।
निज आतम की सिद्धि करने, ओ ऽऽऽ ध्यान लगाओ जी। पुष्पदंत.............

3. कार्तिक शुक्ला दोज तिथि को, केवलज्ञान जगाया जी।
पुष्पक वन में शत् इन्द्रों ने, समवशरण बनवाया जी।
पुष्पदंत की दिव्य ध्वनि को, ओ ऽऽऽ सब मिल पाओ जी। पुष्पदंत................

4. भादों शुक्ल अष्टमी को प्रभु, सारे कर्म नशाए जी।
सिद्ध शिला पर जाने वाले, शिवपुर धाम बनाए जी।।
कूट सम्मेद शिखर पर, ओ ऽऽऽ अर्घ्य चढ़ाओ जी।। पुष्पदंत................

श्री पुष्पदंत की आरती–2

श्री जिनवर की आरति कीजे, अपना जन्म सफलकर लीजे।
पुष्पदन्त तीर्थंकर स्वामी, आप हुए मुक्ती पथगामी।। 1।। श्री.....
देवगर्भ कल्याण मनाए, पावन रत्न वृष्टि करवाए।। 2।। श्री.....
इन्द्रराज ऐरावत लाये, मेरु सुगिरि पे न्हवन कराये।। 3।। श्री.....
प्रभु का तप कल्याण मनाए, दीक्षा वन में जो पहुँचाए।। 4।। श्री.....
प्रभु जब केवलज्ञान जगाएँ, समवशरण तव देव बनाएँ।। 5।। श्री.....
मोक्ष कल्याणक देव मनाएँ, संस्कार तन का करवाएँ।। 6।। श्री.....
आरति को यह दीप जलाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।। 7।। श्री.....

श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

माण्डला

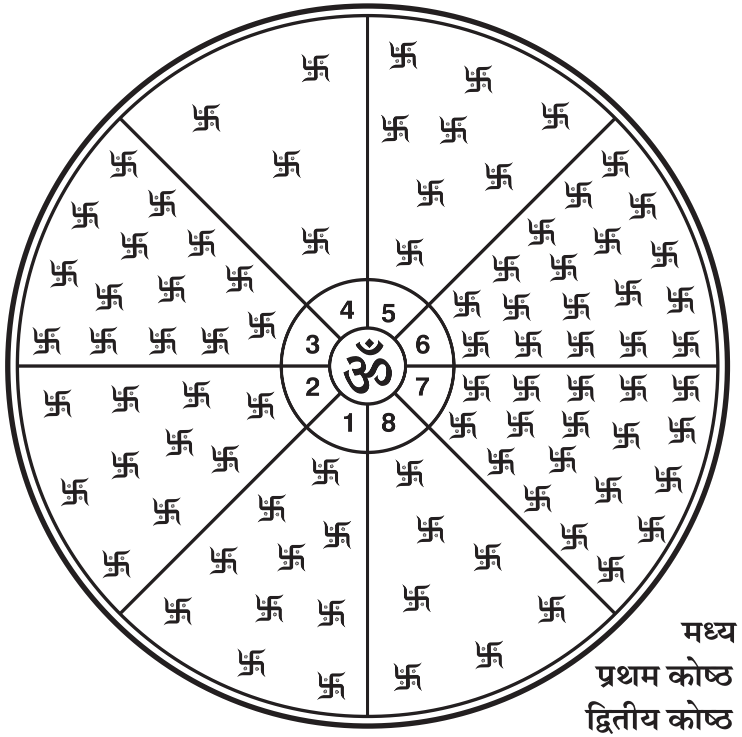

मध्य – ॐ
प्रथम कोष्ठ – 10
द्वितीय कोष्ठ – 10
तृतीय कोष्ठ – 14
चतुर्थ कोष्ठ – 04
पंचम कोष्ठ – 08
षष्ठ कोष्ठ – 18
सप्तम कोष्ठ – 18
अष्ठम कोष्ठ – 07
कुल अर्घ्य – 89

रचयिता :
प. पू. क्षमामूर्ति 108
आचार्य श्री विशदसागर जी

श्री मुनिसुव्रत जिन स्तोत्र

दोहा - भूमण्डल के ज्योति प्रभू, तीन लोक के नाथ।
वन्दन कर जिनदेव के, चरण झुकाऊँ माथ।।

(शंभू-छन्द)

हे नाथ ! आपने जग बन्धन, तजकर के व्रत को धार लिया।
जो पथ पाया था सिद्धों ने, उसको तुमने स्वीकार किया।।
यह तीन लोक में पावन पथ, इसके हम राही बन जावें।
हम शीश झुकाते चरणों में, प्रभु सिद्धों की पदवी पावें।। १।।
शुभ तीर्थंकर सम पुण्य पदक, यह पूर्व पुण्य से पाये हैं।
सब कर्म घातिया नाश किए, अरु केवल ज्ञान जगाये हैं।।
शुभ ज्ञान की महिमा अनुपम है, यह द्रव्य चराचर ज्ञाता हैं।
इस ज्ञान को पाने वाला तो, निश्चय मुक्ती को पाता है।। २।।
जिनको यह ज्ञान प्रकट होता, वह अर्हत् पद के धारी हों।
वह सर्व लोक में पूज्य रहे, अरु स्व पर के उपकारी हों।।
वह दिव्य देशना के द्वारा, जग जीवों का कल्याण करें।
करते सद् ज्ञान प्रकाश अहा, भवि जीवों का अज्ञान हरें।। ३।।
यह प्रभु का पद ऐसा पद है, जग में कोई और समान नहीं।
हम तीन लोक में खोज लिए, पर पाया नहीं है और कहीं।।
उस पद का मन में भाव जगा, जिसको तुमने प्रभू पाया है।
यह भक्त जगत की माया तज, प्रभू आप शरण में आया है।। ४।।
ये जग दुक्खों से पूरित है, सुख शांती का है लेश नहीं।
तीनों लोकों में भटक लिया, पर सुख पाया है नहीं कहीं।।
हम सुख अतिन्द्रिय पाने को अब, प्रभु तव चरणों में आए हैं।
हम भक्ति भाव से शीश झुका, कर चरणों में सिर नाए हैं।। ५।।

दोहा - महिमा जिनकी है अगम, गुण का है नापार।
गुणगाते जिनके विशद हम सब बारम्बार।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजा (शनिवार)

स्थापना

दोहा - शनि ग्रह पीड़ा हर कहे, मुनिसुव्रत भगवान।
जिनका करते आज हम, भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(चौपाई छन्द)

निर्मल नीर भराकर लाए, जन्मादिक रुज मम नश जाए।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

केसर से शुभ गंध बनाए, भवाताप हरने हम आए।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत चढ़ा रहे मनहारी, अक्षय पद दायक शुभकारी।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

सुरभित पुष्प चढ़ाने लाए, काम रोग मेरा नश जाए।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

यह नैवेद्य चढ़ाते भाई, क्षुधा रोग नाशी शिवदाई।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत के हम शुभ दीप जलाएँ, मोह तिमिर से मुक्ती पाएँ।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में हम धूप जलाएँ, आठों कर्म नाश हो जायें।।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल यह सरस चढ़ाते भाई, जो हैं मोक्ष महाफलदायी।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

दोहा - **श्रेष्ठ सुगन्धित नीर से, देते हैं जलधार।**
जीवन सुखमय शांत हो, मिले मोक्ष का द्वार।।

।। शान्तये - शांतिधारा ।।

दोहा - **पुष्पांजलि करने यहाँ, पुष्प लिए शुभ हाथ ।**
जिन गुण पाने के लिए, झुका चरण में माथ ।।

।। दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत ।।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

चौपाई

सावन वदि द्वितीया शुभकारी, मुनिसुव्रत जिन मंगलकारी ।
माँ के गर्भ में चयकर आए, रत्नवृष्टि कर सुर हर्षाए।।1।।

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वित्तीयां गर्भ कल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

दशें कृष्ण वैशाख बखानी, जन्म लिए मुनिसुव्रत स्वामी।
इन्द्र देव सेना ले आए, जन्मोत्सव पर हर्ष मनाए।।2।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्म कल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य नि. स्वाहा।

अस्थिर भोग जगत के गाए, जान प्रभु जी दीक्षा पाए ।
घोर सुतप कर कर्म नशाए, दशें कृष्ण वैशाख सुहाए।।3।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तप कल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य नि. स्वाहा।

नोमी कृष्ण वैशाख सुहानी, हुए प्रभु जी केवलज्ञानी ।
जगमग-जगमग दीप जलाए, सुर-नर दीपावली मनाए।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा नवम्यां ज्ञान कल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि द्वादशी शुभकारी , मुक्ती पाए जिन त्रिपुरारी ।
कूट निर्जरा से शिव पाए, शिवपुर अपना धाम बनाए ।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्णा द्वादशम्यां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - **श्याम रंग में शोभते, तीर्थंकर भगवान।**
मुनिसुव्रत भगवान का, करते हम जयगान।।

तर्ज :- मधुवन के मंदिरों में....

तीर्थेश मुनिसुव्रत जी,मंदिर में बस रहे हैं।
जिनके दरश को पाके, प्राणी हरस रहे हैं।।टेक ......
अध्यात्म का सुअमृत, जिनवर ने खुद दिया है।
पाकर स्वयं व्रतों को, अमृत सरस पिया है।।
दर्शन को जिन प्रभू के, हम भी तरष रहे हैं।।1।।जिनके.......
जिनदेव के चरण से, तीरथ हुआ ये पावन।
अर्चा से जिन प्रभू की, जीवन बने ये सावन।।
अभिषेक कर प्रभू का, श्रावक सरस रहे हैं।।2।।जिनके......
अतिशय दिखाने वाला, तीरथ है ये पुराना।
जिनवर के सद्गुणों का, अतिशय भरा खजाना।।
भक्तों पे प्रभु कृपा के, बादल बरस रहे हैं।।3।।जिनके........
राजा सुमित्र श्यामा, माँ आपकी कहाए।
राजगृही नगर में, जिनदेव जन्म पाए।।
सौधर्म इन्द्र ने भी, जिनके दरश लहे हैं।।4।।जिनके ....
है श्याम रंग प्रभु का, तन बीस धनुष पाए।
सम्मेद शिखर जी से, मुक्ती महल सिधाए।।
संकट निवारी प्रभु जी, जग मे 'विशद' कहे हैं।।5।।जिनके .....

दोहा – नाथ! आपकी भक्ति से, भक्त बनें भगवान।
अतः भाव से नित करें, भक्ति सहित गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – अर्चा करने आए हम, प्रभू आपके द्वार।
यही भावना है विशद, पाएँ भवदधि पार।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

प्रथम कोष्ठ

सोरठा – पाते हैं भगवान, जन्म के दश अतिशय परम।
करते हम गुणगान, पाने मुक्ती पथ प्रभो!।।

।। प्रथम कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

जन्म के 10 अतिशय

(गीता छन्द)

स्वेद रहित शुभदेह सुंदर, अर्हंत की पहिचानिए।
यह जन्म से अतिशय जो होता, भव्य जन ये मानिए।।
शुभ बंध तीर्थंकर प्रकृति का, कर रहे जो प्राप्त हैं।
हम अर्घ चरणों में चढ़ाते, बन रहे जो आप्त हैं।।1।।

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशयधारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

होय न मलमूत्र जिनके, तन सुखद निर्मल रहा।
जन्म से अतिशय ये होवे, जैन आगम में कहा।।
शुभ बंध तीर्थंकर प्रकृति का, कर रहे जो प्राप्त हैं।
हम अर्घ चरणों में चढ़ाते, बन रहे जो आप्त हैं।।2।।

ॐ ह्रीं नीहार रहित सहजातिशयधारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

समचतुष्क संस्थान जिनका, नहीं हीनाधिक रहे।
जन्म से अतिशय ये होवे, जैन आगम ये कहे।।
शुभ बंध तीर्थंकर प्रकृति का, कर रहे जो प्राप्त हैं।
हम अर्घ चरणों में चढ़ाते, बन रहे जो आप्त हैं।।3।।

ॐ ह्रीं सम चतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

वज्रवृषभ नाराच प्रभु का, संहनन शुभ जानिए।
जन्म का अतिशय रहा यह, भव्य जन पहचानिए।।
शुभ बंध तीर्थंकर प्रकृति का, कर रहे जो प्राप्त हैं।
हम अर्घ चरणों में चढ़ाते, बन रहे जो आप्त हैं।।4।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभ नाराच संहनन सहजातिशयधारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ सुगंधित और सुरभित, तन प्रभु का जानिए।
जन्म का अतिशय रहा यह, भव्य जन पहचानिए।।
शुभ बंध तीर्थंकर प्रकृति का, कर रहे जो प्राप्त हैं।
हम अर्घ चरणों में चढ़ाते, बन रहे जो आप्त हैं।।5।।

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

चक्रेश काम कुमार आदिक, से भी सुंदर रूप है।
लोक में अतिशय सुसुंदर, प्रभू का स्वरूप है।।
शुभ बंध तीर्थंकर प्रकृति का, कर रहे जो प्राप्त हैं।
हम अर्घ चरणों में चढ़ाते, बन रहे जो आप्त हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशयधारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सहस इक अरु आठ लक्षण, देह में शुभ जानिए।
जन्म का अतिशय रहा यह, भव्य जन पहचानिए।।
शुभ बंध तीर्थंकर प्रकृति का, कर रहे जो प्राप्त हैं।
हम अर्घ चरणों में चढ़ाते, बन रहे जो आप्त हैं।।7।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट शुभ लक्षण सहजातिशयधारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत सुंदर रक्त का रंग, प्रभु के तन का रहा।
जन्म से अतिशय ये होवे, जैन आगम में कहा।।
शुभ बंध तीर्थंकर प्रकृति का, कर रहे जो प्राप्त हैं।
हम अर्घ चरणों में चढ़ाते, बन रहे जो आप्त हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्वेत रक्त सहजातिशयधारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मधुर अरु हित मितप्रिय, जिनदेव की वाणी रही।
जन्म का अतिशय ये जानो, विशद जिनवाणी कही।।
शुभ बंध तीर्थंकर प्रकृति का, कर रहे जो प्राप्त हैं।
हम अर्घ चरणों में चढ़ाते, बन रहे जो आप्त हैं।।9।।

ॐ ह्रीं प्रियहित वचन सहजातिशयधारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बल अनंतानंत प्रभु का, अन्य कोई में नहीं।
जन्म का अतिशय ये जानो, और नहिं मिलता कहीं।।
शुभ बंध तीर्थंकर प्रकृति का, कर रहे जो प्राप्त हैं।
हम अर्घ चरणों में चढ़ाते, बन रहे जो आप्त हैं।। 10।।

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशयधारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा - दस अतिशय प्रभु जन्म के, पावें मंगलकार।
सुर नर जिनपद पूजते, अतिशय बारंबार।। 11।।

ॐ ह्रीं जन्मोत्सवें दशातिशयधारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितिय कोष्ठ

सोरठा - प्राप्त करें भगवान, अतिशय केवल ज्ञान के।
पूजा करें महान, सुर नर मुनि जिनदेव की।।

।। द्वितिय कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

केवलज्ञान के 10 अतिशय
(शम्भू छन्द)

हो सुभिक्ष सौ योजन भाई, केवल ज्ञान की ये प्रभुताई।
केवल ज्ञान का अतिशय पाते, अतः लोक में पूजे जाते।। 1।।

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्ट्य सूभिक्षत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन गमन करते हैं स्वामी, होते हैं जो अन्तर्यामी।
केवल ज्ञान का अतिशय पाते, अतः लोक में पूजे जाते।। 2।।

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षयजातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होते परम दया के धारी, अदया भाव के जो परिहारी।
केवल ज्ञान का अतिशय पाते, अतः लोक में पूजे जाते।। 3।।

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षयजातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कवलाहार ना होवे भाई, ये है श्री जिन की प्रभुताई।
केवल ज्ञान का अतिशय पाते, अतः लोक में पूजे जाते।। 4।।

ॐ ह्रीं कवलाहारभाव घातिक्षयजातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर पे उपसर्ग ना होवे, शत्रू आ निज शक्ती खोवे।
केवल ज्ञान का अतिशय पाते, अतः लोक में पूजे जाते।। 5।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षयजातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणी दर्श चतुर्मुख पावें, वीतराग का भाव जगावें।
केवल ज्ञान का अतिशय पाते, अतः लोक में पूजे जाते।। 6।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विद्या के स्वामी गाए, ज्ञानानन्त प्रभू प्रगटाए।
केवल ज्ञान का अतिशय पाते, अतः लोक में पूजे जाते।। 7।।

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वरत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छाया विरहित होते स्वामी, तीन लोक के अन्तर्यामी।
केवल ज्ञान का अतिशय पाते, अतः लोक में पूजे जाते।। 8।।

ॐ ह्रीं सर्व छाया रहित घातिक्षयजातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्ष स्पन्द रहित बतलाए, आँख भौंह ना कभी हिलाए।
केवल ज्ञान का अतिशय पाते, अतः लोक में पूजे जाते।। 9।।

ॐ ह्रीं अक्षस्पंद रहित घातिक्षयजातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नख अरु केश ना वृद्धी पाते, ज्यों के त्यों प्रभु के रह जाते।
केवल ज्ञान का अतिशय पाते, अतः लोक में पूजे जाते।। 10।।

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षयजातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - दस अतिशय प्रभु ज्ञान के, पावें महित महान।
जिन की अर्चा जो करें, पावें सम्यक् ज्ञान।। 11।।

ॐ ह्रीं ज्ञानोत्सवे घातिक्षयजातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतिय कोष्ठ

दोहा - अतिशय चौदह वान ,देवों कृत जिनदेव जी।
करें विशद गुणगान, जिन पद पाने के लिए।।

।। तृतिय कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

चौदह देवकृत अतिशय
(पद्धड़ि छन्द)

अर्धमागधी भाषा वान, जिनवर गाए जगत प्रधान।
अतिशय देवों कृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।।1।।

ॐ ह्रीं अर्धमागधी भाषा देवोपनीत अतिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन-जन में हो मैत्री भाव, श्री जिन का यह रहा प्रभाव।
अतिशय देवों कृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।।2।।

ॐ ह्रीं सर्व मैत्री भाव देवोपनीतातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब ऋतुओं के खिलते फूल, मौसम हो सब के अनुकूल।
अतिशय देवों कृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वऋतुफलादि देवोपनीतातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पण सम हो भूमि विशेष, गमन करें जहाँ श्री जिनेश।
अतिशय देवों कृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।।4।।

ॐ ह्रीं आदर्श तल प्रतिमा रत्नमई देवोपनीतातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायू चले सुगन्धीवान, गमन जहाँ करते भगवान।
अतिशय देवों कृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।।5।।

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंटक धूलि आदि से हीन, भू होती सब दोष विहीन।
अतिशय देवों कृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।।6।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमिक धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधोदक वृष्टी कर देव, हर्ष मनावें सभी सदैव।
अतिशय देवों कृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।।7।।

ॐ ह्रीं मेघकुमार कृत गंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरण कमल तल कमल विशेष, रचे जहाँ पद रखें जिनेश।
अतिशय देवों कृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।।8।।

ॐ ह्रीं चरण कमल तल रचित स्वर्णम देवोपनीतातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल दशों दिशाएँ जान, चलते जहाँ श्री भगवान।
अतिशय देवों कृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।।9।।

ॐ ह्रीं आकाश गमन देवोपनीतातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरद काल सम हो आकाश, निर्मलता पाए जो खास।
अतिशय देवों कृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।।10।।

ॐ ह्रीं शरदकाल वन्निर्मल गगन देवोपनीतातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक में होवे सर्वानन्द, वायू मनहर चले सुगन्ध।
अतिशय देवों कृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।।11।।

ॐ ह्रीं सुगन्धित वन्निर्मल गगन देवोपनीतातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गगन में होवे जयजयकार, जिनवर करते जहाँ विहार।
अतिशय देवों कृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।।12।।

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म चक्र ले चलते यक्ष, जिन भक्ती में होते दक्ष।
अतिशय देवों कृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।।13।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्र चतुष्टय देवोपनीतातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल द्रव्य शोभतीं आठ, दिखते जहाँ से ऊचें ठाठ।
अतिशय देवों कृत यह जान, हुए लोक में पूज्य महान।। 14।।

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – चौदह अतिशय देवकृत, पाते हैं भगवान।
जिन की अर्चा कर मिले, मुक्ती का सोपान।। 15।।

ॐ ह्रीं चर्तुदश देवोपनीतातिशय धारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ कोष्ठ

सोरठा – अनन्त चतुष्टयवान, होते तीर्थंकर प्रभो!।
पाते केवलज्ञान, जिन अर्चा हम भी करें।।

।। चतुर्थ कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अनंत चतुष्टय के अर्घ्य
(चाल टप्पा)

चक्षु दर्शनावरण आदि सब, घातक कर्म नशाई।
सकल ज्ञेय युगपद अवलोके, सद् दर्शन पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत जिन, पाए प्रभुताई।। 1।। जिनेश्वर.....

ॐ ह्रीं अनंतदर्शनगुण प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उभय लोक षट् द्रव्य अनंता, युगपद दर्शाई।
निरावरण स्वाधीन अलौकिक, विशद ज्ञान पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत जिन, पाए प्रभुताई।। 2।। जिनेश्वर.....

ॐ ह्रीं अनंतज्ञानगुण प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दुष्ट महाबली मोह कर्म का, नाश किए भाई।
निज अनुभव प्रत्यक्ष किए जिन, समकित गुण पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत जिन, पाए प्रभुताई।। 3।। जिनेश्वर.....

ॐ ह्रीं अनंतसुखगुण प्राप्त सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वा.।

अंतराय कर्मों ने शक्ती, आतम की खोई।
ते सब घात किये जिन स्वामी, बल असीम पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत जिन, पाए प्रभुताई।। 4।। जिनेश्वर.....

ॐ ह्रीं अनंतवीर्यगुण सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – अनंतचतुष्टय वान हैं, मुनिसुव्रत भगवान।
जिन का हम करते यहाँ, भाव सहित गुणगान।। 5।।

ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

पंचम कोष्ठ

सोरठा – प्रातिहार्य भगवान, अष्ट प्राप्त करते विशद।
पूजें सुर नर आन, जिन चरणों में भाव से।।

।। पंचम कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अष्ट प्रातिहार्य (चौबोला छन्द)

'तरु अशोक' उन्नत है निर्मल, रत्न रश्मियाँ बिखराए।
सुन्दर रूप आपका मनहर, तरुवर का आश्रय पाए।।
केवल ज्ञान प्राप्त करके यह, प्रातिहार्य पाएँ भगवान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम अतिशय गुणगान।। 1।।

ॐ ह्रीं अशोक तरू सत् प्रातिहार्य सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

रंग बिरंगी किरणों वाला, 'सिंहासन' अद्भुत छविमान।
उस पर कंचन काया वाले, शोभा पाते हैं भगवान।।
केवल ज्ञान प्राप्त करके यह, प्रातिहार्य पाएँ भगवान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम अतिशय गुणगान।। 2।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत् प्रातिहार्य सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

'शुभ्र चँवर' ढुरते हैं अनुपम, कुन्द पुष्प सम आभावान।
दिव्य देह शोभा पाती है, स्वर्णाभासी कांतीमान।।
केवल ज्ञान प्राप्त करके यह, प्रातिहार्य पाएँ भगवान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम अतिशय गुणगान।। 3।।

ॐ ह्रीं चतु: षष्ठिचँवर सत् प्रातिहार्य सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्व.।

चन्द्र कांति सम 'छत्र त्रय' हैं, मणिमुक्ता वाले अभिराम।
सिर पर शोभित होते अनुपम, अतिशय दीप्तीमान ललाम।।
केवल ज्ञान प्राप्त करके यह, प्रातिहार्य पाएँ भगवान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम अतिशय गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत् प्रातिहार्य सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

उच्च स्वरों में बजने वाली, 'देव दुन्दुभि' करती नाद।
तीन लोकवर्ती जीवों के, मन में लाती है आह्लाद।।
केवल ज्ञान प्राप्त करके यह, प्रातिहार्य पाएँ भगवान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम अतिशय गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं देव दुन्दुभि सत् प्रातिहार्य सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

'गंधोदक की वृष्टी' करते, देव चलाते 'मंद पवन'।
संतानक मंदार नमेरू, आदि के बरषें श्रेष्ठ सुमन।।
केवल ज्ञान प्राप्त करके यह, प्रातिहार्य पाएँ भगवान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम अतिशय गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टि सत् प्रातिहार्य सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

तीन लोकवर्ती उपमाएँ, जो कहने में आती हैं।
तन 'भामण्डल' के आगे वह, सब फीकी पड़ जाती हैं।।
केवल ज्ञान प्राप्त करके यह, प्रातिहार्य पाएँ भगवान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम अतिशय गुणगान।।7।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत् प्रातिहार्य सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

स्वर्ग मोक्ष के दिग्दर्शक हैं, हे जिनेन्द्र! तव 'दिव्य वचन'।
तीन लोक में सत्य धर्म को, प्रगटाए सम्यक् दर्शन।।
केवल ज्ञान प्राप्त करके यह, प्रातिहार्य पाएँ भगवान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, करते हम अतिशय गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत् प्रातिहार्य सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वा.।

दोहा - प्रातिहार्य पावें प्रभू, पावन विस्मयकार।
जिनकी अर्चा लोक में, गाई मंगलकार।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्य सहित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

षष्ठम कोष्ठ

सोरठा - दोष अठारह हीन, होते हैं जिनदेव जी।
रहते निज में लीन, शिव पथ के राही परम।।

।। षष्ठम कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अष्टादश दोष रहित जिन

(सखी छन्द)

जो क्षुधा दोष के धारी, वे जग में रहे दुखारी।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभु बने हैं अन्तर्यामी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो तृषा दोष को पाते, वे अतिशय दुःख उठाते।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभु बने हैं अन्तर्यामी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय तृषा दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो जन्म दोष को पावें, वे मरकर फिर उपजावें।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभु बने हैं अन्तर्यामी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है जरा दोष भयकारी, दुख देता है जो भारी।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभु बने हैं अन्तर्यामी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जरा दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो विस्मय करने वाले, प्राणी हैं दुखी निराले।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभु बने हैं अन्तर्यामी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय विस्मय दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है अरति दोष जग जाना, दुखकारी इसको माना।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभु बने हैं अन्तर्यामी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अरति दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्रम करके जग के प्राणी, बहु खेद करें अज्ञानी।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभु बने हैं अन्तर्यामी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय खेद दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है रोग दोष दुखदायी, सब कष्ट सहें कई भाई।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभु बने हैं अन्तर्यामी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय रोग दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जब इष्ट वियोग हो जाए, तब शोक हृदय में आए।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभु बने हैं अन्तर्यामी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय शोक दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मद में आकर के प्राणी, करते हैं पर की हानी।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभु बने हैं अन्तर्यामी।।10।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मद दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो मोह दोष के नाशी, होते हैं शिवपुर वासी।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभु बने हैं अन्तर्यामी।।11।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोह दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भय सात कहे दुखकारी, जिनकी महिमा है न्यारी
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभु बने हैं अन्तर्यामी।।12।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय भय दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निद्रा से होय प्रमादी, करते निज की बरबादी।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभु बने हैं अन्तर्यामी।।13।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय निद्रा दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चिन्ता को चिता बताया, उससे ही जीव सताया।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभु बने हैं अन्तर्यामी।।14।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय चिन्ता दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तन से जब स्वेद बहाए, जो भारी दुख पहुँचाए।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभु बने हैं अन्तर्यामी।।15।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय स्वेद दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मन में जो राग बढ़ाए, वह कर्म बन्ध को पार।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभु बने हैं अन्तर्यामी।।16।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय राग दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिसके मन द्वेष समाए, वह पाप रूपता पाए।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभु बने हैं अन्तर्यामी।।17।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय द्वेष दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हैं मरण दोष के नाशी, वे होते शिवपुर वासी।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभु बने हैं अन्तर्यामी।।18।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मरण दोष विनाशनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

यह दोष अठारह भाई, हैं इस जग में दुखदायी।
यह दोष नशाए स्वामी, प्रभु बने हैं अन्तर्यामी।।19।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्टादश दोष विनाशनाय पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

सप्तम कोष्ठ

सोरठा - **जिन चरणों में आन, गणधर झेलें दिव्य ध्वनि ।**
मुनिसुव्रत भगवान, के गणधर अठदस कहे।।

।। सप्तम कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(चौपाई)

मल्लि हुए गणधर अविकारी, सम्यक् रत्नत्रय के धारी।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मल्लिगणधर पूजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वा.।

'जगदवंद्य' गणधर अनगारी, गुण पाए हैं विस्मयकारी।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगदवंद्यगण पूजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वा.।

गणी 'प्रमेश' कर्म के जेता, आप बने शिव पथ के नेता।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रमेश गणधर पूजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वा.।

गणी आप 'सुक्रोध' कहाए, क्रोध पूर्णतः आप नशाए।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुक्रोध गणधर पूजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि. स्वाहा।

गणि 'अनन्तगति' आप कहाए, गुणानन्त तुमने प्रगटाए।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तगति गणधर पूजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वा.।

'सालक' आप गणेश कहाए, अतिशय कारी प्रभुता पाए।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं सालक गणधर पूजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वा.।

'द्रौपद' गणाधीश हितकारी, हुए आप दुर्गुण परिहारी।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्रौपद गणधर पूजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वा.।

'बुध' गणधर बुध ग्रह के नाशी, पावन केवल ज्ञान प्रकाशी।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।। 8।।

ॐ ह्रीं अर्हं बुध गणधर पूजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वा.।

'तथागिना' गणधर को ध्याएँ, कर्म नाश कर शिवपद पाएँ।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।। 9।।

ॐ ह्रीं अर्हं तथागिना गणधर पूजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वा.।

गणाधीश हैं 'पोद' हमारे, हम हैं जिनके चरण सहारे।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।। 10।।

ॐ ह्रीं अर्हं पोद गणधर पूजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वा.।

हे 'रविषेण' गणी शिवकारी, आप हुए संयम के धारी।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।। 11।।

ॐ ह्रीं अर्हं रविषेण गणधर पूजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वा.।

'कुलकेशे' गणधर सदज्ञानी, पाएँ हैं जो मुक्ती रानी।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।। 12।।

ॐ ह्रीं अर्हं कुलकेशे गणधर पूजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वा.।

'अमर' गणी पद अमर के धारी, हुए लोक में धर्म प्रचारी।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।। 13।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमर गणधर पूजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वा.।

हे 'निष्पाप' पाप तम नाशी, तुम हो विशद गुणों की राशी।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।। 14।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्पाप गणधर पूजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वा.।

'मतिश्रुति' हुए आप द्वय ज्ञानी, अन्त में पाए शिव रजधानी।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।। 15।।

ॐ ह्रीं अर्हं मतिश्रुति गणधर पूजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वा.।

कहे 'द्वितीयकर' गणधर ज्ञानी, आप हुए हैं शिव वरदानी।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।। 16।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्वितीयकर गणधर पूजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वा.।

'धारण' आप धारणा पाए, अतिशय केवल ज्ञान जगाए।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।। 17।।

ॐ ह्रीं अर्हं धारण गणधर पूजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वा.।

'सूरज' केवल ज्ञान प्रकाशी, मोह महातम के हैं नाशी।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।। 18।।

ॐ ह्रीं अर्हं सूरज गणधर पूजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं नि.स्वा.।

हुए अठारह गणधर ज्ञानी, जग जीवों के जो कल्याणी।
मुनिसुव्रत के साथ बताए, जिनकी पूजा को हम आए।। 19।।

ॐ ह्रीं अर्हं अठदस गणधर पूजित श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं नि.स्वा.।

अष्टम कोष्ठ

दोहा – पावन सप्त ऋषीश, मुनिसुव्रत भगवान के।
चरण झुकायें शीश, जिनकी अर्चा को विशद।।

।। अष्टम कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(जोगीरासा छन्द)

मुनी पूर्वधर रहे पाँच सौ, मुनिसुव्रत के भाई।
तीर्थंकर का आश्रय पाकर, कांति वृद्धि हो जाई।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्यं चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।। 1।।

ॐ ह्रीँ श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पंचशत पूर्वधर मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षक मुनि इक्कीस सहस थे, समता धर अविकारी।
मुनिसुव्रत के चरण कमल में, जिन दीक्षा सब धारी।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्यं चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।। 2।।

ॐ ह्रीँ श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ एक विंशतिः सहस्र शिक्षक मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर एक हजार आठ सौ, अवधिज्ञानी जानो।
मुनिसुव्रत वचनामृत सुनकर, आत्मज्ञान हो मानों।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्यं चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।। 3।।

ॐ ह्रीँ श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट शत्युत्तर एक सहस्र अवधि ज्ञानी मुनिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञानी सहस अष्ट शत, परम पूज्य पद पावें।
मुनिसुव्रत की पूजा करके, मुक्ति शिखर को जावें।।

तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्यं चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।।4।।

ॐ ह्रीँ श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ अष्ट शत्युत्तर एक सहस्र केवलज्ञानी मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाईस सौ मुनि विक्रिया धारी, मुनिसुव्रत सह पाएँ।
मुनिसुव्रत के चरण कमल में, शत्-शत् शीश नमाएँ।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्यं चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।।5।।

ॐ ह्रीँ श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्विशत्युत्तर द्विसहस्र विक्रियाधारि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पन्द्रह सौ मुनिराज विपुलमति, मुनिसुव्रत के गाए।
तीर्थंकर के समवशरण में, पूजा विधि सब पाए।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्यं चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।।6।।

ॐ ह्रीँ श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ पञ्च शत्युत्तर एक सहस्र विपुलमति मुनिभ्य अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत के बारह सौ मुनि, वादी श्रेष्ठ कहाए।
तीर्थंकर के समवशरण में, पुण्य वृद्धि शुभ पाए।।
तीर्थंकर के साथ सप्तगण, की हम अर्चा करते।
अष्ट द्रव्य से अर्घ्यं चढ़ाकर, चरणों में सिर धरते।।7।।

ॐ ह्रीँ श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ द्वादश शत वादि मुनिभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (चौपाई)

मुनिसुव्रत के तीस हजार, मुनी करते जग का उपकार।
तिनकों पूजे मन वच काय, सर्व मनोरथ सफल कराय।।8।।

ॐ ह्रीँ श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकर समवशरणस्थ त्रिंशत् सहस्र सर्व मुनिभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

।। शांतये शांतिधारा ।। पुष्पाञ्जलि।।

जाप्य : **ॐ ह्रीं शनि ग्रह अरिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नम: सर्व शान्ति कुरु कुरु स्वाहा।**

समुच्चय जयमाला

दोहा - राही मुक्ती मार्ग के, मुनिसुव्रत भगवान।
विशद भाव से आज हम, करते हैं जयगान।।

।। जोगीराशा छन्द।।

प्राणत स्वर्ग से मुनिसुव्रत जिन, चयकर के जब आये।
राजगृही में खुशियाँ छाईं, जग-जन सब हर्षाए।।
नृप सुमित्र के राज दुलारे, जय श्यामा माँ गाई।
गर्भ समय पर रत्न इन्द्र कई, बर्षाए थे भाई।। 1।।
तीन लोक में खुशियाँ छाईं, घड़ी जन्म की आई।
सहस्राष्ट लक्षण के धारी, बीस धनुष ऊँचाई।।
न्हवन कराया देवेन्द्रों ने, कछुआ चिन्ह बताया।
बीस हजार वर्ष की आयू, श्याम रंग शुभ गाया।। 2।।
उल्कापात देखकर स्वामी, शुभ वैराग्य जगाए।
पंच मुष्टि से केश लुंचकर, मुनिवर दीक्षा पाए।।
आत्म ध्यान कर कर्म घातिया, नाश किए जिन स्वामी।
केवल ज्ञान जगाया प्रभु ने, हुए मोक्ष पथ गामी।। 3।।
ग्रहारिष्ट शनि के विनिवारी, मुनिसुव्रत कहलाए।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, निज सौभाग्य जगाए।।
सुख शांती सौभाग्य जगाने, तव चरणों हम आए।
'विशद' मोक्ष की राह चलें, हम यही भावना भाए।।4।।

दोहा - अष्टादश गणधर रहे, सुप्रभ प्रथम गणेश।
कूट निर्जरा से प्रभू, नाशे कर्म अशेष।।

ॐ ह्रीँ श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - मुनिसुव्रत भगवान का, जपूँ निरन्तर नाम।
शनि अरिष्ट ग्रह शांत हो, चरणों 'विशद' प्रणाम।।

।। इत्याशीर्वाद ।।

मुनिसुव्रत चालीसा

दोहा – अरहंतों को नमन् कर, सिद्धों का धर ध्यान।
उपाध्याय आचार्य अरु, सर्व साधु गुणवान।।
जैन धर्म आगम 'विशद', चैत्यालय जिनदेव।
मुनिसुव्रत जिनराज को, वंदन करूँ सदैव।।

चौपाई

मुनिसुव्रत जिनराज हमारे, जन-जन के हैं तारण हारे।
प्रभू हैं वीतरागता धारी, तीन लोक में करुणा कारी।।
भाव सहित उनके गुण गाते, चरण कमल में शीश झुकाते।
जय जय जय छियालिस गुणधारी, भविजन के तुम हो हितकारी।।
देवों के भी देव कहाते, सुरनर पशु तुमरे गुण गाते।
तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, सारे जग के आप हि त्राता।।
प्रभू तुम भेष दिगम्बर धारे, तुमसे कर्म शत्रु भी हारे।
क्रोध मान माया के नाशी, तुम हो केवलज्ञान प्रकाशी।।
प्रभू की प्रतिमा कितनी सुंदर, दृष्टि सुखद जमी नासा पर।
खड्गासन से ध्यान लगाया, तुमने केवलज्ञान जगाया।।
मध्यलोक पृथ्वी का मानो, उसमें जम्बूद्वीप सुहानो।
अंग देश उसमें कहलाए, राजगृहि नगरी मन भाए।।
भूपति वहाँ सुमित्र कहाए, माता पदमा के उर आए।
यादव वंश आपने पाया, कश्यप गोत्र वीर ने गाया।।
प्राणत स्वर्ग से चयकर आये, गर्भ दोज सावन सुदि पाए।
वहाँ पे सुर बालाएँ आई, माँ की सेवा करें सुभाई।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, जन्म राजगृह नगरी पाया।
इन्द्र सभी मन में हर्षाए, ऐरावत ले द्वारे आये।।
पांडुकशिला अभिषेक कराया, जन-जन का तब मन हर्षाया।
पग में कछुआ चिन्ह दिखाया, मुनिसुव्रत जी नाम कहाया।।
जन्म से तीन ज्ञान के धारी, क्रीड़ा करते सुखमय भारी।
बल विक्रम वैभव को पाए, जग में दीनानाथ कहाए।।
बीस धनुष तन की ऊँचाई, तन का रंग कृष्ण था भाई।
कई वर्षों तक राज्य चलाया, सर्व प्रजा को सुखी बनाया।।

उल्का पतन प्रभू ने देखा, चिंतन किए द्वादश अनुप्रेक्षा।
सुर लौकान्तिक स्वर्ग से आए, प्रभू के मन वैराग्य जगाए।।
देव पालकी अपराजित लाए, उसमें प्रभू जी को पधराए।
भूपति कई प्रभू को ले चाले, देवों ने की स्वयं हवाले।।
वैशाख वदी दशमी दिन आया, नील सु वन चंपक तरु पाया।
मुनिव्रतों को तुमने पाया, प्रभू ने सार्थक नाम बनाया।।
पंचमुष्टि से केश उखाड़े, आकर देव सामने ठाड़े।
केश क्षीर सागर ले चाले, भक्तिभाव से उसमें डाले।।
बेला के उपवास जो धारे, तीजे दिन राजगृही पधारे।
वृषभसेन पड़गाहन कीन्हा, खीर का शुभ आहार जो दीन्हा।।
वैशाख कृष्ण नौमी दिन आया, प्रभू ने केवलज्ञान जगाया।
देव सभी दर्शन को आए, समवशरण सुंदर बनवाए।।
गणधर प्रभू अठारह पाए, उनमें प्रमुख सुप्रभ कहलाए।
तीस हजार मुनि संग आए, समवशरण में शोभा पाए।।
इकलख श्रावक भी आए भाई, तीन लाख श्राविकाएँ आई।
संख्यातक पशु वहाँ आए, असंख्यात सुर गण भी आये।।
प्रभू सम्मेद शिखर को आए, खड्गासन से ध्यान लगाए।
पूर्व दिशा में दृष्टि पाए, निर्जर कूट से मोक्ष सिधाए।।
फाल्गुन वदी बारस दिन जानो, श्रवण नक्षत्र मोक्ष का मानो।
प्रदोष काल में मोक्ष सिधाये, मुनि अनेक सह मुक्ति पाये।।
शनिअ रिष्टग ृहर् जिन्हेंस ताए,म ुनिसुव्रतज ीश ांति दलाएँ।
इह पर भव के सुख हम पाएँ, मुक्तिवधु को हम पाए जाएँ।।

दोहा – पाठ करें चालीस दिन, नित चालीसों बार।
मुनिसुव्रत के चरण में, खेय सुगंध अपार।।
मित्र स्वजन अनुकूल हों, योग्य होय संतान।
दीन दरिद्री होय जो, 'विशद' होय धनवान।।

मुनिसुव्रत की आरती

(तर्ज :- इह विधि मंगल आरती कीजे...)

मुनिसुव्रत की आरती कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।। टेक।।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, माँ श्यामा की आँख के तारे। मुनि...
राजगृही के नृप कहलाए, कछुआ लक्षण पग में पाए। मुनिसुव्रत.
तीस हजार वर्ष की भाई, श्री जिनवर ने आयु पाई। मुनि...
श्रावण वदी दोज को स्वामी, गर्भ में आए अन्तर्यामी। मुनि...
दर्शें वदी वैशाख को स्वामी, जन्म लिए त्रिभुवनपति नामी। मुनि...
वैशाख वदी दसमी दिन आया, जिन प्रभु ने संयम को पाया। मुनि...
वैशाख वदी नौमी दिन गाया, प्रभु ने केवलज्ञान उपाया। मुनि...
फाल्गुन वदी बारस को भाई, कर्म नाशकर मुक्ति पाई। मुनि...
गिरि सम्मेद शिखर शुभ गाया, 'विशद' मोक्षपद प्रभु ने पाया। मुनि...

प्रशस्ति

मध्यलोक के मध्य है, जम्बूद्वीप महान्।
भारत देश का प्रान्त है, सुन्दर राजस्थान।।
जिला एक अजमेर है, जग में है विख्यात।
नगर अयोध्या की शुभम्, रचना होवे ज्ञात।।
सोनी जी परिवार ने, किया अनोखा काम।
अद्वितीय रचना बनी, हुआ विश्व में नाम।।
दो हजार सन् सात का, हुआ है वर्षायोग।
इस अवसर पर ही बना, लिखने का संयोग।।
मुनिसुव्रत भगवान की, भक्ति फले अविराम।
पर्यूषण के पूर्व ही, पूर्ण हुआ यह काम।।
भादव शुक्ला पंचमी, उत्तम क्षमा महान्।
मुनिसुव्रत की भक्ति में, लिक्खा विशद विधान।।
शुभ भावों के हेतु यह, किया प्रभू गुणगान।
भव्य जीव पढ़कर इसे, पावें सम्यक् ज्ञान।।
पूजा करके भाव से, करें कर्म का नाश।
रत्नत्रय को प्राप्त कर, पावें ज्ञान प्रकाश।।
शनि अरिष्ट नाशक लिखा, मंगलमयी विधान।
भूल चूक को टाल कर, पढ़ें सभी श्रीमान।।
कवि नहीं वक्ता नहीं, मैं हूँ लघु आचार्य।
'विशद' धर्म युत आचरण, करें जगत् जन आर्य।।
पूजा के फल से सभी, होते कर्म विनाश।
सर्व काम का नाश हो, होवे आत्म प्रकाश।।

श्री नेमिनाथ विधान

माण्डला

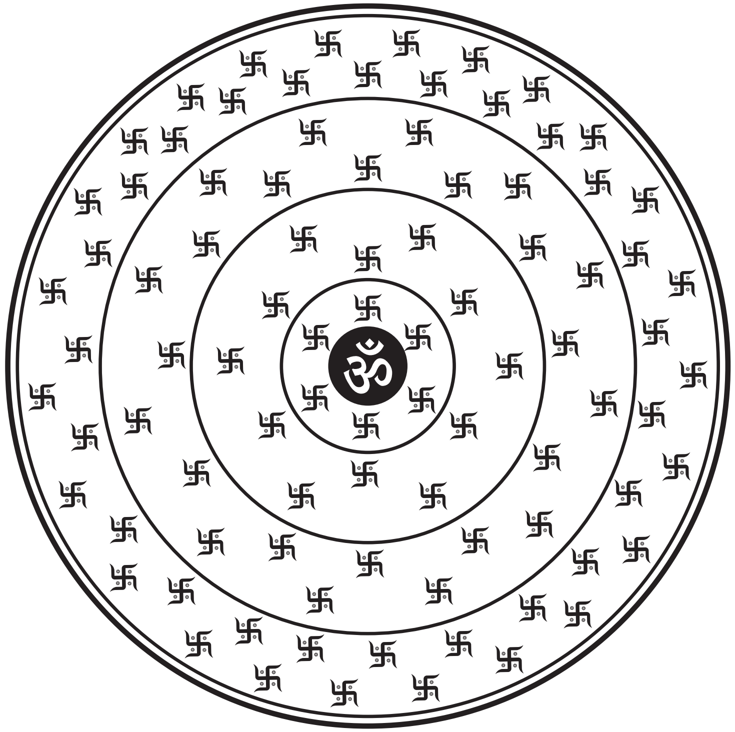

मध्य – ॐ
प्रथम वलय – 06
द्वितीय वलय – 12
तृतीय वलय – 24
चतुर्थ वलय – 48
कुल अर्घ्य – 90

रचयिता :
प. पू. क्षमामूर्ति 108
आचार्य श्री विशदसागर जी

श्री नेमिनाथ स्तुति

द्वार आपके हम खड़े, नेमिनाथ भगवान।
कृपा आपकी चाहते, करते हम गुणगान।।

(शभू छन्द)

नेमिनाथ जिन के चरणों में, झुकता है यह जग सारा।
कामबली पर विजय प्राप्त की, जिससे सारा जग हारा।।
हे प्रभो! आप करुणा कर हो, हमको करुणा का दान करो।
यह भक्त पड़ा है चरणों में, इस पर भी कृपा प्रदान करो।।१।।
तुम पार हुए भव सागर से, मैं भव सागर में भटक रहा।
तुमने मुक्ति को पाया है, मैं जग वैभव में अटक रहा।।
हे नेमिनाथ करुणा नन्दन, करुणा की धारा बरसाओ।
जो भूले भटके राही हैं, उनको सद् मार्ग दिखा जाओ।।२।।
सद्धर्म आत्मा का भूषण, जो धारण उसको करता है।
वह जगत लक्ष्मी को तजकर, शुभ मुक्ति वधु को वरता है।।
तुमने राजुल का त्याग किया, तो शिव रमणी को पाया है।
यह जान प्रभू मेरे मन में, शुभ भाव उमड़ कर आया है।।३।।
रिश्ते नाते सब धोखा हैं, बस नाता सत्य तुम्हारा है।
तुमसे अब मेरा नाता हो, यह पावन लक्ष्य हमारा है।।
संसार असार रहा प्रभु यह, हम क्या जाने तुम हो ज्ञाता।
भव पार करो हमको भगवन्, हे नाथ! आप जग के त्राता।।४।।
तुम शिवादेवि के हो नन्दन, तुम तो शिवपुर के वासी हो।
तुम विश्व विभव को पाये हो, प्रभु सर्व कर्म के नाशी हो।।
प्रभु शांति सुधामृत के स्वामी, तुमने शांति को पाया है।
अब 'विशद' शांति को पाने का, मैंने शुभ भाव बनाया है।।५।।

दोहा - गरिमा जिनकी है आगम, महिमा का ना पार।
जिनकी अर्चा कर मिलें, मोक्ष महल द्वार।।

।। इत्याशीर्वाद ।। पुष्पांजलिं ।।

श्री नेमिनाथ पूजा (शनिवार)

स्थापना

जिनके यश की गौरव गाथा, बलदेव नारायण ने गाई।
सौधर्म इन्द्र की भी शक्ती, जिनके चरणों आ शर्माई।।
जो राग आग की ज्वाला के, जलते शोलों को छोड़ चले।
पशुओं का कृन्दन देख नेमि, रथ ऊर्जयन्त को मोड़ चले।।
दोहा- महिमा क्या वैराग्य की, करने आये ब्याह।
साथ वधू को ले चले, वन की पकड़ी राह।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(सुमति छन्द)

जिसको अपना माना, उसने संताप दिया।
यह समझ नहीं आया, फिर भी क्यों राग किया।।1।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।
भव-भव में हे स्वामी!, हमने संताप सहा।
अब सहा नहीं जाए, प्रभु मैटो द्वेष महा।।2।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चदनं निर्व. स्वाहा।
तन धन परिजन जो हैं, सब नश्वर है माया।
जिस तन में रहते हैं, वह क्षण भंगुर काया।।3।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।
यह काम लुटेरा है, शास्वत गुण लूट रहा।
हम मौन खड़े निर्बल, ना हमसे छूट रहा।।4।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।
इस क्षुधा रोग से हम, सदियों से सताए हैं।
व्यंजन की औषधि खा, ना तृप्ती पाए हैं।।5।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।
हम पर में खोए हैं, पर की महिमा गाई।
प्रभु मोह बली ने ही, निज की सुधि विसराई।।6।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्मों की आंधी से, ये तन गृह बिखर गया।
तव दर्शन करके प्रभु, मम चेतन निखर गया।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

प्रभु पाप बीज बोए, शिव फल कैसे पाएँ।
तव अर्चा करके हम, प्रभु सिद्धालय जाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

वसु कर्मों ने मिलकर, जग में भरमाया है।
अब शिव पद पाने को, यह अर्घ्य चढ़ाया है।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

दोहा - पूर्व पुण्य से हे प्रभो!, पाए आपके दर्श।
शांती धारा दे रहें, जागे मम उर हर्ष।।

।। शान्तये शांतिधारा।।

दोहा - पूजा करते आपकी, होके भाव विभोर।
यही भावना है विशद, बढ़ें मोक्ष की ओर।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चाल छन्द)

भूलोक पूर्ण हर्षाया, गर्भागम प्रभु ने पाया।
कार्तिक सुदि षष्ठी पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए।।1।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठम्यां गर्भमंगल मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी स्वामी, जन्मे जिन अन्तर्यामी।
भू पे छाई उजियाली, पा दिव्य दिवाकर लाली।।2।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी गाई, नेमी जिन दीक्षा पाई।
पशुओं का बन्धन तोड़ा, इस जग से मुख को मोड़ा।।3।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां तपोमंगल मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विन सुदि एकम जानो, प्रभु ज्ञान जगाए मानो।
शिव पथ की राह दिखाए, जीवों को अभय दिलाए।।4।।

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञान मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठें अषाढ़ सुदि गाई, भव से प्रभु मुक्ती पाई।
नश्वर शरीर यह छोड़े, कर्मों के बन्धन तोड़े।।5।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ला अष्टम्यां मोक्षमंगल प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - आखों में आँसू भरे, सुनकर जिनके हाल।
वैरागी प्रभु नेमि की, गाते हैं जयमाल।।

तर्ज-करम के खेल कैसे हैं.........

करम के खेल कैसे हैं, नहीं हम जान पाते हैं।
मिले संसार से मुक्ती, अतः पूजा रचाते हैं।।टेक।।

स्वर्ग अपराजित से चयकर, गर्भ में माँ के प्रभु आए।
शौरीपुर में प्रभू जन्मे, हर्ष त्रय लोक में छाए।।
इन्द्र मेरू पे ले जाके, न्हवन प्रभु का कराते हैं।
मिले संसार................।।1।।

जन्म से आपके जग में, धन्य शुभ हो गया यदुकुल।
नेमि जी दूल्हा बनकर के, ब्याहने को चले राजुल।।
बँधे बाड़े में हो व्याकुल, पशू दुख से रंभाँते हैं।
मिले संसार.................।।2।।

देख पशुओं की पीड़ा को, नेमि करुणा से भर आते।
धार वैराग्य अन्तर में, सुगिरि गिरनार को जाते।।
बनी दुल्हन हुई व्याकुल, नेमि जब वन को जाते हैं।
मिले संसार.................।।3।।

गई समझाने को राजुल, नाथ! वन को नहीं जाओ।
प्रीति नौ भव की तोड़ी क्यों, राज हमको ये बतलाओ।।
सार संसार में नाहीं, अतः संयम को पाते हैं।
मिले संसार..................।।4।।

कर्म घाती प्रभू नाशे, ज्ञान केवल जगाया है।
सुगिरि गिरनार से प्रभु ने, सुपद निर्वाण पाया है।
जिनालय में प्रभू सोहें 'विशद' महिमा दिखाते हैं।
मिले संसार.................।।5।।

दोहा - राज तजा राजुल तजी, त्यागा घर परिवार।
जीवों पर करुणा किए, वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - अर्चा करते आपकी, नेमिनाथ भगवान।
यही भावना है विशद, सफल होय सब काज।।

।। इत्याशीर्वाद।।

प्रथम वलयः

दोहा - षड् गुण गाए जीव के, रहें हमेशा साथ।
कर्म नाश गुण प्राप्तकर, बनें मुक्ति के नाथ।।

।। प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(सखी-छन्द)

है जीव स्वयंभू ज्ञानी, संसारी भी विज्ञानी।
अस्तित्त्व वान अविनाशी, है शास्वत शिव का वासी।।1।।

ॐ ह्रीं अस्तित्व गुण संयुक्त श्री नेमिनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शिव शुद्ध बुद्ध अनगारी, निज तन प्रमाण अविकारी।
जो चिदानन्द अविकारी, वस्तुत्व सुगुण का धारी।।2।।

ॐ ह्रीं वस्तुत्व गुण संयुक्त श्री नेमिनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

न देव भृत्य न स्वामी, न बन्ध मुक्त शिवगामी।
द्रव्यत्व सुगुण अविनाशी, निज में निज गुण की राशी।।3।।

ॐ ह्रीं द्रव्यत्व गुण संयुक्त श्री नेमिनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुभ विषय ज्ञान का गाया, ज्ञानी में ज्ञान समाया।
जो है प्रमेय शुभकारी, अनुपम अनन्त शिवकारी।।4।।

ॐ ह्रीं प्रमेयत्व गुण संयुक्त श्री नेमिनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो रहे लघु ना भारी, वह अगुरुलघु अविकारी।
गुण अगुरुलघुत्व कहाए, हर जीव सुगुण यह पाए।।5।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्व गुण संयुक्त श्री नेमिनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिसमें प्रदेश गुण पाया, जो संख्यातीत बताया।
जो रहे अलौकिक भारी, है चेतन की बलिहारी।।6।।

ॐ ह्रीं प्रदेशत्व गुण संयुक्त श्री नेमिनाथ जिनाय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निस्पृह कलंक अनरूपी, चैतन्य ज्योति चिद्रूपी।
चैतन्य मूर्ति अविकारी, चेतन गुण है मनहारी।।7।।

ॐ ह्रीं षट् गुण संयुक्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा - द्वादश तप जिन धारकर, किए कर्म का अन्त।
कर्म घातिया नाश जिन, बने आप अर्हन्त।।

।। द्वितिय वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

(चाल छन्द)

प्रभु अनशन तप को पावें, फिर अपने कर्म नशावें।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।1।।

ॐ ह्रीं अनशन तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप कर ऊनोदर भाई, पावें जग में प्रभुताई।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।2।।

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होते मुनि रस के त्यागी, निज आतम के अनुरागी।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।3।।

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो विविक्त शैयाशन पावें, तपकर वे कर्म खिपावें।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।4।।

ॐ ह्रीं विविक्त शैयाशन तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनि काय क्लेश धर ज्ञानी, तप धारें जग कल्याणी।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।5।।

ॐ ह्रीं काय क्लेश तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप व्रत संख्यान जो पावें, वे कर्म जयी कहलावें।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।6।।

ॐ ह्रीं व्रत परिसंख्यान तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो प्रायश्चित तप करते, वे अपने पातक हरते।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।7।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वैयावृत्ती तप धारी, होते हैं करुणाकारी।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।8।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्ती तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो विनय सुतप को धारें, वे मुक्ती मार्ग सम्हारें।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।9।।

ॐ ह्रीं विनय तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप स्वाध्याय के धारी, मुनि जग के करुणाकारी।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।10।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

व्युत्सर्ग सुतप जो पाते, वे अपने कर्म नशाते।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।11।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप ध्यान करें अविकारी, मुनिवर जो हैं अनगारी।
हम नेमिनाथ को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।।12।।

ॐ ह्रीं ध्यान तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

यह द्वादश तप जो पावें, वे अपने कर्म नशावें।
हम नेमिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।13।।

ॐ ह्रीं द्वादश तप प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा – श्री जिनेन्द्र इस लोक में, रहे परिग्रह हीन।
निज गुण में विचरण करें, रहते स्वातम लीन।।

।। तृतिय वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

।। चतुर्विंशति परिग्रह रहित जिन।।

(सखी–छन्द)

जो 'मिथ्या' भाव जगावें, वे सत् श्रद्धा न पावें।
जो हैं मिथ्यात्व निवारी, वे पूज्य कहे अविकारी।।1।।

ॐ ह्रीं मिथ्या परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो हैं 'कषाय' जयकारी, इस जग में मंगलकारी।
जो क्रोध कषाय निवारी, वे पूज्य कहे अविकारी।।2।।

ॐ ह्रीं क्रोध परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो 'मान' करें जग प्राणी, वह स्वयं उठाते हानी।
हैं मान कषाय निवारी, वे पूज्य कहे अविकारी।।3।।

ॐ ह्रीं मान परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो करते 'मायाचारी', दुख सहते वे नर नारी।
हैं माया कषाय निवारी, वे पूज्य कहे अविकारी।।4।।

ॐ ह्रीं माया परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जग के सब 'लोभी' प्राणी, मानो पापों की खानी।
हैं लोभ कषाय निवारी, वे पूज्य कहे अविकारी।।5।।

ॐ ह्रीं लोभ परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(ताटंक छन्द)

'हास्य' कषाय करें जो प्राणी, वह दुःखों को पाते हैं।
शंकित होते हैं औरों से, निज संसार बढ़ाते हैं।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं हास्य नो कषाय परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'रती' उदय में जिनके आवे, वे सब राग बढ़ाते हैं।
राग आग में जलकर प्राणी, दुर्गति पंथ सजाते हैं।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं रति नो कषाय परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'अरति' भाव मन में आने से, अप्रीति का भाव जगे।
बैर भाव के कारण मानव, कर्माश्रव में शीघ्र लगे।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं अरति नो कषाय परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कुछ भी इष्टानिष्ट देखकर, मन में 'शोक' जगाते हैं।
नित कषाय में जलने वाले, कर्म बन्ध ही पाते हैं।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं शोक नो कषाय परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देख कोई भयकारी वस्तू, मन में भय उपजाते हैं।
भय के कारण व्याकुल होकर, शांत नहीं रह पाते हैं।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।। 10।।

ॐ ह्रीं भय नो कषाय परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्व-पर के गुण दोष देखकर, जो ग्लानी उपजाते हैं।
रहे कषाय 'जुगुप्सा' धारी, दुर्गति में ही जाते हैं।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।। 11।।

ॐ ह्रीं जुगुप्सा नो कषाय परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पुरुष जन्य जो भाव प्राप्त कर, रमने को खोजें नारी।
'पुरुष वेद' के धारी हैं वे, व्याकुल रहते हैं भारी।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।। 12।।

ॐ ह्रीं पुरुष वेद कषाय परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्त्री जन्य भाव पाकर के, पुरुषों में जो रमण करें।
'स्त्री वेद' प्राप्त करके वे, दुर्गति में ही गमन करें।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।। 13।।

ॐ ह्रीं स्त्री वेद कषाय परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मन में नर नारी की आशा, रखते हैं वह 'षण्ड' कहे।
करते हैं उत्पात विषय गत, भारी जो उद्दण्ड रहे।।
इस कषाय के नाशी प्राणी, तीर्थंकर पद पाते हैं।
उनके चरणों जग के सारे, प्राणी शीश झुकाते हैं।। 14।।

ॐ ह्रीं नपुंसक वेद कषाय परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

छन्द भुजंगप्रयात

खेती के मन में जो भाव जगाएँ, 'क्षेत्र परिग्रह' के धारी कहाएँ।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 15।।

ॐ ह्रीं क्षेत्र परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोठी महल बंगला जो बनावें, 'वास्तु परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 16।।

ॐ ह्रीं वास्तु परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाँदी की मन में जो आशा जगावें, 'परिग्रह हिरण्य' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 17।।

ॐ ह्रीं हिरण्य परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोने के आभूषण आदी मंगावें, 'परिग्रह जो स्वर्ण' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 18।।

ॐ ह्रीं स्वर्ण परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पशुओं के पालन में मन को लगावें, वे 'धन परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 19।।

ॐ ह्रीं धन परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लेकर के धान्य जो कोठे भरावें, वे 'धान्य परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 20।।

ॐ ह्रीं धान्य परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सेवा के हेतू जो नौकर बुलावें, वे 'दास परिग्रह ' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 21।।

ॐ ह्रीं दास परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्त्री से अपनी जो सेवा करावें, वे 'दासी परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 22।।

ॐ ह्रीं दासी परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कपड़े जो नये-नये कइ लेकर के आवें, वे 'कुप्य परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 23।।

ॐ ह्रीं कुप्य परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाड़े या बर्तन से कोठे भरावें, वे 'भाण्ड परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 24।।

ॐ ह्रीं भाण्ड परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - परिग्रह चौबिस का प्रभू, करके पूर्ण विनाश।
शिवपथ के राही बने, कीन्हे शिवपुर वास।। 25।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति परिग्रह रहित श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा – अष्ट ऋद्धियाँ के विशद, भेद हैं अड़तालीस।
पुष्पांजलि कर पूजते, ऋद्धी धार ऋशीष।।

।। चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

अड़तालिस ऋद्धि के अर्घ्य

।। केसरी छन्द।।

केवल ज्ञान ऋद्धि जो पावें, लोकालोक प्रकाश करावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं केवल बुद्धि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मनः पर्यय ऋजुमति के धारी, जग में गाए मंगलकारी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं मनःपर्यय बुद्धि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानी, होते वीतराग विज्ञानी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं विपुलमति मनः पर्यय बुद्धि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्व.।

देश परम सर्वौषधि भाई, ऋद्धी गाई है सुखदायी।
ऋद्धी पावन पूज रचाते, ऋषि भी जिनकी महिमा गाते।।4।।

ॐ ह्रीं देशावध्यादि बुद्धि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कोष्ठ ऋद्धि के धारी जानो, साधू ज्ञान जगाएँ मानो।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋद्धि पदानुसारी ज्ञानी, पावें जग जन की कल्याणी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं पदानुसारिणी ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बीज बुद्धि ऋद्धी प्रगटावें, पूर्ण शास्त्र का ज्ञान करावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं बीज बुद्धि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषि संभिन्न श्रोतृधर गाए, तीन लोक में पूज्य कहाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं संभिन्न संश्रोतृत्व ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दूर स्पर्श ऋद्धी प्रगटावें, सूर्य चन्द को भी छू पावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं दूरस्पर्शन बुद्धि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दूरास्वाद ऋद्धि प्रगटावें, स्वाद वस्तु का ऋषिवर पावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।10।।

ॐ ह्रीं दूरास्वाद ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दूर घ्राण ऋद्धीधर जानो, दूर गंध को पावें मानो।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।11।।

ॐ ह्रीं दूरगन्ध ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दूरावलोकन ऋद्धी धारी, होते दूरावलोकन कारी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।12।।

ॐ ह्रीं दूरावलोकन ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दूर श्रवण ऋद्धी प्रगटावें, दूर शब्द को भी सुन पावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।13।।

ॐ ह्रीं दूरश्रवण ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दश पूर्वित्व ऋद्धि धर ज्ञानी, ज्ञान जगाते जग कल्याणी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।14।।

ॐ ह्रीं दशम पूर्व ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौदह पूर्व ऋद्धि जो पावें, भाव अर्थ सबको समझावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।15।।

ॐ ह्रीं चतुर्दश पूर्व ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषि प्रत्येक बुद्धिधर गाए, जो जग को सन्मार्ग दिखाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।16।।

ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो वादित्व ऋद्धि प्रगटावें, परवादी को शीघ्र हरावें
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।17।।

ॐ ह्रीं वादित्व बुद्धि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अग्नि पुष्प जल तन्तू जानो, श्रेष्ठ पत्र ऋद्धी धर मानो।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।18।।

ॐ ह्रीं अग्न्यादि चारण ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जंघाचारण ऋद्धी पाते, गगन गमन की शक्ति जगाते।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 19।।

ॐ ह्रीं जंघा चारण ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गगन गमन ऋद्धी के धारी, चारण ऋद्धी धर अनगारी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 20।।

ॐ ह्रीं नभ चारण ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अणिमा आदि विक्रिया धारी, ऋद्धी धर होते अविकारी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 21।।

ॐ ह्रीं अणिमा ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अन्तर्धान विक्रिया पावें, ऋद्धी धारी संत कहावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 22।।

ॐ ह्रीं अन्तर्धान ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उग्र सुतप ऋद्धी प्रगटाते, उनकी सुर नर महिमा गाते।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 23।।

ॐ ह्रीं उग्र तपोतिशय ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दीप्ति सुतप ऋद्धी धर जानो, तन में कांति जगाते मानो।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 24।।

ॐ ह्रीं दीप्त तपोतिशय ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विशद तप्त ऋद्धी प्रगटावें, भोजन क्षण में पूर्ण पचावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 25।।

ॐ ह्रीं तप्त तपोतिशय ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साधु महातप ऋद्धी धारी, कर्म निर्जरा करते भारी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 26।।

ॐ ह्रीं महातपोतिशय ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋद्धि घोर तप पाने वाले, साधू जग में रहे निराले।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 27।।

ॐ ह्रीं घोर तपोतिशय ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

घोर पराक्रम ऋद्धी धारी, होते हैं तप वृद्धीकारी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 28।।

ॐ ह्रीं घोर पराक्रम तपोतिशय ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साधू घोर ब्रह्मचर्य पावें, शील व्रतों के धारि कहावें।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।। 29।।

ॐ ह्रीं अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

।। पाइता छन्द ।।

मन बल ऋद्धी के धारी, सद् ज्ञान जगावें भारी।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।। 30।।

ॐ ह्रीं मनोबल ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बल वचन ऋद्धि प्रगटाते, वे सकल शास्त्र पढ़ जाते।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।। 31।।

ॐ ह्रीं वचन बल ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बल काय ऋद्धि जो पावें, वे अतिशय शक्ति बढ़ावें ।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।। 32।।

ॐ ह्रीं कायबल ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषि आमर्षौषधि धारी, होते पर रोग निवारी।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।। 33।।

ॐ ह्रीं आमर्षौषधि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्ष्वेलौषधि ऋद्धि जगावें, जो क्ष्वेल से रोग नशावें।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।। 34।।

ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋद्धी जल्लौषधि पावें, जल्ल छूते रुज नश जावें।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।। 35।।

ॐ ह्रीं जल्लौषधि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषि मल्लौषधि के धारी, का मल हो रोग निवारी।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।। 36।।

ॐ ह्रीं मल्लौषधि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषि विडौषधी धर गाए, करुणा की धार बहाए।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।। 37।।

ॐ ह्रीं विडौषधी ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सर्वौषधि ऋद्धी धारी, की पद रज रोग निवारी।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।38।।

ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आश्यार्विष ऋद्धि जगाते, ना क्रोध दृष्टि दिखलाते।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।39।।

ॐ ह्रीं आश्यार्विष ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दृष्टी विष औषधि धारी, होते हैं करुणा कारी।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।40।।

ॐ ह्रीं दृष्टि विष औषधि ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आशीर्विष दृष्टि जगातें, न क्रोध दृष्टि दिखलाते।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।41।।

ॐ ह्रीं आशीर्विश ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दृष्टी विष ऋद्धि के धारी, न दृष्टि करें भय कारी।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।42।।

ॐ ह्रीं दृष्टीर्विश ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषि क्षीर स्रावी कहलाते, नीरस जो रस मय पाते।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।43।।

ॐ ह्रीं क्षीर स्रावि रस ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मधु स्रावी ऋद्धी धारी, के अन्य हो मधु सम भारी।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।44।।

ॐ ह्रीं मधुस्रावि रस ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

घृत स्रावी ऋद्धि जगावें, घृत सम भोजन को पावें।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।45।।

ॐ ह्रीं घृतस्रावि रस ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषि अमृत स्रावी गाए, अमृत सम अन्न को पाए।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।46।।

ॐ ह्रीं अमृतस्रावि रस ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अक्षीण ऋद्धि प्रगटावें, ना क्षीण भोज हो पावें।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।47।।

ॐ ह्रीं अक्षीण संवास ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अक्षीण महालय पाएँ, लघु जगह में कटक समाएँ।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।48।।

ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धिधारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषि सर्व ऋद्धियाँ पावें, जो तप धर ध्यान लगावें।
जो जग में पूजे जाते, हम तिन पद अर्घ्य चढ़ाते।।49।।

ॐ ह्रीं सकलऋद्धिसम्पन्न श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अड़तालीश हजार अरु, उन्तिस लक्ष प्रमाण।
चौदह सौ बावन गणी, पूज रहे धरध्यान।।50।।

ॐ ह्रीं वर्तमान-चतुर्विंशतितीर्थंकरसभासंस्थायि-'चतुर्दशशतद्विपंचाशतगणधर एकोनत्रिंशल्लक्षाष्ट-चत्त्वारिंशत् सहस्रप्रमितमुनीन्द्रेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा - भव्य जीव जिन वन्दना, कर हों माला माल।
नेमिनाथ जिनराज की, गाते हम जयमाल।।

।। तोटक छन्द ।।

जय नेमिनाथ चिद्रूपराज, जय जय जिनवर तारण जहाज।
जस समुद्र विजय जग में महान, प्रभु शिवादेवि के गर्भ आन।।
अनहद बाजों की बजी तान, सुर पुष्प वृष्टि कीन्हें महान।
सुर जन्म कल्याणक किये आन, है शंख चिह्न जिनका प्रधान।।
ऊँचाई चालिस रही हाथ, इक सहस आठ लक्षण सनाथ।
है श्याम रंग तन का महान, इस जग में जिनकी अलग शान।।
जीवों पर करुणा आप धार, मन में जागा वैराग सार।
झंझट संसारी आप छोड़, गिरनार गये रथ आप मोड़।।
कर केश लुंच व्रत लिए धार, संयम धारे हो निर्विकार।
फिर किए आत्म का प्रभू ध्यान, तब जगा आपको विशद ज्ञान।।
तब दिव्य देशना दिए नाथ, सुन नर पशु सुनते एक साथ।
फिर करके सारे कर्म नाश, गिरनार से पाए शिव निवास।।

दोहा - भोगों को तज योग धर, दिए 'विशद' सन्देश।
वरने शिवरानी चले, धार दिगम्बर भेष।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - गुणाधार योगी बने, अपनाया शिव पंथ।
मोक्ष महल में जा बसे, किया कर्म का अंत।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

श्री नेमीनाथ चालीसा

दोहा – अरहंतादिक देव नव, का करके शुभ जाप।
चालीसा पढ़ते विशद, कट जाएँ सब पाप।।

(चौपाई छन्द)

जय जय नेमिनाथ जिन स्वामी, करुणाकर हे अन्तर्यामी!।
अपराजित से चयकर आए, शौरीपुर नगरी शुभ पाए।।
कार्तिक शुक्ला षष्ठी जानो, गर्भ कल्याणक प्रभु का मानो।
राजा समुद्र विजय के प्यारे, शिवादेवी के राज दुलारे।। 1।।
श्रावण शुक्ला षष्ठी स्वामी, जन्म लिए प्रभु अन्तर्यामी।
अनहद बाजे देव बजाए, सुर नर पशु भारी हर्षाए।।
इन्द्र स्वर्ग से चलकर आया, पाण्डुक शिला पे न्हवन कराया।
शंख चिन्ह पग में शुभ गाया, नेमिनाथ सुर नाम बताया।। 2।।
आयु सहस्त्र वर्ष की पाई, चालिस हाथ रही ऊँचाई।
श्याम वर्ण तन का शुभकारी, प्रभुजी पाए मंगलकारी।।
पैर की उँगली से जिन स्वामी, चक्र चलाए शिवपथ गामी।
नाक के स्वर से शंख बजाया, जिससे तीन लोक थर्राया।। 3।।
कृष्ण तभी मन में घबड़ाए, शादी की तब बात चलाए।
जूनागढ़ की राजकुमारी, नाम रहा राजुल सुकुमारी।।
हुई ब्याह की तब तैय्यारी, हर्षित थे सारे नर-नारी।
श्रीकृष्ण तब युक्ति लगाए, मांसाहारी नृप बुलवाए।। 4।।
समुद्र विजय अति हर्ष मनाए, ले बरात जूनागढ़ आए।
नेमिनाथ दुल्हा बन आए, छप्पन कोटि बराती लाए।।
बाड़े में जब पशू रँभाए, करुणा से नेमी भर आए।
पूँछा क्यों ये पशू बँधाएँ, श्री कृष्ण यह बात सुनाए।। 5।।
इन पशुओं का माँस पकेगा, इन लोगों को हर्ष मनेगा।
नेमिनाथ का मन घबड़ाया, करुणा भाव हृदय में छाया।।
उनके मन वैराग्य समाया, पशुओं का बन्धन खुलवाया।
रथ को मोड़ चले गिरनारी, मन से होकर के अविकारी।।6।।

कंगन तोड़े वस्त्र उतारे, नेमीश्वर जी दीक्षा धारे।
श्रावण शुक्ला षष्ठी पाए, प्रभुजी संयम को अपनाए।।
एक सहस नृप दीक्षा धरे, द्वारावति में लिए अहारे।
श्रावण सुदि नौमी दिन गाया, वरदत्त ने ये अवशर पाया।। 7।।
अश्विन सुदि एकम को स्वामी, केवलज्ञान पाए जग नामी।
समवशरण तव देव रचाए, प्रभू की जय जयकार लगाए।।
ग्यारह गणधर प्रभु के गाए, गणधर प्रथम वरदत्त कहाए।
चित्रा शुभ नक्षत्र बताया, मेघश्रृंग तरु का तल पाया।। 8।।
सर्वाह्ण यक्ष प्रभू का भाई, यक्षी कुष्मांडनी कहलाई।
ऋषी अठारह सहस बताए, चार सौ पूरब धारी गाए।।
ग्यारह सहस आठ सौ भाई, शिक्षक बतलाए शिवदायी।
पन्द्रह सौ थे अवधिज्ञानी, डेढ़ सहस थे केवलज्ञानी।। 9।।
ग्यारह सौ विक्रिया के धरी, नौ सौ विपुलमती अनगारी।
आठ सौ वादी मुनिवर गाये, पाँच सौ छत्तिस संग शिव पाए।।
अषाढ़ शुक्ला आठे जिन स्वामी, पद्मासन से शिवपद गामी।
उर्जयन्त से शिव पद पाए 'विशद' चरण में शीश झुकाएँ।। 10।।

सोरठा – चालीसा चालीस, पढ़े भाव से जो 'विशद'।
चरण झुकाकर शीश, अर्चा करते जीव जो।।
शांती में हो वास, रोग शोक चिन्ता मिटे।
पाप शाप हो नाश, विशद मोक्ष पदवी मिले।।

जाप – ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य–खण्डे भारतदेशे हरियाणा प्रान्ते गुरुग्राम नगरे, अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2543 वि. सं. 2074 भादो मासे शुक्ल पक्षे सप्तमी सोमवार वासरे श्री नेमिनाथ विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

श्री नेमीनाथ की आरती

तर्ज-भक्ति बेकरार है...

नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।। टेक।।

शौरीपुर में जन्म लिए प्रभु, घर-घर मंगल छाया जी।
इन्द्र सुरेन्द्र महेन्द्र सभी ने, प्रभु का न्हवन कराया जी।।
नेमिनाथ दरबार है.....
नेमिकुंवर जी ब्याह रचाने, जूनागढ़ को आये जी।
पशुओं का आक्रन्दन लखकर, उनको तुरत छुड़ाए जी।।
नेमिनाथ दरबार है.....
मन में तब वैराग्य समाया, देख दशा संसार की।
राह पकड़ ली तभी प्रभु ने, महाशैल गिरनार की।।
नेमिनाथ दरबार है.....
पंच मुष्टि से केशलुंच कर, भेष दिगम्बर धारे जी।
कठिनत पस्याके अ ागेस ब,क र्मश त्रुभ ीह ारेज ी।।
नेमिनाथ दरबार है.....
केवलज्ञान जगाकर प्रभु ने, जग को राह दिखाई जी।
भवसागर को पार करूँ, यह 'विशद' भावना भाई जी।
नेमिनाथ दरबार है.....

एक सौ सत्तर तीर्थंकर का अर्घ्य

पंच भरत ऐरावत पावन, एक सौ साठ विदेह विशेष।
एक सौ सत्तर कर्म भूमियों, में हो सकते हैं तीर्थेश।।
क्षेत्र विदेहों में तीर्थंकर, कम से कम रहते हैं बीस।
जिनके चरणों विशद भाव से, झुका रहे हम अपना शीश।।

ॐ ह्रीं ढाई द्वीप प्रतिकाले सप्ततिशत कर्म भूमि स्थित सर्व तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं नि.स्व.।

परम्परागत आचार्यों का सामूहिक अर्घ्य

आदि सागराचार्य गुरु श्री, महावीर कीर्ति जी ऋषिराज।
विमल सिन्धु सन्मति सागर, गुरु भरत सिन्धु पद पूजें आज।।
गणाचार्य श्री विराग सिन्धु के, 'विशद' करें चरणों अर्चन।
पूज्य सर्व आचार्यों के पद, मेरा बारम्बार नमन।।

ॐ ह्रीं गुरु परम्पराचार्य सर्व आचार्य परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा।

आचार्य गुरुवर श्री विशदसागर जी की आरती

ॐ जय विशद सिन्धु गुरुवर, स्वामी विशद सिन्धु गुरुवर।
तुम हो गुरु हमारे-2, हम तुमने अनुचर।। ॐ जय ।। टेक।।
ग्राम कुपी में जन्म लिया माँ, इन्दर उर आये-स्वामी इन्दर...।
धन्य पिताश्री नाथूराम जी-2, श्रेष्ठ पुत्र पाये।। ॐ जय...
तीर्थ वन्दना करने हेतु, सम्मेद शिखर आए-स्वामी सम्मेद...।
विमल सिन्धु के दर्शन करके-2, व्रत प्रतिमा पाए।। ॐ जय...
विजय प्राप्त करने कर्मों पर, परिजन तज आए-स्वामी परिजन...।
सिद्ध क्षेत्र श्रेयांश गिरि पर-2, ऐलक पद पाए।। ॐ जय...
विराग सिन्धु गुरुवर से, मुनिव्रत ग्रहण किए-स्वामी मुनि...।
द्रोणागिरि में दीक्षा लेकर-2, निज में लीन हुए।। ॐ जय...
भरत सिन्धु गुरुवर ने, पद आचार्य दिया-स्वामी पद...।
मालपुरा नगरी ने-2, पावन श्रेय लिया।। ॐ जय...
पूजा विधान अनेको लिखकर, प्रभु के गुण गाए-स्वामी प्रभु...।
विशद आरती करके हमने-2, गुरु के गुण गाए।। ॐ जय...
ॐ जय विशद सिन्धु गुरुवर, स्वामी विशद सिन्धु गुरुवर।
तुम हो गुरु हमारे-2, हम तुमरे अनुचर।। ॐ जय........

(रचयिता - मुनि विशाल सागर जी)